ISSN 970-9312

प्राथमिक शिक्षक

शैक्षिक संवाद की पत्रिका

वर्ष 38 अंक 2 अप्रैल 2014

'प्राथमिक शिक्षक' राष्ट्रीय शैक्षिक ?नि?धान ?ौरप्रशिक्षण परिषद् की एक त्रैमाकि पत्रिका है। इ पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है, शिक्षको?इ?ौर?बद्ध प्रशाको?इतक वे?ड्डीयरकार की शिक्षा नीतियो?इे ?ब?धित जानकारियाँ पहुँचाना, उन्हे?इकक्षा मे?इप्रयोग मे?इलाई जा कने वाली ार्थक ?ौर?बद्ध ामग्री प्रदान करना ?ौरदेश भर के विभिन्न वे?ड्डो?मे?इचल रहे पाठ्यक्रमो?इ?ौरकार्यक्रमो?इ?ीदिके बारे मे?इमय पर ?विगतकराते रहना। शिक्षा जगत मे?इहोने वाली गतिविधियो?इपर विचारो?इके ?ीदान-प्रदानके लिए भी यह पत्रिका एक म?च प्रदान करती है।

पत्रिका मे?इप्रकाशित लेखो?इमे?इव्यक्त किए गए विचार लेखको?इके ?पिनेहोते है?इ।?ति:यह ?विश्यक नही?इहै कि प्रत्येक चि?तन मे?इपरिषद् की नीतियो?इको ही प्रस्तुत किया गया हो। इलिए परिषद् का कोई उत्तरदायित्व नही?इ है

संपादन समिति

लता पाण्डे *(अकादमिक संपादक)*

इ?इदु कुमा *(सदस्य)* रमेश कुमार *(सदस्य)*

रीतू च?इद्र *(सदस्य)* मीनाक्षी *(जे.पी.एप?ि.*

प्रकाशन मंडल

?ध्यिक्ष, प्रकाशन प्रभा : *एन वे?ि. ?इप*

मुख्य उत्पादन ?धिकार : *कल्याण बनर्जी*

मुख्य ?इपाद : *श्वेता उप्पल*

मुख्य प्रब?इध ?धिका : *तिम ?इल*

?इपाद : *रेखा अवाल*

हायक उत्पादन ?धिकार : *अब्द?इल नई*

आवरण ?ि>

?ावरण पृ : ?विनाश भारती, कक्षा V, वे?ड्डीय विद्यालय, एन.ी.ई.?ार.टी. कैम्प, नयी दिल्ली

?ि?इतिम ?ाव पृष्ठ : प्रथम एव?इनिशा?इत,कक्षाV, वे?ड्डीय विद्यालय, एन.ी.ई.?ार.टी. कैम्प, नयी दिल्ली

एन स ?ई आर ट केभ्प्रकाशन प्रभाग के कार्याल

एन.ी.ई.?ार.टी. वै?इ
श्री ?रिवि?इद मग
नय दिल्ल 110 016 **फोन : 011-26562708**

108, 100 फीट रोड
हेली एक्टे?ई?इशन, होस्डेवेर
बनाश?इकरी III इस्टेज
बैंगलुरु 560 085 **फोन : 080-26725740**

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 **फोन : 079-27541446**

ी.डब्ल्यू.ी. वै?इ
निकट; धनकल ब स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 **फोन : 033-25530454**

ी.डब्ल्यू.ी. कॉम्प्लैक
मालीगा?इ
गुवाहाट 781021 **फोन : 0361-2674869**

मूल्य एक प्रति ₹ 65.00 **वार्षिक** ₹ 260.00

प्राथमिक शिक्षक

वर्ष 38 अंक 2 अप्रैल 2014

इस अंक में

संवाद 3

लेख

1. पर्यावरण अध्ययन एवं एकीकृत एप्रोच — कविता शर्मा — 5
2. शिक्षकों ने बनायी कहानियाँ — शरद कुमार पांडे — 9
3. शिक्षार्थी सहभागिता — अक्षय कुमार दीक्षित — 13
4. प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण का प्रारूप — अशोक कुमार — 22
5. बच्चों में नेतृत्व क्षमता और जवाबदेही — यशस्वी द्विवेदी — 28

अनुभव

6. बच्चों की शुरुआती साक्षरता – कुछ अनुभव — कमलेश चंद्र जोशी — 34
7. लकड़ी की कलम — रीता — 40

शोध

8. प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन — बिजेंद्र कुमार गौतम, प्रीति वर्मा — 42

पठनीय

9. लिखने की शुरुआत — एक संवाद — 56

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी NCERT

विद्या से अमरत्व प्राप्त होता है।

परस्पर आवेष्टित हंस राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) के कार्य के तीनों पक्षों के एकीकरण के प्रतीक हैं–
(i) अनुसंधान और विकास,
(ii) प्रशिक्षण, तथा (iii) विस्तार।
यह डिज़ाइन कर्नाटक राज्य के रायचूर ज़िले में मस्के के निकट हुई खुदाइयों से प्राप्त ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी के अशोकयुगीन भग्नावशेष के आधार पर बनाया गया है।
उपर्युक्त आदर्श वाक्य *ईशावास्य उपनिषद्* से लिया गया है जिसका अर्थ है–
विद्या से अमरत्व प्राप्त होता है।

बालमन कुछ कहता है

10. मेरे स्कूल के प्रोग्राम्स — प्रीति वर्मा — 87

कविता

11. कैसा हो स्कूल हमारा — गिरीश तिवारी

संवाद

बात उन दिनों की है जब पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ज़ाकिर हुसैन एक शिक्षक थे। पढ़ाई के साथ-साथ बच्चों की अन्य बातों पर भी वह ध्यान देते थे। वे बच्चों को विद्यालय में साफ़-सुथरे ढंग से आने की समय-समय पर हिदायत देते थे। एक बार उन्होंने देखा कि उनकी कक्षा में कुछ बच्चे बिना पॉलिश किए जूते पहनकर आते हैं। उन्होंने बच्चों से कहा कि जूते पॉलिश करके पहनकर आया करो। लेकिन उनके कई बार कहने के बाद भी कुछ बच्चे बिना पॉलिश के जूते पहनकर आ रहे थे। डॉ. ज़ाकिर हुसैन सोचने लगे कि ऐसा क्या करूँ कि बच्चों की बिना पॉलिश के जूता पहनकर आने की आदत सुधर जाए। दूसरे दिन वह ब्रश और पॉलिश की डिबिया लेकर स्कूल के गेट के पास बैठ गए और बड़े गौर से हर बच्चे के जूतों की ओर देखने लगे। जो बच्चे गंदे जूते पहनकर आए थे, उनके जूतों पर उन्होंने पॉलिश करनी शुरू की। गंदे जूते पहनकर आने वाले बच्चों को बहुत शर्मिंदगी महसूस हुई। उस दिन के बाद से विद्यालय के सभी बच्चे जूतों पर अच्छी तरह से पॉलिश करके ही आते थे।

शिक्षक के व्यक्तित्व का बच्चों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। शिक्षक अपने आचार-व्यवहार से बाल हृदय की गहराईयों को स्पर्श कर उनका भविष्य सँवार सकता है। इसी संदर्भ में वर्षों पहले कहीं पढ़ी गई एक घटना याद आ रही है। किसी गाँव में एक शिक्षक रहते थे। एक बार वह अपने घर में बैठे गाँव के कुछ लोगों से बातें कर रहे थे तभी उनके घर के सामने एक कार आकर रुकी। उसमें से पास के शहर के कमिश्नर उतरे और श्रद्धा से शिक्षक का चरण स्पर्श करने के बाद बोले, ''गुरू जी! पहचाना मुझे, मैं हूँ आपका शिष्य अनिल,'' इसके बाद उन्होंने बहुत देर तक अपने विद्यालयी जीवन की बाते कीं। बातों ही बातों में उन्होंने कहा, ''गुरू जी, मैं आज जो कुछ भी हूँ, सब आपकी ही बदौलत हूँ। आपने ही मुझे सही दिशा दी।'' कमिश्नर के जाने के बाद गाँव के एक युवक ने गुरू जी से पूछा, ''मैं अकसर देखता हूँ कि आपसे मिलने कई आई.ए.एस. अधिकारी आते हैं। सब यही कहते हैं कि आपने ही उन्हें बनाया है। गुरू जी आप स्वयं क्यों नहीं आई.ए.एस. अधिकारी बने।'' गुरू जी ने एक पल के लिए कुछ सोचा फिर बड़ी ही विनम्रता से हँसते हुए उत्तर दिया,

"यदि मैं भी आई.ए.एस. अधिकारी बना होता तो आज इन सबका जो प्यार और श्रद्धा मुझे मिल रही है वह सब कहाँ से पाता? एक शिक्षक के लिए यही सबसे बड़ी उपलब्धि है कि उसके विद्यार्थी जीवन में सफ़ल हों।"

यह उपलब्धि हम सभी शिक्षक साथी हासिल कर सकते हैं। बस आवश्यकता है अपनी भूमिका पहचानने की और उसी के अनुसार कर्त्तव्य तथा दायित्त्वों के निर्वाह की।

अकादमिक संपादक

पर्यावरण अध्ययन एवं एकीकृत एप्रोच

कविता शर्मा*

प्रस्तावना

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ने का समर्थन करती है। पर्यावरण अध्ययन (Environmental Studies)के विषय में तो यह पूरी तरह से सही है क्योंकि पर्यावरण अध्ययन का ध्येय, मात्र ज्ञान का अर्जन या पर्यावरण के प्रति सचेतता ही नहीं, बल्कि इससे जुड़े सामाजिक; प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक मुद्दों पर एक संपूर्ण रूप में समझ बनाते हुए आवश्यक कौशलों के विकास द्वारा पर्यावरण संबंधी समस्याओं का समाधान करना भी है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986 (पुर्नविकसित-1992) में 'पर्यावरण के बचाव' को केंद्र में रखकर ही राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के विकास की बात कही गई है अर्थात् यह संपूर्ण शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है। राष्ट्रीय स्तर पर एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित सभी पाठ्यचर्याओं में इस पर ध्यान देने पर विशेष बल दिया गया है। वर्ष 1988 की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या में प्राथमिक स्तर पर कक्षा 3 से 5 तक एक विषय पद्धति अपनाते हुए पर्यावरण अध्ययन (ई.वी.एस.) को दो भागों-भाग-1 (विज्ञान) और भाग-2 (सामाजिक विज्ञान) के द्वारा पढ़ाने की संस्तुति की गई। इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए कि बच्चे अपने पर्यावरण को पूर्णत: समझते हैं, सत्र 2000 से इसे प्राथमिक स्तर पर एक समेकित विषय के रूप में पढ़ाने की संस्तुति की गई, जिसे राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 ने भी जारी रखा। इसके अंतर्गत कक्षा 3 से 5 तक पर्यावरण अध्ययन एक पृथक् विषय तथा कक्षा 1 और 2 में पर्यावरण संबंधित कौशल एवं सरोकारों को भाषा एवं गणित के माध्यम से संबोधित करने की संस्तुति की गई। इनमें दिए गए उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बाल-केंद्रित शिक्षण अधिगम प्रक्रियाएँ अपनाने पर बल दिया गया है तथा विभिन्न कौशलों का विकास करते हुए ज्ञान सृजन की बात कही गई है।

* *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

क्या है पर्यावरण और पर्यावरण अध्ययन (ई.वी.एस.)?

पर्यावरण में हम और हमारे चारों ओर की चीज़ें शामिल हैं, यानि इसमें केवल प्राकृतिक ही नहीं परंतु मानव निर्मित ढाँचे भी शामिल हैं। तो क्या पर्यावरण अध्ययन एक तरह का परिस्थिति विज्ञान है या फिर इससे कहीं अधिक? क्या यह एक विषय है या एक पद्धति? यह पर्यावरण विज्ञान एवं पर्यावरणीय शिक्षा से किस तरह भिन्न है? इन सभी सवालों का उत्तर जानना बहुत आवश्यक है। अकसर शिक्षकों से बातचीत में यह पता लगता है कि वे पर्यावरण अध्ययन को हमारे आसपास के प्राकृतिक वातावरण (जिसमें मुख्यत: पेड़-पौधे, जीव-जंतु एवं स्वयं मानव) की जानकारी एवं रखरखाव को ही समझते हैं। ऐसा करने के लिए पुस्तक में दिए गए पाठों की बच्चों को जानकारी, जिन्हें टीचर या बच्चे पाठ को पढ़कर व उससे जुड़े प्रश्नों के उत्तर लिखवाकर करा दी जाती है। किसी क्रियाकलाप या गतिविधि को करवाना अकसर अधिक समय लगने वाली के रूप में लिया जाता है जिसे या तो शिक्षक करवाने में बहुत रुचि नहीं रखते क्योंकि इसके लिए अधिक मेहनत या कई बार बच्चों का संपूर्ण सहयोग नहीं मिलने जैसे कई कारण बताए जाते हैं या फिर शिक्षक ऐसी गतिविधियाँ सोच पाने में असमर्थ होते हैं जो कि संदर्भित एवं उपयोगी हों।

पर्यावरण अध्ययन या ई.वी.एस. वास्तव में क्या है और क्यों इसे एक core area के रूप में प्राथमिक स्तर पर लिया गया है ऐसा जानना बहुत ज़रूरी है। आज से कुछ दशक पूर्व हमारी शिक्षा प्रणाली में पर्यावरण अध्ययन नामक विषय नहीं था। कई सालों से विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर की सभाओं, दस्तावेज़ों द्वारा भी इसे पढ़ाने की बात कहे जाने पर भी विभिन्न राज्य/केंद्र शासित प्रदेशों में या तो विज्ञान या फिर पर्यावरण विज्ञान के नाम से इसे शुरू किया गया है। कुछ राज्यों में तो आज भी पर्यावरण विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान जैसे दो विषय अलग-अलग पढ़ाए जा रहे हैं।

दरअसल पर्यावरण अध्ययन में पर्यावरण, विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान का समावेश है। परंतु पर्यावरण विज्ञान, विज्ञान से जुड़े विभिन्न विषयों की शृखंला को अपने अंदर सम्मिलित करता है। यह इन विषयों के सार को संकलित करके प्राकृतिक वातावरण तथा उसके भौतिक, रासायनिक एवं जैविक तत्वों की पारस्परिक क्रियाओं को व्यवस्थित रूप में समझने तथा संचालित करने में सहायता करता है।

दूसरे शब्दों में यह विषय मानव गतिविधियों के विभिन्न तंत्रों पर प्रभाव का आकलन कर उनके पुन: स्थापन के लिए रणनीतियों के निर्माण में सहायक होता है। यद्यपि पर्यावरण अध्ययन संबंधित विषयों के तार्किक बोझ के बिना एक पद्धति है जिसका उद्देश्य पर्यावरण के प्रति एक सकारात्मक सोच एवं इसके साथ-साथ सरोकार पूर्ण परिप्रेक्ष्य का निर्माण है। संपूर्ण जगत के जीवित एवं अजीवित तत्व के आंतरिक एवं पारस्परिक संबंधों की समझ बनाते हुए पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति सचेतता,

संवेदनशीलता उन्हें सुलझाने का कौशल एवं भविष्य में उनकी रोकथाम करने की क्षमता का विकास करना भी पर्यावरण अध्ययन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

पर्यावरण अध्ययन एवं एकीकृत परिप्रेक्ष्य

हम सभी जानते हैं कि बच्चे अपने परिवेश में पलते-बढ़ते हुए नाना प्रकार के अनुभवों को ग्रहण करते हैं। यह पूर्व ज्ञान नए ज्ञान के सृजन तथा विकास के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है। किसी भी तरह के ज्ञान को बच्चे टुकड़ों में बाँटकर नही सीखते, परंतु उसे संपूर्ण एवं समग्र रूप में ग्रहण करते हैं। उदाहरण के तौर पर किसी तितली को देखकर वे उसके पंखों व रंगों की सुंदरता, उसके पंखों पर बने डिज़ाइन एवं उनकी symmetry को देखते हैं न कि उस एक कीट (जैविक ज्ञान), न ही उस पर की गई कविता, कहानी (भाषा) आदि में बाँट कर देखते एवं सीखते हैं। आसमान में आए बादलों को देखकर उनके रंगों, आकृतियों, उनका बनना, आकाश में तैरना, बरसात करना आदि से जुड़े कई सवाल उनके विचार में आ सकते हैं। जिनके उत्तर विभिन्न विषयों के ज्ञान के इस्तेमाल द्वारा मिलेंगे। परंतु एक शिक्षक होने के नाते हमें ऐसे सवालों को प्रोत्साहन देते हुए अधिगम के ऐसे भरपूर अवसर बच्चों को उपलब्ध कराने चाहिए जिनसे उनकी उत्सुकता तथा जिज्ञासा बढ़े।

इसी प्रकार पर्यावरण अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए, अधिगम के ऐसे चुनिंदा अवसर होने चाहिए जो बच्चों का ध्यान उनके परिवेश से जुड़ी समस्याओं की ओर आकर्षित करे। यह जानते हुए कि इस विषय का अधिगम कक्षा की चारदीवारी या उन पर आधारित पाठ्यपुस्तकों तक ही सीमित नहीं होता अपितु स्कूली ज्ञान बच्चों को बाहरी दुनिया से जोड़ने की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी का काम करता है। स्कूली शिक्षा के विभिन्न विषय इस ब्रह्मांड या संसार को समझने में हमारी सहायता करते हैं, परंतु वर्तमान शिक्षा प्रणाली को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि हम शिक्षा के नहीं, विभिन्न विषयों को पढ़ाने के मौलिक उद्देश्यों से भी काफ़ी विचलित हुए हैं। शिक्षक किसी भी विषय को पढ़ाने के लिए उसे तथा उससे जुड़ी पाठ्यसामग्री को एक अलग ज्ञान-भंडार के रूप में लेते हैं और इन्हीं धारणाओं के साथ अपनी शिक्षण पद्धति का इस्तेमाल करते हैं। सवाल यदि उस विषय से संबंधित न हो तो अकसर टीचर तुरंत टका-सा जवाब बच्चों को देते हैं कि मैं विज्ञान का शिक्षक हूँ, गणित या सामाजिक विज्ञान का नहीं, या यह सवाल इस विषय से संबंधित नहीं है।

जबकि हम सब जानते हैं कि पर्यावरण को किसी एक विषय की बपौती न होकर, भिन्न-भिन्न विषयों के सीमित प्रभागों में नहीं बाँटा जा सकता। यह सभी विषय पर्यावरण तथा उससे जुड़े तथ्यों एवं मुद्दों को समझने में सहायक होते हैं।

उदाहरण के तौर पर तरह-तरह की मिट्टी एवं जलवायु भूगर्भ विज्ञान द्वारा, उसमें पाए जाने

वाले पेड़-पौधे, जीव-जंतु या फ़सल आदि को जैविक ज्ञान द्वारा, मिट्टी या वायु के तत्त्व, रासायनिक ज्ञान द्वारा, मिट्टी की परत की गहराई, क्षेत्रफल आदि का गणित द्वारा अध्ययन किया जा सकता है। किसी खास क्षेत्र में होने वाली समस्याओं जैसे मिट्टी का कटाव, विभिन्न प्रजातियों का लुप्त होना, बाढ़ आना आदि पर समझ और उनका निवारण इन सभी विषयों की समझ द्वारा ही किया जा सकता है। लेकिन इस सब के लिए हमें वहाँ के प्राकृतिक ही नहीं बल्कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं पर भी अपनी समझ बनानी होगी। क्या नई फैक्ट्रियों का लगना, जंगल तथा उन पर अपना जीवन निर्वाह करने वाले व्यक्तियों को प्रभावित कर रहा है? क्या जंगल के कटने से मिट्टी का कटाव व बाढ़ बढ़ गई है? क्या फैक्ट्री लगना लोगों को रोज़गार दे रहा है? इन सब से किन लोगों का जीवन किस-किस तरह प्रभावित हो रहा है? इन सभी मुद्दों पर समझ बनाने के लिए विज्ञान, सामाजिक विज्ञान को एकीकृत रूप से देखने से एक अच्छी समझ का विकास हो सकता है। पर्यावरणीय मुद्दे देखने में बहुत जटिल होते हैं। इन्हें समझने तथा तह तक जाने के लिए विभिन्न विषयों का ज्ञान ज़रूरी है। इसलिए यह और भी महत्वपूर्ण है कि यदि हमें पर्यावरण अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति करनी है तो इन मुद्दों को अलग-अलग विषयों द्वारा न समझाकर, एक एकीकृत परिप्रेक्ष्य में लिया जाना चाहिए। इसके लिए विषयों की दीवारों को तोड़ना तथा उनकी पारंपरिक सीमाओं को लाँघना अति आवश्यक है। इसीलिए पाठ्यक्रम तथा उसमें चुने गए विषय एवं उप-विषय इस प्रकार से हों जिनके संप्रत्यय और उप-संप्रत्यय को विभिन्न विषयों में न बाँटा जा सके बल्कि एक समग्र रूप में देखते हुए ऐसी ही पाठ्यसामग्री भी विकसित की जा सके।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या-2005 पर आधारित पर्यावरण अध्ययन कक्षा 3 से 5 तक का पाठ्यक्रम तथा इसमें दी गई छह विषयवस्तुओं को ध्यानपूर्वक देखिए। देखें! क्या सोच पाए? क्या यह विषयवस्तु (थीम) एकीकृत पहलू दर्शाती है? यदि हाँ तो कैसे?

2

शिक्षकों ने बनायी कहानियाँ

शरद कुमार पांडे*

कहानी सुनाना भी एक कला है। यदि शिक्षक इस कला में पारंगत है तो एक साधारण-सी कहानी को भी सरस बना देता है। इसके विपरीत यदि शिक्षक को कहानी सुनाने की कला की जानकारी नहीं है तो रोचक कहानी भी बच्चों पर अपना प्रभाव नहीं छोड़ पाती है। यही कारण है कि भाषा संबंधी शिक्षक प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यक्रमों के दौरान एक सत्र कहानी सुनाने पर अवश्य रखा जाता है। बच्चों के लिए कहानी सुनाते समय किन-किन बातों का ध्यान रखा जाए, कहानी कैसे सुनायी जाए, कैसा हो कक्षा का वातावरण, कहानी सुनाने से पहले और बाद में किन गतिविधियों का आयोजन किया जाए-इन सब पर प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान चर्चा की जाती है।

भाषा की कक्षा में कहानी का और भी कई तरीकों से उपयोग किया जा सकता है। भाषा सीखने के दौरान कई वर्ण बोलने, पढ़ने तथा लिखने में कुछ बच्चों को दिक्कत होती है जैसे – ठ,ढ,थ,फ,ड तथा ण।

इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए हाल ही में हुए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षकों से इन वर्णों को इस्तेमाल करते हुए कहानी बनवाई गई। यह प्रशिक्षण एन.सी.ई.आर.टी. के नॉर्थ ईस्ट क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, शिलाँग द्वारा 18 मार्च से 24 मार्च 2014 तक गुवाहाटी में आयोजित किया था। इसमें नागालैंड के शिक्षकों ने भाग लिया। नागालैंड में हिंदी तृतीय भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है। शिक्षकों ने बताया कि यहाँ पर बच्चे घर में अपनी बोली (नागालैंड की विभिन्न बोलियाँ) बोलते हैं और अधिकांश बच्चे विद्यालय में ही हिंदी सुनते हैं। ऐसे में शिक्षकों के सामने कई वर्णों को सिखाने के दौरान काफ़ी समस्या आती है। शिक्षकों ने बताया कि हिंदी में कहानी और कविताएँ सुनने में बच्चों को आनंद आता है और वे इन्हें ध्यान से सुनते हैं। शिक्षकों से बातचीत की गई कि इन वर्णों से बने शब्दों को यदि कहानी के ताने-बाने में डालकर बच्चों को कहानी सुनायी जाए, तो कहानी सुनते-सुनते बच्चे इन कठिन से लगने वाले वर्णों को कब

*असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, उत्तर पूर्व क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, शिलांग, मेघालय

सरलतापूर्वक सीख जाते हैं कि उन्हें स्वयं भी नहीं आभास हो पाता है।

बच्चों को कहानी सुनाने की ज़रूरत, कहानी का चयन कैसे करें, कहानी कैसे सुनायी जाए – इन सब बातों पर विस्तार पूर्वक चर्चा करने के बाद प्रतिभागी शिक्षकों को समूह में कहानी बनाने का कार्य दिया गया। प्रत्येक समूह को एक-एक वर्ण दिया गया। इसके बाद प्रत्येक समूह ने बनी हुई कहानी प्रस्तुत की। ये कहानियाँ कैसी थीं – लीजिए आप भी पढ़िए –

पहले समूह ने 'ड' वर्ण से बने शब्दों के आधार पर कहानी बनाई –

डमरू और चिड़िया

सवेरे का समय था, ठंडी-ठंडी हवा चल रही थी, पेड़ की डालियों पर चिड़ियाँ चहक रही थीं – चीं-चीं-चीं। इतने में वहाँ पर एक डमरू वाला आया। वह अपना डमरू बजाने लगा – डम-डम-डम-डम। डमरू की आवाज़ से चिड़ियाँ डर गईं। चिड़ियों का चहकना बंद हो गया और डर के मारे सारी चिड़ियाँ उड़ गईं।

दूसरे समूह को दिया गया था – ट। इस समूह द्वारा बनी कहानी –

टॉम और टम-टम

एक लड़का था। उसका नाम टॉम था। एक दिन वह टोपी पहनकर ट्यूशन पढ़ने के लिए घर से निकला। रास्ते में उसने टॉफ़ी खरीदी। उसी समय उसने एक टम-टम देखा। टमटम वाला बहुत मोटा था। उसने टम-टम वाले को रोका। उस मोटे टम-टम वाले ने टॉमी से पूछा – अरे! बेटा कहाँ जाना है? टॉमी ने टम-टम वाले से कहा-मुझे पलटन बाज़ार ट्यूशन पढ़ने जाना है। टम-टम वाला टॉम को पलटन बाज़ार ले गया। ट्यूशन से लौटते वक्त रास्ते में टॉम ने अपने पॉकेट से टॉफ़ी निकालकर खायी और टम-टम वाले को भी एक टॉफ़ी दी और फिर वह घर वापस आ गया।

तीसरे समूह ने 'ठ' वर्ण से बने शब्दों के आधार पर बनायी कहानी –

चिट्ठी वाला

एक डाकिया था। वह गली-गली चिट्ठी बाँटने जाता था। ठंड का मौसम था। ठंडी-ठंडी हवा चल रही थी। उसे ठंड लग रही थी। वह ठिठुर-ठिठुर कर चल रहा था। रास्ते में उसे मिठठू मिला। मिठठू मिठाई बेच रहा था। मिठठू ने डाकिए को मिठाई खाने के लिए दी। डाकिया मिठाई खाकर खुश हो गया। उसने मिट्ठू से कहा – तुम बातें भी खूब मीठी-मीठी करते हो और मिठाई भी बढ़िया बनाते हो। फिर वह चिट्ठियाँ लेकर घर-घर बाँटने चल दिया।

चौथे समूह को दिया गया था – ण। कहानी ऐसे बनी –

शिकारी का प्रण

एक शिकारी था। उसका नाम विष्णु था। एक दिन वह अपना धनुष-बाण लेकर शिकार करने निकला। जैसे ही वह जंगल पहुँचा उसे बहुत सारे जंगली जानवर दिखाई देने लगे। विष्णु ने हिरण को मारने के लिए अपने धनुष में बाण लगाया। हिरण विष्णु को देखकर अपने प्राण बचाने के

लिए वहाँ से भागा। एक क्षण के लिए उसे लगा कि वह नहीं बचेगा। भागता हुआ हिरण एक झोपड़ी के सामने पहुँचा। हिरण झोपड़ी के अंदर घुस कर छिप गया। तभी विष्णु वहाँ पहुँचा। वहाँ एक साधु बैठा हुआ था। साधु ने विष्णु को समझाया कि अपने भोजन के लिए मूक जानवरों के प्राण लेना ठीक नहीं है। सारे जीव-जंतु राष्ट्र की संपदा हैं। राष्ट्र निर्माण में हर एक नागरिक का कर्त्तव्य है कि हर क्षण अपनी संपदा की रक्षा करे। रण से हटकर शांति का अमल करे। साधु की बातें सुनकर विष्णु को लगा कि साधु सही बात कह रहे हैं। उसने अपना विचार एक ही क्षण में बदल लिया और प्रण किया कि आगे से किसी प्राणी का वध नहीं करूँगा।

पाँचवें समूह ने 'श' वर्ण से बने शब्दों को पिरोते हुए कहानी गढ़ी –

शहदवाला

बहुत समय पहले की बात है। एक गाँव में शारदा नाम की एक लड़की थी। वह बहुत ही शांत स्वभाव की थी। उसके साथ खेलने वाले बच्चे शोभा, शीला, शशि बहुत चंचल और शरारती थे। एक दिन की बात है। एक शहद बेचने वाला गाँव में आया। बच्चे शहद बेचने वाले के पास जमा हो गए। सभी का मन शहद खाने का कर रहा था। परंतु उनके पास पैसे नहीं थे। शशि ने शहद बेचने वाले से कहा – आप हमें शहद खिला दो, हम शहद के बदले आपको कविता या शायरी सुना देंगे। शहद वाले ने शंका भरी नज़रों से बच्चों की ओर देखा और बोला – बच्चों क्या तुम जानते हो कि शायरी क्या होती है? शायद तुम्हें पता नहीं, शायरी के लिए शब्दों का मेल होना ज़रूरी है। बच्चों ने पूछा – भैया! क्या आप कविता और शायरी जानते हो? शहद बेचने वाले ने कहा – हाँ, मैं जानता हूँ। लो सुनो–

देखो-देखो मेरी शान
रखता हूँ अपना ईमान
ईमानदारी है मेरी शान
यही है मेरी पहचान

शहद वाले की शायरी सुनते-सुनते शोभा के मन में विचार आया। उसने सोचा कि इसकी शायरी की तारीफ़ कर दी जाए तो यह खुश हो जाएगा और हमें शहद खाने को दे देगा। शायरी खत्म होते ही बच्चों ने तालियाँ बजाईं और एक साथ बोल उठे – वाह भैया आप तो मीठा-मीठा शहद भी बेचते हैं और इतनी बढ़िया शायरी भी कर लेते हैं। अपनी शायरी हमें सुना भी दो और सिखा भी दो। अब भैया मीठा-मीठा शहद भी खाने को दीजिए ना!

बच्चों की मीठी-मीठी बातें सुनकर शहदवाला खुश हो गया और उसने उन्हें शहद खाने को दिया। बच्चों ने बड़े चाव से शहद खाया। जब वे शहद खाकर जाने लगे तो शकीला बोल उठी – भैया मेरी कविता सुनो –

शहद वाले प्यारे भैया
हम सब नाचें ता-ता थैया।

छठवें समूह को दिया गया था वर्ण – ढ। इससे बनी कहानी है –

ढोलवाला

एक ढोलवाला था। एक दिन वह ढोल लेकर एक गाँव में पहुँचा। वह ढोल बजाने लगा। ढम-ढम-ढम-ढम। ढोल की आवाज़ सुनते ही बच्चे दौड़कर आए। बच्चों ने ढोल वाले को चारों ओर से घेर लिया। ढोल वाले ने फ़िर से ढोल बजाना शुरू किया ढम-ढम-ढम-ढम। एक बच्चे ने ढोल वाले से पूछा – इस ढोल के अंदर क्या है। ढोल वाला बोला – ढुमुक-ढुमुक है। बच्चों ने कहा – हमें ढुमुक-ढुमुक दिखाओ न! ढोल वाले ने ढोल का ढक्कन खोला। जैसे ही ढक्कन खुला, एक बड़ा सा मेंढ़क उछल कर बाहर कूदा। मेंढ़क के बाहर निकलते ही बच्चे भी उछल गए। वे ज़ोर-ज़ोर से ताली बजाने लगे – ढोल के अंदर मेंढक, ढोल के अंदर मेंढक।

प्रस्तुतीकरण के दौरान शिक्षकों ने भी साथी शिक्षकों की बनी कहानियाँ सुनने में रुचि दिखाई। शिक्षकों का कहना था कि बच्चों को कठिन लगने वाले वर्णों को सिखाने का यह आसान तरीका है। शिक्षकों का यह भी कहना था कि जब उनसे कहानी लिखने के लिए कहा गया तो उन्हें झिझक हो रही थी क्योंकि सभी अहिंदी भाषी हैं तथा सबने पहली बार हिंदी में कुछ लिखा था। कहानी/कुछ लिखने का आनंद उन्हें पहली बार मिला।

प्रस्तुतीकरण के पश्चात् सभी शिक्षक प्रतिभागी प्रसन्न थे उनकी यह राय थी कि प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान इसी प्रकार से समूह कार्य दिए जाएँ तो सीखना सरल हो जाता है, प्रशिक्षण कार्यक्रम में वास्तव में कुछ सीखकर जा सकते हैं और प्रशिक्षण सार्थक हो जाता है।

प्रतिभागियों के नाम

1. आर. कुमार	2. टी.एन. पांडे
3. मेन्योलेत्यो	4. पिकातो
5. मुघावी	6. प्रकाश
7. आखोतो	8. नेल्सॅन
9. हिसिन्लो	10. वाईसुॅम्बा
11. बी. प्रसाद	12. आखुमला
13. सेद्जेलिए	14. हेलेना
15. आचुॅला	16. वेच्छ
17. हेलेन माघ	18. सिनी थोंग

जिस प्रकार हर बच्चे में कुछ न कुछ क्षमता ज़रूर होती है, बस आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षक उसे पहचानकर बच्चे को कक्षा में अवसर दें। उसी प्रकार ज़रूरत इस बात की भी है कि शिक्षक स्वयं में निहित क्षमता तथा प्रतिभा को भी पहचानें और सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान उसका उपयोग करें।

3

शिक्षार्थी सहभागिता

अक्षय कुमार दीक्षित *

दीक्षित जी जब अपनी कक्षा में पहुँचे तो हैरान रह गए। कहाँ तो उन्होंने योजना बनाई थी कि हर बच्चे पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देंगे और कहाँ इस कक्षा में अस्सी बच्चे बैठे थे, जिन पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना हिमालय की चढ़ाई जितना कठिन लग रहा था।

मीरा जी की कक्षा भारत की सांस्कृतिक विविधता का एक आदर्श उदाहरण है। उनकी कक्षा में कोई बच्चा असम का है तो कोई तमिलनाडु का, कोई पढ़ाई में इतना तेज़ है कि मीना जी के पढ़ाने से पहले ही सब कुछ पढ़ लेता है, दूसरी ओर ऐसा बच्चा भी है जिसने दाखिला ही सीधे तीसरी कक्षा में लिया है, पर अभी उसे ढंग से पढ़ना भी नहीं आता।

सलमान जी की कक्षा में दो बच्चे ऐसे हैं जिनके कारण पूरी कक्षा परेशान रहती है, उनकी कक्षा में एक ऐसा बच्चा भी है जिसके हाथ में जन्म से ही कुछ समस्या है, वह ठीक से पेंसिल तक नहीं पकड़ सकता।

ऐसे ही अनेक उदाहरण आपको अपने आस-पास दिखाई देंगे। इन लोगों में आपको अपनी समस्याओं की झलक नज़र आएगी। लेकिन इन सभी लोगों में एक बात समान है। इन सभी ने समस्याओं से घबराकर अपनी कक्षा के बच्चों की पढ़ाई-लिखाई से समझौता नहीं किया, बल्कि इन समस्याओं का समाधान खोजा। इस बात में कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि इन सभी ने जो समाधान खोजे, उन समाधानों में भी एक बात समान थी। इन सभी ने पढ़ने-पढ़ाने की प्रक्रिया में शिक्षार्थियों की सहभागिता को अपना औज़ार बना लिया। इस औज़ार से ना केवल ऊपर बताई गईं समस्याएँ गायब हो गईं, बल्कि अनेक ऐसी समस्याओं का समाधान भी निकल आया, जो अज्ञात थीं। तो आखिर ये जादू की छड़ी है क्या!

बच्चों की सहभागिता क्या है?

सहभागिता का सीधा सादा अर्थ है – हिस्सा लेना, शिक्षार्थी सहभागिता का अर्थ है शैक्षिक

* *शिक्षा सलाहकार*, सी-633, जे.वी.टी.एस. गार्डन, छत्तरपुर एक्स्टेंशन, नयी दिल्ली-110074

प्रक्रियाओं में शिक्षार्थियों की बराबरी की भागीदारी। हो सकता है कि किसी के मन में सवाल उठे कि जब शिक्षक कुछ पढ़ाता है और बच्चे पढ़ते हैं तब दोनों की ही तो भागीदारी होती है। यह तो हर कक्षा की एक सामान्य प्रक्रिया है। इसमें अलग क्या है? शिक्षार्थी सहभागिता का सही अभिप्राय है-शैक्षिक निर्णयों में और कार्यों में बच्चों की सक्रिय हिस्सेदारी।

बाल अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन की धारा 12 के अनुसार –

1. राज्य यह सुनिश्चित करेगा कि जो बच्चे अपना दृष्टिकोण बनाने में समर्थ हैं, उन्हें उन सभी मुद्दों पर अपने विचार प्रकट करने की आज़ादी हो जो मुद्दे उन्हें प्रभावित करते हैं। बच्चे की आयु और परिपक्वता के अनुसार उस बच्चे के विचारों को उचित महत्त्व दिया जाए।
2. इस उद्देश्य के लिए बच्चे को ऐसे अवसर उपलब्ध कराए जाएँ, जिसमें उनकी बातों को सुना जाए।

बाल अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन के मुताबिक, बच्चों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में भाग लेने का अधिकार है और अपनी उम्र और परिपक्वता के अनुसार उनकी राय को महत्त्व दिया जाना चाहिए।

इसका यह मतलब है कि बच्चों को स्कूल और कक्षा के फ़ैसलों में, परिवार के फ़ैसलों में, सांस्कृतिक और खेल संगठनों आदि के निर्णयों में भाग लेने का अधिकार है। बच्चों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार है। मिलकर कार्य करने का अधिकार है। उचित जानकारी की तलाश करने और उसे प्राप्त करने का अधिकार है। इन अधिकारों के द्वारा बच्चे एक बेहतर भविष्य का निर्माण करने के लिए अपने स्वयं के जीवन में परिवर्तन लाने में समर्थ हो सकेंगे।

इन बातों का निचोड़ यह है कि –

1. सभी बच्चे विचार प्रकट करने में सक्षम हैं।
2. उन्हें अपने विचार स्वतंत्रतापूर्वक प्रकट करने का अधिकार है।
3. उन्हें अधिकार है कि उनकी बात उन सभी मुद्दों पर सुनी जाए, जो उन्हें प्रभावित करते हैं।
4. उन्हें अधिकार है कि उनकी बातों को गंभीरता से लिया जाए।
5. इन कार्यों में उनकी आयु और परिपक्वता को ध्यान में रखा जाए।

बच्चों की सहभागिता को परिभाषित करने के अनेक प्रयास किए गए हैं। आगे दी गई परिभाषा अपने आप में संपूर्ण कही जा सकती है।

''बच्चों की भागीदारी एक सतत् प्रक्रिया है जिसमें उनकी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सम्मिलित है और बच्चों से संबंधित मुद्दों पर निर्णय लेने की प्रक्रिया में अलग-अलग स्तरों पर उनकी सक्रिय भागीदारी सम्मिलित है। इसके लिए बड़ों और बच्चों के बीच संवाद और जानकारियों का आदान-प्रदान शामिल होता है। यह आदान-प्रदान आपसी आदर और शक्तियों के समान विभाजन पर आधारित होता है। वास्तविक सहभागिता बच्चों को प्रक्रिया और परिणाम, दोनों को आकार देने, बदलने या बनाने की शक्ति देती है। सहभागिता की प्रकृति को निर्धारित करने में बच्चों की स्वयं की विकासशील क्षमता, अनुभव और रुचियों से संबंधित मुद्दे एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।''

किसे शिक्षार्थी सहभागिता नहीं कह सकते

दुनियाभर में बच्चों की तस्वीरें सबसे ज़्यादा खींची जाती हैं लेकिन दुर्भाग्य से उनकी आवाज़ नहीं सुनी जाती। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 में भी कहा गया है, "बच्चों की आवाज़ और अनुभवों को कक्षा में अभिव्यक्ति नहीं मिलती, प्राय: केवल शिक्षक का स्वर ही सुनाई देता है। बच्चे केवल अध्यापक के सवालों का जवाब देने के लिए या अध्यापक के शब्दों को दोहराने के लिए ही बोलते हैं। कक्षा में वे शायद ही स्वयं कुछ करके देख पाते हैं। उन्हें पहल करने के अवसर भी नहीं मिलते हैं।"

जब कक्षा में बच्चों की सहभागिता को बढ़ाने की बात की जाती है तो उन्हें गुड्डे-गुड़ियों की तरह सजा दी जाती है। लेकिन क्या किसी मंच पर अभिनय करते बच्चे वास्तविक सहभागिता का उदाहरण हैं? आइए देखते हैं कि हम किसे शिक्षार्थी सहभागिता नहीं कह सकते।

- बच्चों का किसी समारोह में उपस्थित होना – यह केवल सजावट है, सहभागिता नहीं है।
- जब सभी निर्णय वयस्क के रहे हों और बच्चों से केवल परामर्श किया जा रहा हो, तब वह सहभागिता नहीं है।
- यदि उनको बहलाकर ऐसे फैसले निकलवाए जाते हैं जो सही मायने में उनके खुद के नहीं हैं, न ही उनके स्वयं के अनुभव पर आधारित हैं, तो यह सहभागिता नहीं है।
- जब उनसे 'बच्चों' के प्रतिनिधि के रूप में अपनी राय देने के लिए कहा जाता है जबकि ना तो उन्हें ठीक से मुद्दों की जानकारी दी जाती है और न ही उन्हें अपने साथियों के साथ उन मुद्दों पर चर्चा करने का अवसर दिया जाता है, तो इसे महज़ दिखावटी प्रयास कहेंगे, सहभागिता नहीं।

किसी कार्य में शिक्षार्थी सहभागिता के 8 स्तर होते हैं–

1. मात्र जोड़-तोड़
2. केवल सजावटी
3. केवल प्रतीकात्मक
4. सौंपा गया लेकिन पहले सूचित किया गया।
5. परामर्श लिया गया, सूचित किया गया।
6. वयस्क द्वारा शुरू किया और निर्णय को बच्चों के साथ साझा किया गया।
7. कार्य बच्चे द्वारा शुरू और निर्देशित किया गया।
8. बच्चे द्वारा शुरू किया गया, वयस्कों के साथ निर्णय को साझा किया गया।

सार्थक भागीदारी के लिए कम से कम कुछ सीमा तक अधिकारों को साझा करना और कम से कम कुछ प्रक्रियाओं में बच्चों की हिस्सेदारी शामिल होनी चाहिए। यहाँ दी गई तालिका में शिक्षार्थी सहभागिता के 1 से लेकर 8 स्तर दिए गए हैं। एक से लेकर चार स्तरों को सहभागिता नहीं कहा जा सकता। प्राथमिक स्तर के बच्चों के लिए 5 से 6 तक उपयुक्त हैं। स्तर 7 और 8 थोड़े बड़े बच्चों और युवाओं के लिए ही उपयुक्त हैं।

यहाँ हमें इस बात को भी समझ लेना चाहिए कि भागीदारी का मतलब स्वायत्तता नहीं

है। भागीदारी का मतलब यह नहीं है कि सारे अधिकार बच्चों के हाथों में सौंप दिए जाएँ। बच्चे जो चाहते हैं, उसे हमेशा नहीं माना जा सकता, वयस्कों पर यह सुनिश्चित करने की ज़िम्मेदारी है कि वे सुरक्षित, स्वस्थ और शिक्षित बनें। इसलिए इस बारे में कुछ सीमाएँ तो निर्धारित करनी ही होंगी। कुछ आर्थिक और व्यवहारिक दिक्कतें भी हो सकती हैं जिनके कारण हो सकता है कि बच्चों की इच्छाओं पर बंधन लगाने पड़ें। हम बच्चों को ऐसी गलतियाँ नहीं करने दे सकते जिन्हें सुधारा ना जा सके और जिनके कारण उन्हें या दूसरों को कोई खतरा हो जाए। इसलिए शिक्षार्थी-सहभागिता में वयस्कों की भूमिका को कम नहीं आँका जा सकता।

शिक्षार्थी सहभागिता की ज़रूरत क्या है?

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में बच्चों की सहभागिता की ज़रूरत के पक्ष में अनेक कारण गिनाए जा सकते हैं। इसके बारे में एक उदाहरण देखते हैं –

मिथलेश जी अपनी कक्षा में पहुँचे और बच्चों से बोले, ''बच्चों, हम इस कक्षा में रोज़ 5 घंटे बिताते हैं, यानी हफ़्ते में 30 घंटे हम इस कमरे में रहते हैं, जिस जगह हम इतना समय बिताते हैं, वह जगह आपके हिसाब से कैसी होनी चाहिए?''

बच्चों ने बताना शुरू कर दिया– जगह साफ़ होनी चाहिए, सुंदर होनी चाहिए, हवादार, रोशनी से भरपूर आदि-आदि... फिर मिथलेश जी ने उनके उत्तरों के कारण पूछे, बच्चों ने कारण बताए ....

फ़िर मिथलेश जी ने कहा-मेरा भी मन है कि क्लास साफ़ और सुंदर हो ... लेकिन ये काम मैं अकेले तो कर नहीं सकता, मुझे मदद की ज़रूरत है, मेरी मदद कौन-कौन कर सकते हैं?

लगभग पूरी कक्षा के हाथ खड़े हो गए। फिर मिथलेश जी ने बच्चों में से ही कुछ को कहा कि वे हर बच्चे से पूछकर सूची बना लें कि कौन बच्चा कक्षा के लिए क्या करना चाहता है?, फिर उन्होंने बच्चों द्वारा बताए गए कार्यों के आधार पर उनके समूह बना दिए। उनकी कक्षा के बच्चे पहली बार समूह में कार्य नहीं कर रहे थे इसलिए उनको पता था कि समूह में काम करने का अर्थ यह नहीं है कि सिर्फ़ अपने समूह की ही मदद करनी है। प्रत्येक बच्चा ज़रूरत पड़ने पर दूसरे समूह में कार्य कर सकता था या किसी सामान को लाने या किसी कार्य में अपनी सेवाएँ दे सकता था।

इस उदाहरण में हमने देखा कि मिथलेश जी ने बच्चों के सामने एक आवश्यकता को प्रस्तुत किया, बच्चों को यह समझने में मदद की कि जो प्रोजेक्ट वे सामने रखने वाले हैं उनकी ज़रूरत क्यों है, बच्चों की बातों को सम्मान दिया, आदेश देने के बजाय सहयोग माँगा और बच्चों की रुचि और क्षमता के अनुसार उन्हें स्वयं ज़िम्मेदारियाँ ग्रहण करने में सहायता दी। बच्चों ने आपस में मिलकर समस्याओं का समाधान किया, चूँकि वे स्वयं अपनी कक्षा के लिए कार्य कर रहे थे इसलिए कक्षा के प्रति उनके अपनेपन में मज़बूती आ रही थी। मिथलेश जी केवल निरीक्षक नहीं थे, बल्कि वे भी बच्चों

के साथ बराबर कार्य कर रहे थे इसलिए वे और बच्चे एक दूसरे को और बेहतर समझ पा रहे थे। बच्चों को अहसास हो रहा था कि इनके 'सर' को उनकी चिंता है, उनके 'सर' उनसे प्यार करते हैं और उनकी बात सुनते हैं। दृष्टिकोण के इस बदलाव का असर उस समय भी नज़र आने लगा जब वे कॉपी में कुछ काम कर रहे होते या जब मिथलेश जी उन्हें पुस्तक से पढ़ा रहे होते। इसी तरह कार्य करते-करते कुछ महीनों के बाद मिथलेश जी ने अनुभव किया कि उनकी कक्षा के बच्चे अब तब ही छुटी लेते हैं जब कोई बहुत ज़रूरी बात हो। उन्हें स्कूल आना अब अच्छा लगने लगा है।

इस उदाहरण से हमें पता चलता है कि शिक्षार्थी सहभागिता द्वारा –

- बच्चे अपने समुदाय के मूल्यों और समाज में बच्चों के अधिकारों के प्रकाश में, अपनी इच्छाओं और ज़रूरत के बारे में स्वयं और अधिक स्पष्ट हो जाते हैं।
- वो अन्य लोगों की ज़रूरतों पर विचार करना और 'सामाजिक कौशल' हासिल करना सीखते हैं क्योंकि वे मिलकर बहस करते हैं, समस्या का समाधान करते हैं और कार्य करते हैं।
- प्रत्येक बच्चे को देखभाल, सम्मान, गरिमा और आराम का अधिकार है। हर बच्चे की कुछ विशेष विकास संबंधी ज़रूरतें होती हैं। उदाहरण के लिए, प्रत्येक बच्चा चाहता है कि उसकी बात को सुना जाए। जब उसकी

प्रभावी और वास्तविक सहभागिता के लक्षण

परियोजना या कार्य कैसा हो?

- मुद्दा बच्चों के लिए वास्तविक रूप से प्रासंगिक हो।
- कुछ परिवर्तन लाने में सक्षम हो।
- बच्चों के रोज़मर्रा के अनुभवों से सीधे-सीधे संबंधित हो।
- पर्याप्त समय और संसाधन उपलब्ध कराया गया हो।
- बच्चों के अधिकारों को बढ़ावा या संरक्षण देती हो।
- स्पष्ट लक्ष्य हों और बच्चे लक्ष्यों के साथ सहमत हों।

कार्य में निहित कुछ मूल्य –

- ईमानदारी- परियोजना और प्रक्रिया के बारे में 'बड़े' बच्चों के साथ इमानदारी बरतें।
- समावेशी-इच्छुक बच्चों के सभी समूहों की भागीदारी के लिए समान अवसर हों।
- सम्मान- किसी भी उम्र, योग्यता,जाति, सामाजिक पृष्ठभूमि के बच्चों को बराबर सम्मान मिले।
- वास्तविक फ़ैसले लेने और विकल्प चुनने के कौशल में बच्चों को सक्षम बनाने के लिए उनके साथ सूचनाएँ साझा की जाती हों।
- बच्चों के विचारों को गंभीरता से लिया जाता हो।
- बच्चों की भागीदारी स्वैच्छिक प्रकृति की हो।
- निर्णय लेने की प्रक्रिया में बच्चों की भागेदारी हो।

कैसे क्रियान्वित किया जाए?

- उद्देश्य की स्पष्टता हो।
- बच्चे के अनुकूल स्थान, भाषा और संसाधन हों।
- बच्चों की भागीदारी जल्द से जल्द संभव स्तर से हो।
- आवश्यक कौशल प्राप्त करने में मदद करने के लिए बच्चों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया हो।
- भागीदारी के तरीके बच्चों के सहयोग से विकसित किए गए हों।
- जहाँ ज़रूरी हो वहाँ वयस्कों द्वारा सहयोग दिया जाए।

बात पर ध्यान नहीं दिया जाता तो वह उदासीन और निराश हो जाता है। शिक्षार्थी सहभागिता से बच्चों की विकास संबंधी ज़रूरतों को पूरा करने में सहायता मिलती है। विशेष रूप से ज़िम्मेदारी निभाने, सम्मान और पहचान प्राप्त करने संबंधी ज़रूरतों को पूरा करने में सहायता मिलती है जिससे उनके आत्मविश्वास और आत्मसम्मान में वृद्धि होती है। शिक्षार्थी सहभागिता द्वारा उन्हें यह अनुभव होता है कि दूसरे लोगों को उनकी परवाह है। शिक्षार्थी सहभागिता बच्चों को कुछ ऐसा करने के अवसर देती है जो उनकी नज़र में महत्त्वपूर्ण होता है, ना कि उन पर लादा गया होता है।

- चूँकि बच्चे उस प्रक्रिया का हिस्सा होते हैं जिसके द्वारा निर्णय लिए गए हैं इसलिए वे उन फ़ैसलों की सफ़लता के लिए अधिक प्रतिबद्ध होते हैं।
- जब हम बच्चों की सहभागिता को स्वीकार करने लगते हैं तब बच्चे नीतियों और कार्यों को आकार देने में मदद कर सकते हैं, बच्चों से प्राप्त अंतर्दृष्टि, व्यस्कों को अपनी बदलती ज़रूरतों को अधिक प्रभावी ढंग से पूरा करने में मदद कर सकती है, हम क्या अनुभव कर रहे हैं या क्या उम्मीद कर रहे हैं, वह उससे अलग हो सकता है जो बच्चे वास्तव में अनुभव कर रहे हैं क्योंकि उनके अनुभव उनकी रोज़मर्रा की ज़रूरतों और रुचियों पर आधारित होते हैं, इसलिए वे ज़रूरतें बच्चों द्वारा ही अच्छी तरह व्यक्त की जा सकती हैं, उदाहरण के लिए, हो सकता है कि बच्चे कक्षा में डेस्कों के बजाय दरी पर बैठना पसंद करें क्योंकि दरी पर बैठना उन्हें ज़्यादा आरामदायक लगता हो।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में पृष्ठ 16 पर शिक्षार्थी सहभागिता के बारे में लिखा है –
बच्चों की भागीदारी एक बड़े लक्ष्य को पाने का ज़रिया है, यह लक्ष्य है हमारी संस्कृति के समतामूलक, लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्षी और समानता के मूल्यों में नयी जान डालने का..... यह एक ऐसा विचार है जिसे अधिगम प्रक्रिया के हर अंग से जोड़ने की और पाठ्यक्रमों और पाठ्यचर्या के विकास में प्राथमिकता के साथ जोड़े जाने की ज़रूरत है।

- विकलांगता समाज द्वारा निर्मित है- इसे तोड़ें
- शिक्षण के सभी अच्छे व्यवहार समावेशन के व्यवहार हैं।
- साथ मिलकर पढ़ना प्रत्येक बच्चे के लिए लाभदायक है।
- यदि पढ़ाना चाहते हैं तो बच्चों से सीखें, उनकी कमियों को नहीं बल्कि उनकी शक्तियों को पहचानें।
- आपस में आदर भाव, परस्पर-निर्भरता बढ़ाएँ।

- बच्चों की सहभागिता द्वारा हम बच्चों के और निकट आ जाते हैं, बच्चे हमारे साथ अधिक अनौपचारिक हो जाते हैं और हम पर अधिक विश्वास करने लगते हैं, तब वे हमें बिल्कुल सच प्रतिक्रियाएँ देते हैं, ये प्रतिक्रियाएँ 'खुद' के बारे में और 'बचपन क्या होता है?' इस बारे में हमारी धारणा को बदल सकती हैं, आमतौर पर हम अनजाने में

हर बच्चे को एक ही पैमाने से नापने लगते हैं, हम अधिक प्रभावी तरीके से कार्य कर सकेंगे अगर हम बच्चों की विशेषताओं का सामान्यीकरण ना करें, उदाहरण के लिए हमें ऐसा नहीं कहना चाहिए कि 'सभी बच्चों को उछल-कूद करना पसंद है,' शिक्षार्थी सहभागिता हर बच्ची की विशिष्ट बातों को हमारे सामने उजागर कर देती है।

- सहभागिता वाले बच्चे बड़े होकर सक्षम और जागरुक नागरिक बनते हैं, वे सहभागिता के द्वारा लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं और ज़िम्मेदारी को सीखते हैं।
- इससे सीखना-सिखाना मज़ेदार बन जाता है, मिलकर कार्य करने से जो कुछ सीखा जाता है वह स्वैच्छिक और स्थायी होता है।
- इससे विभिन्न पृष्ठभूमि के बच्चों की विभिन्न ज़रूरतें पूरी की जा सकती हैं, साथ ही शिक्षक का कार्य भी आसान और रोचक बन जाता है।

कक्षा में शिक्षार्थी सहभागिता कैसे?

अब तक हम जान चुके हैं कि शिक्षार्थी सहभागिता क्या होती है और इसकी ज़रूरत क्या है, अब हम यह समझने की कोशिश करेंगे कि कक्षा में वास्तविक शिक्षार्थी सहभागिता का विकास करने के लिए हमें किन-किन बातों को ध्यान में रखना होगा।

1. सबसे ज़रूरी यह बात है कि बच्चों को यह समझना चाहिए कि प्रोजेक्ट या प्रक्रिया किस बारे में है, उसका उद्देश्य क्या है और उनमें बच्चों की क्या भूमिका है, उदाहरण के लिए, यदि कक्षा में कुछ बच्चों को यह ज़िम्मेदारी दी जानी है कि वे अपने कुछ साथियों को पढ़ने में मदद करें, तो उन्हें साफ़तौर पर पता होना चाहिए कि उन्हें क्या करना है और क्यों?
2. निर्णय लेने के अधिकारों के वितरण में पारदर्शिता होनी चाहिए, बच्चों पर निर्णय थोपे नहीं जाने चाहिए, यदि समूह में से ही किसी बच्चे को नेता बनाया गया है तो बाकी बच्चों को पता होना चाहिए कि इसका कारण क्या है।
3. बच्चों को किसी भी कार्य में जितना जल्दी हो सके, उतना जल्दी शामिल करना चाहिए, अगर किसी कार्य में बच्चों की सहभागिता प्रारंभ से होती है तो वे उसे बेहतर समझ पाते हैं और बेहतर कार्य कर पाते हैं।
4. सभी बच्चों के साथ उनकी उम्र, स्थिति, लिंग, धर्म, योग्यता या अन्य कारकों की परवाह किए बिना समान रूप से सम्मान का व्यवहार किया जाना चाहिए, यदि बच्चों में किसी भी प्रकार का भेदभाव किया गया तो कार्य से उनका जुड़ाव ख़त्म हो जाएगा, बच्चों में समानता का एक पहलू यह भी है कि सबको साथ लेकर चलने की प्रवृत्ति का विकास किया जाए, कक्षा की हर गतिविधि में हाशिये पर खड़े बच्चों को भी शामिल किया जाना चाहिए।
5. बिना नियमों के किसी कार्य में सफ़लता नहीं मिल सकती, नियम नहीं होंगे तो समूह

के सदस्य अलग-अलग दिशा में जा सकते हैं, इसलिए शुरू में ही बच्चों के साथ मिलकर आधारभूत नियम **(ग्राउंड रूल)** बना लेने चाहिए, उदाहरण के लिए, किसी सामग्री को बनाने के कार्य से जुड़ा नियम यह हो सकता है कि कार्य करने की जगह छोड़ने से पहले उस जगह को सभी सदस्य मिलकर पहले जैसा साफ़ कर देंगे।

6. कार्य में बच्चों की भागीदारी स्वैच्छिक होनी चाहिए, यही सर्वाधिक चुनौतीपूर्ण कार्य है क्योंकि कभी-कभी कक्षा में ऐसी स्थितियाँ भी होती हैं जिनमें बच्चों की बिलकुल रुचि नहीं होती, ऐसे में बच्चों को उस कार्य की ज़रूरत का अहसास करवाना और भी अधिक ज़रूरी है क्योंकि बिना रुचि के तो वे उस कार्य या क्रियाकलाप को कभी भी अपने व्यवहार में नहीं उतार सकेंगे।
7. प्रत्येक बच्चा अपने विचार और अनुभवों को लेकर सम्मान के हकदार हैं, इसलिए कभी भी किसी बच्चे की बात को जानकर उसका तिरस्कार या उपहास नहीं करना चाहिए, अगर ऐसा किया गया तो फिर उस बच्चे का मन कक्षा के क्रियाकलापों से उठ जाएगा और वह आपसे भी दूरी बना लेगा।
8. बच्चों की सहभागिता केवल कार्य करने में ही नहीं, बल्कि कार्य की योजना बनाने में भी होनी चाहिए।
9. कक्षा में बच्चों के प्रति संवेदनशील वातावरण का निर्माण किया जाना चाहिए। कक्षा में बच्चों को अपनेपन और सुरक्षा का अहसास होना चाहिए, कक्षा का वातावरण सहज और हल्का-फुल्का हो, यदि कक्षा में शिक्षक बच्चों के साथ मिलकर हँसते हैं, उन्हें अपने किस्से सुनाते हैं, बच्चों के अनुभव सुनते हैं, बच्चों को अपने नज़दीक आने देते हैं, तो बच्चे ऐसे माहौल में तनावमुक्त होकर अधिक अच्छा कार्य कर पाते हैं।
10. सामग्रियों के निर्माण और योजना में कुछ इस तरह बदलाव लाना चाहिए कि अधिक से अधिक बच्चे मिलकर कार्य कर सकें।
11. बच्चों की क्षमताओं के विकास का प्रयास करना चाहिए, ताकि वे प्रभावी रूप से भागीदारी कर सकें।

शिक्षार्थी सहभागिता कहाँ संभव नहीं है?

क्या आप सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का ऐसा कोई क्षेत्र सोच सकते हैं जहाँ शिक्षार्थी सहभागिता संभव नहीं हो सकती?

सीखने-सिखाने का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जिसमें बच्चों की सहभागिता नहीं हो सकती, तो अब सवाल यह उठता है कि सीखने-सिखाने के क्षेत्र हैं कौन-कौन से जिनमें हम बच्चों की सहभागिता को बढ़ावा देने की कोशिश कर रहे है? ऐसे कुछ क्षेत्र निम्नलिखित हैं –

- सामग्री निर्माण
- कक्षा में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया
- विषयवस्तु का चयन और निर्माण
- कक्षा प्रबंध

- उद्देश्य निर्धारित करना
- गतिविधियों का चयन, व्यवस्था और क्रियान्वयन
- कक्षा पुस्तकालय का प्रबंध
- आकलन
- बाल संगठनों का निर्माण और संचालन
- स्कूल और कक्षा में बदलाव, सुधार और नयापन लाना
- ज़रूरतमंद बच्चों की पहचान और उनकी सहायता करना आदि।

बच्चों की आवाज़ व अनुभवों को कक्षा में अभिव्यक्ति नहीं मिलती। प्रायः केवल शिक्षक का स्वर ही सुनाई देता है। बच्चे केवल अध्यापक के सवालों का जवाब देने के लिए या अध्यापक के शब्दों को दोहराने के लिए ही बोलते हैं। कक्षा में वे शायद ही कभी स्वयं कुछ करके देख पाते हैं। उन्हें पहल करने के अवसर भी नहीं मिलते हैं। किताबी ज्ञान को दोहराने की क्षमता के विकास के बजाए पाठ्यचर्या बच्चों को इतना सक्षम बनाए कि वे अपनी आवाज़ ढूँढ़ सकें, अपनी उत्सुकता का पोषण कर सकें, स्वयं करें, सवाल पूछें, जाँचें-परखें और अपने अनुभवों को स्कूली ज्ञान के साथ जोड़ सकें। इस उद्देश्य से पाठ्यचर्या का पुनर्उन्मुखीकरण हमारी सबसे बड़ी प्राथमिकताओं में से एक होना चाहिए ताकि अध्यापकों के प्रशिक्षण, स्कूलों की वार्षिक योजना, पाठ्यपुस्तकों की रूपरेखा, शैक्षणिक सामग्री व योजनाओं, मूल्यांकन व परीक्षा व्यवस्था में भी बदलाव लाया जा सके।

– राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005

4

प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण का प्रारूप

अशोक कुमार*

प्रस्तावना

किसी कार्य विशेष को कुशलता के साथ करने के लिए ज्ञान, कुशलता, अभिरुचि तथा क्षमताओं में वृद्धि की प्रक्रिया को प्रशिक्षण कहते हैं।

प्रशिक्षण यह सुनिश्चित करता है कि आपका कार्यबल वर्तमान तथा भविष्य दोनों की आवश्यकताओं के अनुसार अपनी कुशलताओं का विकास करता रहेगा। प्रशिक्षण का उद्देश्य शिक्षकों को उनके वर्तमान तथा आगामी कार्यों से परिचित होने हेतु सक्षम बनाता है। इससे नये शिक्षक न्यूनतम समय में अधिक कार्यकुशल बनते हैं। आज जो दिन-प्रतिदिन शिक्षा का व्यावसायीकरण तथा प्रौद्योगिकरण होता जा रहा है, तो इसके कारण भी जो बदलाव आता है, उस बदलाव को समझने के लिए भी शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। इन कार्यों हेतु विशिष्ट कुशलताओं की आवश्यकता होती है, जिन्हें उपयुक्त तथा सर्वश्रेष्ठ रूप से परिचालित कार्य विधियों के द्वारा ही विकसित किया जा सकता है।

* *प्रवक्ता*, डाईट, आर.के. पुरम, नयी दिल्ली

शिक्षक प्रशिक्षण के लाभ

1. **उच्चतर कार्य निष्पादन** – प्रशिक्षण के द्वारा समग्र रूप से विद्यालय तथा शिक्षण दोनों के कार्य की गुणवत्ता बेहतर होती है। ज्ञान, कार्यकुशलता तथा उत्पादकता में भी वृद्धि होती है।
2. **उच्च मनोबल** – इससे शिक्षकों के कार्य संबंधी संतोष तथा मनोबल में वृद्धि होती है तथा सकारात्मक सोच विकसित होती है। शिक्षक अपने कार्य में आत्मनिर्भर हो जाते हैं क्योंकि उन्हें मालूम होता है कि उन्हें क्या करना है? कैसे करना है? इसके कारण वह अपने विद्यालय के प्रति अधिक सहायक सिद्ध होते हैं।
3. **प्रबंधन में सहभागिता** – इससे अधिकारों के प्रत्यायोजन तथा विकेन्द्रीकरण में सहायता मिलती है। प्रशिक्षित शिक्षक नये तथा चुनौतीपूर्ण कार्य स्वीकार करने हेतु तत्पर रहते हैं।

4. **शिक्षकों के अपने कार्य में कुशल बनाना** – प्रशिक्षण से एक शिक्षक, शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी ढंग से चलाने में सफ़ल होता है क्योंकि अब शिक्षक वैयक्तिक भेदों को ध्यान में रखकर ही शिक्षण करता है।
5. शिक्षण में निखार लाने के लिए नयी तकनीकों तथा खेल गतिविधियों से उन्हें सुसज्जित करना।
6. कक्षा नियोजन तथा प्रबंधन में दक्षता हासिल करना।
7. शिक्षण सामग्री चयन, निर्माण व प्रयोग एवं रखरखाव की विस्तृत व व्यावहारिक जानकारी देना।

अच्छे प्रशिक्षण के गुण

1. प्रशिक्षण स्थल का माहौल तनावरहित, सजीव और भयमुक्त हो।
2. प्रतिभागी और प्रशिक्षण सक्रिय हो।
3. प्रशिक्षण कार्य प्रणाली रुचिपूर्ण और आनंदायक हो।
4. प्रशिक्षण में उन गतिविधियों पर बल देना, जिससे प्रतिभागी की विषय पर समझ और कौशल विकसित हो।
5. प्रशिक्षक अपनी विषय वस्तु के प्रतिभागियों की क्षमता और ज़रूरत के अनुसार लचीले ढंग से प्रस्तुत करनी चाहिए।
6. प्रशिक्षक और प्रतिभागी के बीच सहज संप्रेषण हो।

शिक्षक-प्रशिक्षण की आवश्यकता

शिक्षा के आधुनिकीकरण के फलस्वरूप शिक्षा की माँग दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इस आधुनिकीकरण के युग में शिक्षण की नयी-नयी विधियों का प्रयोग किया जा रहा है, जिससे शिक्षण क्रियाओं को और भी प्रभावी बनाया जा सकता है। इस कारण शिक्षकों के प्रशिक्षण की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। प्रशिक्षण के महत्त्व को हम दिन-प्रतिदिन या व्यवहारिक उदाहरण से भी समझ सकते हैं- अकसर देखा जाता है कि एक माँ अपने एक बच्चे की क्रियाओं को लेकर सदैव चिंतित रहती है। जैसे – पढ़ता नहीं है, खेलता ज़्यादा है इत्यादि। वहीं, एक अध्यापक एक कक्षा में 40 विद्यार्थियों की क्रियाओं से परेशान नहीं होता है क्यों?

उपरोक्त दोनों बिंदुओं में अंतर यह है कि शिक्षक अकसर बच्चे को बच्चे की ही तरह देखता है। अर्थात् शिक्षक बच्चे के सभी पहलुओं (जैसे – मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और अनुभव) को देखता है। पर अगर दूसरी तरफ़ देखें तो जब एक माँ बच्चे को देखती है, तो सिर्फ़ एक पहलू से ही देखती है कि सिर्फ़ मेरा ये बच्चा है। वह बच्चे में अन्य सभी पहलुओं को नज़रअंदाज़ करती है। (जैसे, बच्चे की आयु, मनोवैज्ञानिक एवं बच्चे के अनुभव) अर्थात् दोनों ही पहलुओं में अंतर सिर्फ़ प्रशिक्षण का है कि कैसे बच्चे के सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर उसके साथ समायोजन करें। एक शिक्षक को यह प्रशिक्षण दिया गया है और एक माँ को यह प्रशिक्षण नहीं दिया गया है और एक अध्यापक प्रशिक्षण के आधार पर ही बच्चे के साथ अच्छा समायोजन कर लेता है। अतः उपरोक्त उदाहरण के आधार

पर एक शिक्षक को निम्नलिखित बिंदुओं पर प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है कि –

- प्रस्तुतीकरण व शिक्षण कला में निपुणता।
- व्यक्तिगत भिन्नताओं को समझने के लिए।
- अच्छे समायोजन के लिए।
- छात्रों की दैनिक समस्याओं से संबंधित जानकारी के लिए।
- शिक्षकों की कार्यकुशलता को बढ़ाकर, उनकी सोच एवं व्यवहार में मानवीय गुणों का विकास करना।

प्रशिक्षण से पूर्व होने वाली क्रियाएँ

- **प्रशिक्षण स्थल का चयन** – प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत करने से पहले संदर्भ व्यक्ति व प्रशिक्षण समन्वयक को स्थल की जाँच-पड़ताल करनी चाहिए, जिसमें निम्नलिखित बिंदुओं का मुख्य रूप से ध्यान रखना चाहिए।
- प्रशिक्षण स्थल का वातावरण शांत स्वच्छ व सुगम होना चाहिए।
- प्रशिक्षण स्थल की दूरी बहुत ज़्यादा नहीं हो जिससे प्रतिभागियों को आने में परेशानी हो तथा दूरी के साथ-साथ परिवहन की सुविधाओं का भी ध्यान रखना चाहिए।
- खान-पान एवं शौचालय की भी व्यवस्था का ध्यान रखना चाहिए।
- प्रशिक्षण स्थल के पास विद्यालय हो, जहाँ पर प्रशिक्षण कार्य को वास्तविक स्थितियों में संपन्न किया जा सके।
- प्रशिक्षण तकनीक के आधुनिक साधन जैसे प्रोजेक्टर, एल.सी.डी. नक्शे, चार्ट इत्यादि का भी ध्यान रखना चाहिए।
- समय-चक्र का निर्धारण भी परस्पर विचार-विमर्श से किया जाना चाहिए।

प्रशिक्षक की भूमिका

प्रशिक्षण कार्यक्रम को प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत करने में एक प्रशिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है। प्रशिक्षक मॉडयूल कितना ही सशक्त क्यों न हो? जब तक प्रशिक्षणार्थी तक प्रभावशाली ढंग से पहुँचाया नहीं जाएगा, तब तक उसकी महत्ता स्पष्ट नहीं हो पाएगी। इस दृष्टि से प्रशिक्षक मॉडयूल तथा प्रशिक्षणार्थियों के मध्य की मज़बूत कड़ी के रूप में कार्य करता है। अत: प्रशिक्षक का महत्त्व प्रशिक्षण में इस प्रकार होता है जिस प्रकार "एक शरीर में रीड़ की हड्डी होती है" इसलिए एक प्रशिक्षक का चयन बड़ी सावधानी से करना चाहिए।

प्रशिक्षक का चयन – प्रशिक्षक का चयन करते समय निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखना चाहिए अर्थात् प्रशिक्षक के चयन का निम्न आधार होना चाहिए –

- प्रशिक्षक की परिपक्वता
- प्रशिक्षक का अनुभव
- प्रशिक्षक का विषय ज्ञान
- प्रशिक्षक का रुचिकर क्षेत्र

  उपरोक्त बिंदुओं पर विचार के बाद प्रशिक्षक का चयन अच्छा होने की संभावना बढ़ जाती है।
- प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा पहले ही दिन उपलब्ध कराना, जिससे प्रशिक्षण कार्यक्रम में कोई बाधा ना आए।

- प्रशिक्षण के समन्वयक के लिए यह आदर्श बात होगी कि वह अपने (कार्यक्रम) प्रशिक्षण में निम्न बिंदुओं को शामिल करे –
  – विद्यालयों व विश्वविद्यालयों के विशेषज्ञ लोगों को शामिल करना।
  – सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं से लोगों का चयन।
  – सामाजिक कार्यों से जुड़े अनुभवी लोगों को शामिल करना।
  – विभिन्न संस्थाओं के विद्वानों को आमंत्रित किया जाना चाहिए, जिससे ज़्यादा से ज़्यादा लोगों के अनुभवों का प्रतिभागियों को फ़ायदा मिल सके।

प्रशिक्षण के दौरान होने वाली क्रियाएँ

- सबसे पहला और महत्त्वपूर्ण बिंदु यह है कि प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षण समन्वयक को प्रशिक्षक के साथ ही रहना चाहिए।
- प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षक की सहायता करनी चाहिए –

  जैसे –
  – प्रोजेक्टर को चलाना।
  – कापी, पेन, पेपर उपलब्ध कराना।
  – कभी-कभी अनुशासन में सहायता करना।
  – प्रशिक्षक व प्रशिक्षणार्थियों के बीच मधुर संबंध बनाने में सहयोग करना।
  – प्रशिक्षणार्थियों की कुछ व्यक्तिगत समस्याओं को सुनना व उनका निदान करना।
  – प्रतिभागियों से पंजीकृत फॉर्म भरवाना।
  – प्रशिक्षण समन्वयक को 'समय सीमा' का पूरा ध्यान रखना और खान-पान का प्रबंध कराने में पूरा सहयोग करना।
  – प्रशिक्षक द्वारा दी गई उद्गम सामग्री को प्रतिभागियों में वितरित करना व सभी को उपलब्ध कराना।
  – प्रशिक्षण के दौरान उन प्रशिक्षणार्थियों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए, जो पिछड़ रहे हैं।
  – प्रशिक्षण में participatary learning approach पर अधिक ध्यान देना, जिससे प्रतिभागियों की भागीदारी बढ़े व वह भली प्रकार सीख सकें।

प्रशिक्षण के उपरांत होने वाली क्रियाएँ

- अंतिम दिन प्रतिभागियों के खेल के रूप में क्रियाओं का संचालन करना।
- प्रमाण-पत्र वितरण की सुनिश्चित व्यवस्था करना।
- प्रशिक्षकों की प्रतिक्रियाओं पर पूर्ण ध्यान देना, जिससे अगली बार उन बिंदुओं को ध्यान में रखकर ही प्रशिक्षण सामग्री को बनाया जाए।
- प्रशिक्षण के अंतिम दिवस प्रतिभागियों के वित्तीय रिकार्ड तैयार करना व प्रतिभागियों के हस्ताक्षर लेना।

प्रशिक्षकों की समस्याएँ/बाधाएँ

- प्रतिभागी समूह का आपस में ताल-मेल कई बार गड़बड़ा जाता है। कोई एक प्रतिभागी हावी हो जाता है, शेष प्रशिक्षक कम सक्रिय

या लगभग निष्क्रय हो जाते हैं।

- कई बार प्रशिक्षक व प्रतिभागी के संबंध में ठीक ताल-मेल नहीं हो पाता है।
- बेवजह उलझाने वाले प्रतिभागी चर्चा से भटका देते हैं।
- महिला प्रतिभागियों के समूह अलग बन जाते हैं।
- कभी-कभी नई गतिविधियों के निर्माण में भी प्रशिक्षकों को कठिनाई होती है।
- प्रशिक्षण स्थल पर उचित सुविधाओं का ना होना भी प्रशिक्षकों की एक बड़ी समस्या है। इस कमी से प्रतिभागी प्रभावित होते हैं।

प्रशिक्षकों के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

- दो सत्रों के मध्य संबंध बना होना चाहिए, जिससे यह न लगे कि दोनों विषय एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न हैं अर्थात् पहले सत्र को दूसरे के साथ जोड़ेंगे तब प्रतिभागी का प्रशिक्षण के प्रति सक्रिय रूप से जुड़ने का भाव उत्पन्न होगा।
- सत्र का आरंभ भाषण या लंबी भूमिका के बजाय किसी रोचक घटना से किया जाना अधिक बेहतर है।
- आप कोई महत्त्वपूर्ण चर्चा कर रहे हों और चर्चा अपनी चरम सीमा पर है। ऐसे में किसी अधिकारी/निरीक्षक के आ जाने पर चर्चा को बीच में रोककर/जल्दी खत्म करवाकर उनके स्वागत की औपचारिकता ज़रूरी नहीं है।
- यह सत्य है कि प्रशिक्षक के पास प्रतिभागी के प्रत्येक सवाल का जवाब नहीं होता है। यदि आपको लगता है उस सवाल का जवाब आपका साथी अच्छे से दे सकता है, तो बेहिचक उसे उत्तर के लिए आमंत्रित करें।

सुझाव

- शिक्षक-प्रशिक्षण से पूर्व प्रशिक्षकों को भी आवश्यक पहलुओं/बिंदुओं का पता लगाना चाहिए जिससे प्रशिक्षण कार्यक्रम को सुचारू रूप से चलाया जा सके।
- प्रशिक्षण के दौरान सिर्फ़ मुख्य पहलुओं पर ही चर्चा होनी चाहिए जो प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाऐं आयी थीं।
- शिक्षकों की प्रतिक्रियाओं को नज़रअंदाज़ नहीं किया जाना चाहिए। इससे समय, श्रम और धन का अपव्यय होने से बच जाता है।
- प्रशिक्षक द्वारा प्रस्तुत विषय-वस्तु प्रभावी होनी चाहिए।
- समय-समय पर प्रशिक्षण आवश्यकता का विश्लेषण करना चाहिए।
- प्रशिक्षण सामग्री तैयार करते समय प्रत्येक क्रिया को एक-दूसरे के साथ जोड़ा जाना चाहिए।
- समय-समय पर स्कूल के प्रधानाचार्य/उच्च अधिकारियों द्वारा प्रशिक्षण स्थल का अवलोकन करना चाहिए जिससे अनुशासन बना रहने में सहयोग मिलता है।
- प्रशिक्षकों को, प्रतिभागियों के स्तर व रुचि का पूरा ध्यान रखना चाहिए।
- प्रशिक्षण के दौरान कभी भी एक-दूसरे

प्रतिभागी की तुलना नहीं करनी चाहिए। प्रत्येक प्रतिभागी अपनी प्रकृति व स्वभाव में अलग होता है। अत: उन्हें एक ही पैमाने पर न आकें।

- प्रतिभागियों को अपनी बात रखने का भरपूर समय देना चाहिए।
- कुछ प्रश्नों के जवाब अगर विशेष वर्ग के हैं तो उनके उत्तर अलग से प्रतिभागी को समय रहते देने चाहिए।
- प्रतिभागियों को विश्वास में लें तथा उनसे उनकी हर छोटी-बड़ी बातों पर खुलकर चर्चा करें।
- प्रतिभागियों को विषय के चयन की पूरी आज़ादी होनी चाहिए। जिसमें वह अपनी रुचि एवं अभिक्षमता के अनुसार प्रतिभागी बन सके।
- प्रतिभागी अगर आशानुरूप प्रदर्शन नहीं कर पा रहे हैं, तो उन्हें डाँटने की ज़रूरत नहीं है बल्कि उनके कारणों को जानने का प्रयास करें।

प्रशिक्षण की गुणवत्ता का एक बड़ा मानक है शिक्षक के लिए उसकी प्रासंगिकता। लेकिन इस तरह के ज़्यादातर कार्यक्रम वास्तविक ज़रूरत को ध्यान में रखकर नहीं बनाए जाते। अधिकांश कार्यक्रमों में भाषण-आधारित अभिगम अपनाया जाता है, जिसमें प्रशिक्षुओं को भागीदारी करने का मौका नहीं मिलता। विडंबना यह है कि, गतिविधि-आधारित शिक्षा, बड़ी कक्षाओं का प्रबंधन, बहुस्तरीय/श्रेणीय शिक्षा, और सामूहिक शिक्षण जैसे विषय जिन्हें करके दिखाने की ज़रूरत है, उन्हें भी भाषणों द्वारा पढ़ाया जाता है। स्कूल अनुवर्तन (फॉलोअप) की शुरुआत भी नहीं हो सकी है और संकुल स्तर की बैठकें ऐसे पेशेवर मंचों के रूप में विकसित नहीं हो सकी हैं जहाँ शिक्षक साथ बैठें, चिंतन करें और एक साथ योजना बनाएँ।

– राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005

5

बच्चों में नेतृत्व क्षमता और जवाबदेही

*यशस्वी द्विवेदी**

मैं पिछले कुछ समय से इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर अहमदाबाद के महात्मा गाँधी आश्रम विद्यालय में जा रही हूँ। स्कूल में बच्चे विविध क्रियाकलापों में ज़्यादा-से-ज़्यादा भागीदारी कर सकें और आपस में एक-दूसरे से सीख सकें। यह हमेशा से ही मेरी रुचि एवं उत्साह का विषय रहा है। मैंने स्कूल में एक प्रोजेक्ट की शुरुआत की जिसका विषय था –'बच्चे अपनी प्रार्थना-सभा का प्रारूप स्वयं निर्धारित करें'। प्रधानाचार्या ने जब मेरे विचारों से सहमति जताई तो मैं कक्षा छठवीं, सातवीं और आठवीं के बच्चों के साथ काम में जुट गई। बाल-मनोविज्ञान की गहराई में न जाते हुए, जल्द ही मुझे इस बात का अहसास हुआ कि इन कक्षाओं में प्रमुख रूप से चार-पाँच किस्म के बच्चे नज़र आते हैं। मैं इन्हें अपनी ओर से सुविधा के लिए कुछ नाम देती चलती हूँ। जैसे –

1. उत्साहित बच्चे – जो विविध गतिविधियों में खुद से आगे आते हैं।
2. शर्मीले बच्चे – जो काफ़ी प्रयास के बाद भी सामने आने को तैयार नहीं हुए।
3. शर्मीले किंतु भागीदारी के इच्छुक बच्चे – जो शर्मीले थे मगर उनसे बातचीत करने, उनकी रुचिनुसार कार्य होने, दूसरे बच्चों द्वारा उत्साहित करने व उन्हें अवसर देने की वजह से सामने आए।
4. उत्साहित किंतु भागीदारी के बाद हतोत्साहित बच्चे- जो उत्साह से आगे आते हैं लेकिन सबके सामने उनकी छोटी-सी भी गलती बताए जाने के बाद खुद को आगे लाने में कतराने लगते हैं।
5. कुछ ऐसे बच्चे जो विविध गतिविधियों में काफ़ी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं और अपना स्थान किसी अन्य बच्चे को देना ही नहीं चाहते।

अब मैं बच्चों के साथ अपने कुछ अनुभव आपसे साझा करना चाहूँगी।

प्रार्थना-सभा की तैयारी

प्रार्थना-सभा की शुरुआत कक्षा-8 से हुई जिसमें अजय, उर्वशी (एंकरिंग), शैलेश, किरण (योग) खुद से आगे आए। हमने कक्षा में एक बड़े गोले

* एकलव्य द्वारा प्रकाशित *शैक्षणिक संदर्भ* (जनवरी-फरवरी 2013) से साभार

में बैठकर बातचीत की। इन बच्चों ने प्रारंभ से अंत तक खुद ही ज़िम्मेदारी ली।

हिम्मत, कोमल और कुछ अन्य बच्चों से बातचीत की गई। हिम्मत ने काफ़ी देर बाद बताया कि उसकी रुचि डायलॉग में है, परंतु वह कार्यक्रम में हिस्सा लेने के बारे में अंत तक हाँ-ना करता रहा। वहीं कुछ अन्य बच्चे बात करने के लिए भी सामने नहीं आ रहे थे।

रवि, ध्वनि, आशा, अनीता भी काफ़ी शरमा रहे थे, किंतु बातचीत करने और प्रोत्साहित करने पर उन्होंने अपनी रुचि ब्रेक-डांस, गीत, अभिनय-गीत में ज़ाहिर की और खुद से प्रैक्टिस भी करने लगे। ये ऐसे बच्चे थे, जिन्होंने अब तक प्रार्थना-सभा में कभी भी हिस्सा नहीं लिया था।

इस बातचीत से मुझे समझ आ रहा था कि बच्चों को अवसर देने की शुरुआत उनकी रुचि को ध्यान में रखकर की जाए तो बच्चों का स्वयं में विश्वास बढ़ने लगता है और बच्चे थोड़ा समग्रता से सोचने लगते हैं। यहाँ मैं रवि के बारे में बताना चाहूँगी।

रवि को ब्रेक-डांस करना बहुत अच्छा लगता है (बातचीत के दौरान मालूम हुआ कि वो घंटों टीवी के सामने खड़े होकर डांस सीखता है)। रवि ने सब बच्चों के साथ मिलकर अगले दिन होने वाली सभा के कार्यक्रम की रूपरेखा तय की। शुरुआत ब्रेक-डांस से होना निश्चित हुआ था। रवि डांस की बारी की तलाश में कभी अपने कक्षा शिक्षक तो कभी दूसरे शिक्षकों से पूछताछ कर रहा था कि क्या किसी के मोबाइल पर ऐसा कोई गीत है। यह पूछताछ भी आगे आकर ज़िम्मेवारी उठाने का संकेत थी, क्योंकि जो बच्चा सिर्फ़ अपने काम तक सीमित था, वो आज अलग-अलग लोगों से खुद बात कर रहा था। रवि स्कूल की छुट्टी के बाद तक प्रैक्टिस कर रहा था। साथ ही वो कक्षा छह और सात के बच्चों की भी मदद कर रहा था, चाहे वो 'देशभक्ति गाना' हो या फिर 'नानी ढिंगली सोहाय, लटका-मटका करती जाए' वाला अभिनय-गीत क्यों न हो।

इसी तरह आशा अभिनय-गीत करना चाहती थी मगर अकेले नहीं उसे कोई जोड़ीदार चाहिए था, दूसरा उलझाव यह था कि जो अभिनय-गीत आशा को आता था उसकी प्रस्तुति पहले भी कई बार हो चुकी थी। बच्चे प्रार्थना सभा में नयी प्रस्तुतियाँ देना चाहते थे। एक ओर इस पुराने गीत पर कक्षा का कोई बच्चा आशा का साथ देने के लिए तैयार नहीं हो रहा था, वहीं आशा अडिग थी कि अगर अभिनय करेगी तो इसी गीत पर और वो भी किसी के साथ। आखिरकार आशा ने ही इसका विकल्प खोजा और सातवीं कक्षा की अनीता के साथ प्रैक्टिस करने लगी। इसी तरह बच्चों ने काफ़ी प्रयास के बाद कार्यक्रम की रूप-रेखा तय कर ली।

प्रस्तुतियाँ और कुछ सवाल

जब बच्चों ने खुद से आयोजित की गई प्रार्थना-सभा में कार्यक्रम प्रस्तुत किए तो यह हर शिक्षक के लिए आश्चर्यपूर्ण नज़ारा था क्योंकि पहले कभी ये सोचा ही नहीं गया था कि प्रार्थना-सभा में बच्चे ऐसा कुछ भी कर सकते हैं।

जो बच्चे अकसर मंच पर दिखाई देते थे, उनके अलावा कुछ और बच्चों के आगे आने और उनकी प्रस्तुति को लेकर मैं शिक्षकों के चेहरों पर सवालिया निशान देख पा रही थी, क्योंकि ये वे बच्चे थे जो कुछ करना चाहते थे मगर इन्हें खुद को आज़माने का मौका कभी नहीं मिला था।

ज़ाहिर-सी बात है कि इन बच्चों ने जब अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया तो कुछ कमियाँ रह गई थीं, जो पहली बार करने की वजह से जायज़ थीं। लेकिन किसी प्रस्तुति में कमी रिहर्सल पर्याप्त न होने के चलते रही हो, ऐसा भी नहीं था। कुछ एक में तकनीकी कारण भी थे। अगले एक-दो उदाहरणों से हम इसे समझ सकते हैं।

पहली बार एंकरिंग करते हुए शनि थोड़ा घबराया हुआ था। बच्चों को स्टेज पर बुलाने पर बच्चों का देर से आना उसे गुस्सा दिला रहा था। इसी तरह पहली बार प्रस्तुति दे रहे मेहुल का ब्रेक-डांस शुरू होने से ठीक पहले मोबाइल फ़ोन बंद हो जाने की वजह से उसने तुरंत बिना रिहर्सल दूसरे गाने पर डांस किया और बीच में अपने डांस से असंतुष्ट होकर मंच छोड़ दिया।

इस प्रार्थना सभा के बाद ज़्यादातर शिक्षकों ने अपनी कक्षाओं में बच्चों की प्रस्तुतियों में रही कमी-बेशियों को सुधारने की नियत से कक्षा में बच्चों से बातचीत की। इसी तरह प्रस्तुतियों को लेकर साथियों द्वारा मज़ाक उड़ाए जाने के वाकिए भी सामने आए। इन सबका मिलाजुला असर यह हुआ कि कुछ बच्चे इतने ज़्यादा उदास और हतोत्साहित हुए कि उन्होंने ठान लिया कि वे आगे से किसी कार्यक्रम में हिस्सा नहीं लेंगे। इस सबकी वजह से हमारे लिए ज़रूरी हो गया कि बच्चों से बातचीत करके मसले का हल निकाला जाए। जब बच्चों से बात हुई तो कई सारी बातें अनकहे सवालों के रूप में सामने आईं। सबके सामने गलतियों का अहसास करवाना बच्चों को ठीक नहीं लग रहा था। प्रधानाचार्या ने खुद उन बच्चों से व्यक्तिगत तौर पर बातचीत की, जो काफ़ी सहायक साबित हुई।

बच्चों में नेतृत्व क्षमता और जवाबदेही

तीन अलग-अलग कक्षाओं और शिक्षकों के साथ काम करने से कुछ बातें सामने आ रही थीं जिसमें 'तीनों शिक्षकों का उत्साह' प्रमुख था। इस उत्साह में अंतर की वजह शिक्षकों के नज़रिए से जुड़ी थी, जिसमें इस तरह से समझा जा सकता है –

(क) शिक्षक का इस कार्यक्रम के उद्देश्य को समझकर, इस प्रक्रिया का हिस्सा बनना। इस नज़रिए से जुड़े शिक्षक, शर्म की वजह से हिस्सा न के बराबर लेने वाले बच्चों को उत्साहित करने और अन्य विकल्पों को सोचने का अवसर प्रदान कर पा रहे थे, जिससे बच्चे पूरी स्वतंत्रता और रुचि से आगे आ रहे थे। ऐसे शिक्षक प्रार्थना-सभा खत्म होने के बाद सारे बच्चों के साथ उनके प्रदर्शन पर कि क्या अच्छा हुआ और इसे कैसे और अच्छा किया जा सकता था आदि पर बातचीत करते थे जिससे बच्चों का उत्साह एवं खुद पर विश्वास बढ़ने लगता है।

(ख) कुछेक शिक्षक उत्साह से भरे थे, मगर

उद्देश्य समझे बिना प्रक्रिया में भागीदारी करना सिर्फ़ एक्टिविटी तक ही सीमित रह गया। इनसे भी सारे बच्चों की ऊर्जा को आगे लाने की कोशिश अपेक्षित थी। इन शिक्षकों द्वारा बच्चों को तो प्रेरित किया जा रहा था, लेकिन अभी भी वही बच्चे आगे आते दिखाई दे रहे थे जो हमेशा आगे दिखाई देते थे।

बच्चे जब स्कूल में स्वयं से इतनी सारी चीज़ें कर रहे थे तो पूरा वातावरण काफ़ी सृजक, उत्सुकता भरा एवं खुद की रुचि को जानने-जगाने वाला बन गया था। ऐसा अकसर जहाँ प्रयोग के लिए बच्चों से लेकर हर कोई तैयार था। बच्चे सुबह-सुबह जल्दी स्कूल आते थे, आकर अपने समूह के बच्चों को इकट्ठा करना, दरी बिछाना, माइक लगाना, सारे बच्चों को प्रार्थना के लिए प्लान के मुताबिक बैठाना आदि में जुट जाते थे। यह सब शिक्षकों और प्रधानाचार्या के कौतूहल को बढ़ाने वाला था। एक और रोचक बात थी कि कक्षा-शिक्षक भी अपनी कक्षा के बच्चों के साथ पूरा साथ निभा रहे थे, जिससे बच्चों का उत्साह बढ़ रहा था। एक मौके पर कक्षा सात की शिक्षिका अपने बच्चों के साथ शुरू से अंत तक मंच पर थी और बाद में वो भी बच्चों के साथ डांस में शामिल हो गई। इसी तरह आठवीं के बच्चे सातवीं के बच्चों को सपोर्ट करने के लिए खुद आगे आ रहे थे।

तीनों कक्षाओं के साथ काम करते हुए मेरा सामना कुछ चुभते सवालों से होता रहा है। इनमें से कुछ मैं विचारार्थ रख रही हूँ।

(क) हमेशा 'अच्छे' बच्चे ही क्यों चयनित हों?

अकसर ऐसे सब कार्यक्रमों के लिए पहले भी चयनित किए जा चुके बच्चों को ही चुना जाता है। शायद इसके पीछे यही सोच है कि जो बच्चे काफ़ी समय से अच्छा करते आ रहे हैं, वही बच्चे आगे भी अच्छा कर पाएँगे। मगर इसका दूसरे बच्चों पर क्या प्रभाव पड़ता है, उसका एक उदाहरण प्रस्तुत है।

हुआ कुछ यूँ कि छठी कक्षा में जब कुछ शर्मीले बच्चे एंकरिंग के लिए सामने आए तो टीचर ने उन्हें यह कहकर बैठा दिया कि रितु ही एंकरिंग करेगी क्योंकि वो स्पष्ट, तेज़ और अच्छा बोलती है। यह सुनकर 2-3 बच्चे वापस बैठ गए मगर एक बच्ची बार-बार दबी आवाज़ में बोल रही थी कि वो एंकरिंग करेगी। लेकिन हर बार टीचर के द्वारा एक ही बात दोहराने पर वो कुछ पूछ बैठी, ''टीचर क्या हम अच्छा नहीं बोलते?''

यह सुनकर कुछ देर चुप रहकर टीचर बोली, ''सब अच्छा बोलते हो। चलो प्रैक्टिस करके बताओ।'' बच्ची ने पहला शब्द बोलना शुरू ही किया था कि टीचर ने बहुत ही अजीब तरीके से उसे सुधारने को कहा। टीचर का रवैया देखकर उस लड़की ने दूसरी लड़की को कॉपी थमा कर कहा, ''तुम करो, मैं नहीं कर सकती।'' मुझे लगता है कि शिक्षक के द्वारा विश्वास दिखाए जाने मात्र से ही अब तक मौका न पा सके बच्चे भी बेहतर कर सकते हैं।

(ख) कुछ बच्चों के लिए कुछ लेबल चस्पा कर दिए जाते हैं। इसका आधार क्या है और इस पर कैसे विचार किया जा सकता है?

अकसर स्कूल में जब बच्चों को आवारा, शैतान, शांत, घुमंतू, नासमझ आदि नामों से हमेशा के लिए नत्थी कर दिया जाता है तो शिक्षक के साथ-साथ बच्चा भी स्वयं को उसी संज्ञा से पहचानने लगता है। लेकिन कोई भी लेबल चिपकाने से पहले उस बच्चे, उस इंसान के बारे में जानने की कोशिश की जाए, क्या यह ज़रूरी नहीं लगता?

जैसे प्रधानाचार्य ने बताया कि उनकी निगाह में रवि बहुत ही शर्मीला, सिर्फ़ खुद तक ही सीमित रहने वाला लड़का था। मगर उसकी प्रस्तुति के बाद पता चला कि रवि के अंदर क्या-क्या गुण हैं, वो खुद से इतना आगे आकर अन्य बच्चों को सपोर्ट कर सकता है।

(ग) बच्चे शर्माते क्यूँ हैं?

बच्चों के संदर्भ में कई बार ये बातें आईं चाहे वो उनकी भागीदारी को लेकर हो, लड़का-लड़की साथ में बैठने की, या साथ में कुछ करने की ही बात क्यूँ न हो। बच्चे शर्माते हैं। हमारी बच्चों-शिक्षकों से हुई बातचीत में यह बात भी उभरकर आई कि जब हम एक ही कक्षा में एक ही टीचर के साथ पढ़ते हैं, घर पर अपने आसपास के लड़के-लड़कियों के साथ खेलते हैं तब तो नहीं शर्माते, तो स्कूल में क्यूँ शर्माते हैं? अभी भी मैं इस पहलू को गंभीरता से समझना चाहती हूँ।

(घ) हमेशा प्रतियोगिता के रूप में ही प्रशंसा क्यों ज़रूरी है?

अकसर शिक्षकों और बच्चों की तरफ़ से ज़्यादा तारीफ़ उसी बच्चे की होती थी जो सबसे अच्छा करता था। इस वजह से दूसरे बच्चे पर क्या असर हो रहा है, हम इसका ध्यान बिल्कुल भी नहीं रखते।

चुनौतियों के साथ बढ़ते कदम

रास्ते में आने वाली चुनौतियों ने ही मेरा हौसला बढ़ाया, जैसे कि शुरुआती दिन की प्रार्थना-सभा को मैं कभी नहीं भूल सकती। जब 40 मिनट की सभा बड़ी मुश्किल से सिर्फ़ 15 मिनट में रूखे-सूखे तरीके से खत्म हो गई थी।

कभी-कभी लगता था कि कहीं यह सब महज़ खानापूर्ति बन कर न रह जाए। प्रार्थना-सभा के व्यवस्थागत और वैयक्तिक मुद्दे भी कुछ कम नहीं हैं। प्रतिभागियों का स्कूल नहीं आना या फ़िर देर से आना, तो कभी पहले से तैयार किए गए बच्चों की जगह दूसरे बच्चों का आकर वो काम करने लगना, ऐन मौके पर बच्चों का कहना कि जो उन्हें बोलना है वो तैयार ही नहीं हो पाया है अब क्या करें और जब कुछ बच्चे नहीं आए तो दूसरे बच्चों का कहना कि सब कैंसिल कर दीजिए, कुछ नहीं होगा। मगर इन सबके बावजूद बहुत कुछ हो पाया, जब बच्चों ने अपनी ज़िम्मेदारियाँ समझनी शुरू कर दीं।

कैसी लगी प्रार्थना सभा?

बच्चों ने प्रार्थना-सभा के अंत में सभा कैसी लगी, यह जानने के लिए कुछ नायाब तरीके खोज निकाले। इसके लिए बच्चों ने छुक-छुक ट्रेन का विचार रखा जो सबके पास जाएगी और 'सभा कैसी लगी' यह पूछने के बाद उन्हें अपनी ट्रेन में शामिल कर के आगे बढ़ जाएगी-दूसरों से पूछने के लिए। सातवीं के बच्चों ने भी एक अनोखा तरीका अपनाया। वे अलग-अलग पंछियों की आवाज़ तीन बार निकालकर सबसे प्रार्थना सभा के बारे में पूछेंगे।

बच्चों ने खुद से स्कूल के सभी बच्चों को प्रार्थना-सभा में कैसे बैठना है, इसके बारे में भी मिलकर काफ़ी तार्किक रूप से सोचा, जैसे छोटे बच्चे कहाँ, बड़ी कक्षा कहाँ बैठेगी आदि। जब योग करवाते समय बाकी बच्चों को शामिल नहीं कर पा रहे थे, तो व्यवस्था बनाने वाले बच्चों का तर्क था कि यदि अन्य बच्चों को शामिल होने को कहा जाता तो उन्हें चोट भी लग सकती थी, वो गिर भी सकते थे। यह देख-सुनकर बच्चे खुद से सोच सकते हैं, इस पर मेरा भरोसा और बढ़ा।

जब बच्चों से बात की गई कि उन्हें कैसा और क्या लगा तो उन्होंने बहुत सारी बातें बतलाईं- जैसे कि उनका भय, हिचक काफ़ी कम हो गई है, अब वे कहीं भी सबके सामने खड़े होकर बोल सकते हैं, जब उनको मन-पसंद काम करने का मौका मिला तो वो अपनी प्रतिभा को समझ पाए और उन्हें अपने दोस्तों के बारे में भी पता चला कि सबको क्या-क्या आता है। उन्होंने एक-दूसरे की काफ़ी प्रशंसा भी की। जो बच्चे किन्हीं वजहों से हतोत्साहित हो गए थे, दोबारा उनका आगे आना मेरे लिए एक सुखद अनुभूति देने वाला था।

बच्चों की शुरुआती साक्षरता – कुछ अनुभव

*कमलेश चंद्र जोशी**

हमारी स्कूली व्यवस्था बच्चों के पढ़ना-लिखना सीखने को अलग ही संदर्भ में देखती है। वह सोचती है कि ये पहली पीढ़ी के बच्चे हैं, ये पढ़ना कैसे सीखेंगे। इनके घर में तो किसी ने पढ़ाई ही नहीं की, ये क्या पढ़ेंगे। पढ़ने की विधियों व कक्षा में पाठ्येतर पुस्तकों के उपयोग के बारे में बात करें तो तर्क होता है कि हमने भी इन्हीं विधियों से सीखा है और दूसरा तर्क यह दिया जाता है कि पहले वे पाठ्यपुस्तकें तो पढ़ पाएँ तब तो वे अन्य किताबों को पढ़ पाएँगे। परंतु इस बात पर विचार नहीं किया जाता कि पहले कितने बच्चे पाँचवी-आठवीं के बाद स्कूल छोड़ देते थे और कितने कम बच्चे-बच्चियाँ ही ग्रेजुऐशन स्तर तक पहुँच पाते थे। वे कौन-से बच्चे थे जो स्कूल से बाहर हो जाते थे? आज भी बच्चों के सामाजिक व आर्थिक संदर्भों से किनारा ही किया जाता है और उनके न सीख पाने का दोषी उनके माता-पिता व उनके घर के वातावरण को मान लिया जाता है। लेकिन यह प्रयास कम ही किया जाता है कि उनके घर के अनुभवों को कक्षा का हिस्सा बनाया जाए। अगर इन बातों पर ठीक से विचार किया जाए तो कक्षा का वातावरण भी सहज बन सकता है। बच्चों के पढ़ना सीखने के संदर्भ में हमें यह भी समझना ज़रूरी है कि जब छह साल का बच्चा स्कूल आता है तो वह मौखिक भाषा का भरा-पूरा समृद्ध अनुभव, हज़ारों शब्दों की शब्दावली लेकर आता है। ये सब चीज़ें वह घर के परिवेश तथा बातचीत से स्वयं ही सीख जाता है। सवाल यह उभरता है कि परिवेश से इतना कुछ सीखने के बाद भी बच्चे स्कूल में पढ़ना-लिखना क्यों नहीं सीख पाते। इसके अंतर्गत कुछ बातें समझ में आती हैं। पहली बात तो यह है कि कक्षा में उनको पढ़ने-लिखने का समृद्ध माहौल नहीं मिल पाता और सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियाँ कठिन होने की वजह से अकसर घर का माहौल भी पढ़ने-लिखने के लिए अनुकूल नहीं होता। स्कूल में भाषा की पढ़ाई पाठ्यपुस्तक केंद्रित रहती है और उसमें सिर्फ़ भाषा के यांत्रिक कौशलों पर

* एकलव्य द्वारा प्रकाशित *शैक्षणिक संदर्भ* (जनवरी-फरवरी 2013) से साभार

ही ध्यान दिया जाता है। इस कारण बच्चों का समझ के साथ पढ़ना पीछे ही छूटता जाता है। इसके अलावा यह बात भी गौरतलब है कि हमारे स्कूलों में बच्चे अलग-अलग बहुभाषिक क्षेत्रों से आते हैं पर उनकी बोली-भाषा का उपयोग स्कूल में नहीं के बराबर ही होता है। ऐसा हम जनजातीय व गरीब शहरी क्षेत्रों में आसानी-से देख सकते हैं जहाँ बच्चों के घर का सांस्कृतिक माहौल दूसरा है, भाषा फ़र्क है जबकि कक्षा में अधिकतर मानक भाषा ही इस्तेमाल की जाती है। वे अन्य विषयों के साथ-साथ कक्षा में इस मानक भाषा को सीखने का प्रयास भी कर रहे होते हैं, जिनका असर उनके पढ़ने-लिखने पर पड़ता है। इस संदर्भ में बच्चों का सांस्कृतिक परिवेश और उनकी साक्षरता की जड़ें किस तरह कक्षा की प्रक्रियाओं का हिस्सा बनें, इस पर स्कूलों में काम करने की ज़रूरत है।

मेरा एक प्रयास

अनुष्का साढ़े पाँच साल की है। जब वह तीन साल की थी तब से हमने उसे कविताएँ-कहानियाँ सुनाना, चित्रों वाली पुस्तकें दिखाना शुरू कर दिया था और वो उसमें रुचि भी लेने लगी। एस्ट्रिड लिंडग्रेन की चित्रात्मक किताब 'पिप्पी के लंबे मोज़े' पर बात करते हुए उसने पूछा था, ''पिप्पी इतने बड़े घोड़े को उठा लेती है?'' वह पिप्पी के दोस्तों अन्निका और टॉमी को भी अच्छी तरह जानती है। पूँछ से लटके बंदर श्री नीलसन को देखकर वह खुश होती है। किताबों के चित्रों को ध्यान से देखती है और सादे चित्रों को क्रेयान से रंगती है। वह कजरी गाय व कौए को जानती है और वह 'बिल्ली के बच्चे', 'मेंढक व साँप', गाँव का बच्चा', 'पाँच दोस्त', 'दोस्त व दुश्मन', 'रूपा हाथी', 'आम की कहानी', पिप्पी पहुँची पार्क में', 'चूहे को मिली पेंसिल', 'मैं भी', मेंढक का नाश्ता', 'छुटकी उल्ली' व 'लालू पीलू' की कहानियों को भी जानती है। वो अपने मन से कहानियाँ भी सुनाती है जिसे कभी-कभी मैं एक कॉपी में लिख लेता हूँ। उसके द्वारा सुनाई गई दो कहानियाँ प्रस्तुत हैं-

एक था बुड्ढा। वह अपने घर जा रहा था। उसकी टाँग में चोट लग गई। तब उसे हॉस्पिटल में एडमिट कराया गया। उनके भतीजों ने पैसे दिए। फिर वह ठीक हो गया।

***

हरी-हरी घास थी। हवा चल रही थी। धूप आ रही थी। एक राजा का महल है। उनका एक बेटा है। वह खेलने गया सुबह-सुबह। वह अपनी पतंग लेकर गया। वह खेलने लगा। एक दिन उसकी पतंग कट गई। दूसरी पतंग ने उसकी पतंग काट दी। फिर वो बच्चा रोने लगा। वह अपने पापा के पास गया। मम्मी खाना बना रही थी। पापा ने कहा, ''तुम जाओ मैं आता हूँ।'' पापा ने कहा, ''मेरे बच्चे की पतंग क्यों काट दी?''

इस तरह से वह तरह-तरह की कहानियाँ बुनती और सुनाती है। कभी-कभी वह चित्र भी

बनाती है। इन कहानियों व चित्रों में उसे सुनाई या पढ़ाई गई चीज़ों की झलक कहीं-न-कहीं मिल ही जाती है।

मुझे अच्छी तरह याद है कि अनुष्का ने एक दिन बातचीत करते समय मुझसे पूछा था, ''कहानी कौन लिखता है?'' मैंने जवाब दिया, ''कहानी हमारे जैसे ही लोग लिखते हैं, बच्चे भी लिखते हैं। जैसे बच्चे चित्र बनाते हैं, जिन्हें तुमने 'चकमक' पत्रिका में देखा है। उसी तरह बच्चे कहानी भी लिखते हैं और वे छपती भी हैं।'' यह बात आई-गई हो गई।

कुछ दिनों बाद मैंने गौर किया, धीरे-धीरे उसने दीवारों व कागज़ पर कुछ स्क्रिबलिंग शुरू की है। मैं उससे उन पर कभी-कभी बात भी करता था कि इस चित्र में तुमने क्या बनाया है, चित्र में क्या हो रहा है, इसमें कौन-कौन-से रंग लगाए हैं आदि। इस बातचीत में उसके बनाए हुए चित्रों का मतलब भी स्पष्ट हो रहा था। इसके बाद मैंने उसके लिए एक अलग कॉपी बना दी जिसमें जब चाहे वह चित्र बना सकती थी। हालाँकि, यह कोई ज़रूरी भी नहीं था कि वह उसकी कॉपी में चित्र बनाए।

चित्र-शब्दों के संबंध की समझ

इस बीच उसने स्कूल जाना शुरू किया और स्कूल में उसने कुछ शिक्षाप्रद कहानियाँ व कविताएँ ही सुनीं, चित्रों पर भी कोई बात नहीं हुई। अंग्रेज़ी और हिंदी में वर्णमाला बार-बार लिखने का काम शुरू हो गया।

एक दिन उसके साथ बातचीत के दौरान मैंने पूछा, ''तुमने इस चित्र में क्या बनाया है?'' उसने बताया, ''यह लड़का है और पतंग उड़ा रहा है।'' मैंने कहा, ''इस बात को हम लिख भी सकते हैं।'' तो उसने कहा, ''पतंग के लिए 'प' बनाना पड़ेगा।'' यहाँ गौर करने की बात यह है कि चित्रात्मक पुस्तकों को देखने-समझने से उसको यह बात समझ में आ गई थी कि चित्र के नीचे लिखी इबारत चित्र के बारे में ही होगी। यह बात ऐसे भी पुख्ता हुई कि मैं चित्रों की किताबों को उसे दिखाते हुए इबारत पर अँगुली रखते हुए यह बताता हूँ कि इस किताब का नाम क्या है, किसने लिखी है, चित्र किसने बनाए हैं आदि। इस तरह उसे किताबों से जुड़ी यह शब्दावली समझ में आ रही थी।

घर में बनाई छोटी-सी लाइब्रेरी

एक दिन दिल्ली के विश्व पुस्तक मेले के बारे में भी बात हुई और मैंने उसे बताया कि वहाँ बहुत-सी अच्छी-अच्छी किताबें मिलती हैं। चाहे वे बच्चों की हों या बड़ों की। मैंने उससे यह भी कहा कि मैं उसके लिए वहाँ से कुछ अच्छी किताबें लाऊँगा। विश्व पुस्तक मेले से मैंने उसके लिए सुंदर तस्वीरों वाली कुछ देशी-विदेशी किताबें खरीदीं। इसके साथ लाइब्रेरी व कजरी गाय से जुड़ा एक पोस्टर भी खरीदा जिसमें बच्चों, कजरी गाय व कौए को लाइब्रेरी में किताब पढ़ते दिखाया गया था। यह कह सकते हैं कि यह पोस्टर को कमरे में दीवान

से सटी दीवार पर लगा दिया और कहा, "अब इस दीवान पर बैठकर हम जब चाहें किताबें पढ़ सकते हैं। इन पर बात कर सकते हैं। यह हमारी लाइब्रेरी है।"

अनुष्का के साथ इस तरह की प्रक्रियाएँ काफ़ी अनौपचारिक ढंग से चल रही थीं और स्कूल की प्रक्रियाएँ अपने औपचारिक ढंग से। एक दिन अनुष्का मेरे साथ खेल रही थी जिसमें वह एक लाइब्रेरियन का रोल कर रही थी। उसने दीवान पर बैठकर अपनी किताबें फैला रखी थीं और मुझसे पूछ रही थी, "आपको कौन-सी किताब लेनी है? आप यहाँ से किताब लो और पढ़ कर वापस कर देना।" मैंने उससे 'पिप्पी के लंबे मोज़े' नामक चित्रमय किताब ली। मुझे नहीं पता कि लाइब्रेरी की यह अवधारणा उसके मन में कहाँ से आई कि लाइब्रेरी से किताबें जारी की जाती हैं। शायद उसने किसी कार्टून प्रोग्राम में देखा हो या कहीं और। एक दिन उसने मुझसे यह भी कहा, "लाइब्रेरी में नानी के लिए भी किताबें होनी चाहिए। जो भगवान वाली किताबें होती हैं, उस तरह की किताब। उनके लिए वैसी किताबें ले आना, वे नानी को अच्छी लगती हैं।"

अब भी उससे लाइब्रेरी के बारे में बातें होती रहती हैं और वह लाइब्रेरी में नई-नई किताबें लाने की माँग भी करती है।

इन प्रक्रियाओं के साथ-साथ उसका चित्र बनाने का काम भी समय-समय पर चलता रहा। उसके बनाए हुए चित्रों पर मैंने एक वाक्य और नीचे उसका नाम लिखना शुरू किया। अब वह अपना नाम खुद लिख लेती है। धीरे-धीरे उसने भी चित्रों के साथ हिंदी की वर्णमाला में सीखे अक्षरों प, अ, ट, फ, क, च आदि को कहानी के रूप में लिखना शुरू किया क्योंकि उसे यह पता था कि चित्र के साथ कहानी की इबारत लिखी होती है।

किताबों के साथ जान-पहचान

इसी परिदृश्य में कुछ और भी जोड़ना चाहूँगा। वह अकसर रात को सोते समय अपनी किताबों का बैग लाकर मुझसे गुज़ारिश करती है कि मैं ये सारी किताबें पढ़कर उसे सुनाऊँ। मैं उससे कहता, "रात को इतनी सारी किताबें पढ़ने में बहुत समय लगेगा, ऐसा करते हैं अभी कुछ किताबें पढ़ लेते हैं।" मेरे न होने पर वह अपनी मम्मी से भी किताबें पढ़वाती है। उसे अपने बैग में रखी सभी किताबों के बारे में पता है। इससे ऐसा लगता है कि उसकी किताबों से अच्छी जान-पहचान हो गई है।

इस प्रक्रिया में यह भी देखने को मिलता है कि अनुष्का किताबों को सार्थक संदर्भों के माध्यम से पढ़ने-लिखने का प्रयास कर रही है। किताबों के नाम पहचानती है। चित्र के नीचे क्या लिखा है उसे जानती है। उसे पता है कि किताब कहाँ से शुरू हो रही है। कहानियों व चित्रों को अपने अनुभव से जोड़ पाती है। वह अपने ढंग से व्याख्या करने का प्रयास भी करती है। उदाहरण के लिए, 'पाँच दोस्त' नामक किताब

पढ़कर उसने कहा, "किताब के सभी दोस्त तो अपना-अपना घर दिखाते हैं, परंतु घोड़ा अपना घर नहीं दिखाता।" इसके साथ ही वह अपने स्कूल में सीखे हुए वर्णों को किताब के शब्दों से जोड़ने का प्रयास भी करती है।

आम बच्चों की तरह वह भी टेलीविज़न पर कार्टून व सीरियल्स देखती है। उसे समय-समय पर हमने बच्चों की फ़िल्में भी दिखाईं जिसमें यूनिसेफ़ द्वारा निर्मित 'मीना' शृंखला की फ़िल्में, बच्चों की अन्य फ़िल्में जैसे–'मैं हूँ कलाम' व 'लिलकी' शामिल हैं। इन फ़िल्मों के बारे में उसके कुछ अवलोकन भी थे जैसे 'मैं हूँ कलाम' देखकर उसने कहा कि "गरीब बच्चों को भी स्कूल जाना चाहिए, बच्चों को पढ़ना चाहिए, दोनों फ़िल्में बच्चों की पढ़ाई के बारे में हैं। 'मैं हूँ कलाम' में लड़के के बारे में बताया गया है और 'लिलकी' में लड़की के बारे में।" उसके इस सार-संक्षेप से मैं चौंका भी था।

यहाँ यह समझने की भी ज़रूरत है कि उक्त बातों का यह अर्थ नहीं है कि वह जल्दी ही पढ़ना-लिखना सीख गई है। हमने यह सोचा भी नहीं कि वह ऐसे जल्दी से पढ़ना सीख जाएगी। इस पर थोड़ा व्यवस्थित ढंग से काम होना चाहिए और यह काम स्कूल में होना है। हाँ, यह ज़रूर है कि उसकी पढ़ने की नींव ज़रूर पड़ रही है। आगे इमारत खड़ी करने का काम स्कूल का है।

लेकिन स्कूल की अपनी समझ है, वह अपनी समझ से काम करता है। उसे बच्चों को वर्णमाला, अमात्रिक शब्द, मात्रा वाले शब्द, वाक्य, पैराग्राफ़, कहानी आदि क्रम से पढ़ाना है। जबकि ज़रूरत इस बात की है कि स्कूल घर के इन समृद्ध अनुभवों को आधार बनाकर काम करे। कक्षा में ऐसे ही अनुभव प्रदान करें जिससे पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया सार्थक संदर्भों में हो सके। अनुष्का अभी केवल कमल, नमक, नटखट आदि लिखने का अभ्यास कर रही है, जबकि उसकी सोचने-समझने की क्षमताएँ काफ़ी आगे बढ़ चुकी हैं।

इसका क्या हल निकल सकता है? यह काफ़ी जटिल प्रक्रिया है जो स्कूल के प्रबंधन ढाँचे से लेकर पाठ्यक्रम, मूल्यांकन, शिक्षक की भूमिका, भाषा शिक्षण के तरीकों में बदलाव आदि की माँग करती है।

निष्कर्ष

अगर इस पूरे परिदृश्य को हम स्कूली शिक्षा के संदर्भ में देखें तो कुछ संकेत मिलते हैं तथा कुछ प्रश्न भी उभर सकते हैं। मध्यमवर्गीय परिवार में बच्चों को लिखित सामग्री का समृद्ध परिवेश मिलने की वजह से बच्चे पढ़ने-लिखने के लिए अनौपचारिक रूप से तैयार हो रहे हैं। इन अनुभवों को स्कूल में देने के भी प्रयास किए जाने चाहिए क्योंकि आमतौर पर हाशियाकृत समुदाय के बच्चों को ये अनुभव घर में नहीं मिल पाते। इस पर सोचा जाना ज़रूरी है कि क्या इस तरह का माहौल स्कूल में बन सकता है। खासकर, जब शिक्षा का अधिकार अधिनियम के तहत हर स्कूल में एक पुस्तकालय का प्रावधान किया गया है। इस प्रावधान का बेहतर

इस्तेमाल कैसे किया जाए? इसके साथ यह भी समझना ज़रूरी है कि जब हम पढ़ने-लिखने को 'अर्थ निर्माण' के संदर्भ में देख रहे हैं तो इसके अंतर्गत कक्षा में किस तरह से काम हो।

यह विचार करना ज़रूरी है कि यह माहौल बच्चों के पढ़ना-लिखना सीखने में कैसे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह हमारी आम कक्षाओं में क्यों नहीं हो पाता, इसके क्या कारण हैं आदि। अगर कारणों में जाएँ तो यह बात उभरेगी कि कक्षा में बच्चों की संख्या ज़्यादा है, स्कूल में संसाधन नहीं है, शिक्षकों की संख्या कम है और स्कूल के बुनियादी ढाँचे पर सवाल भी उभरेंगे। शिक्षक प्रशिक्षणों में भी इन मुद्दों पर चर्चा की जाती है परंतु बिना किसी फ़ॉलो-अप के कक्षा में बात आगे नहीं बढ़ती। यह सभी मुद्दे विचार करने योग्य लगते हैं।

कुल मिलाकर कहने का अर्थ यह है कि बच्चों के पढ़ना-लिखना सीखने को हमें एक सार्थक संदर्भ में देखने का प्रयास करना चाहिए और इसके लिए कक्षा में बाल पुस्तकों का समृद्ध माहौल देने का प्रयास करना चाहिए। इस प्रकार ही हम बच्चों के भाषा विकास को एक समग्र संदर्भ में देख पाएँगे और भारतीय संदर्भ में बच्चों के पढ़ने-लिखने पर और गहरे विमर्श को संचालित कर पाएँगे।

7

लकड़ी की कलम

रीता*

यह तब की बात है जब मैंने विद्यालय में अध्यापिका के रूप में कार्य करना आरंभ किया था। पहली कक्षा के छोटे-छोटे बच्चों के हाव-भाव एवं मासूम सी हरकतों को देखकर मेरा मन आनंद से भर जाता था। इसलिए मैं विद्यालय पहुँच कर सर्वप्रथम पहली कक्षा में ही जाती थी। पहले तो बच्चों के साथ कुछ बातें करती उनसे कहती कि आप लोग अपनी-अपनी कॉपी-पेंसिल निकाल लो। जो बच्चे कॉपी पेंसिल लाए थे उन्होंने तो निकाल लीं किंतु कुछ बच्चे जैसे के तैसे बैठे रहे। जब मैंने उनसे पूछा तो बहानों का अंबार लग गया। कुछ ने कहा कि 'मैडम जी है नहीं', तो कुछ ने कहा, 'दीदी घर पर रह गई' और कुछ ने कहा कि 'किसी ने निकाल ली।' उनकी ये बातें मैं भली-भाँति समझ चुकी थी क्योंकि उनमें से अधिकांश तो हर रोज़ कुछ न कुछ बहाना बना देते थे अत: मैंने इसका एक रास्ता निकाला जो अत्यंत सुलभ तथा बच्चों के लिए बड़ा ही रोचक था।

मैंने विद्यालय के कुछ बड़े बच्चों को बुलाया और उनसे कुछ पतली, सूखी और बेकार पड़ी लकड़ियाँ मँगवाईं जो कि उन्हें बड़ी आसानी से मिल गईं। फिर मैंने उन लकड़ियों के छोटे-छोटे कलम जितने टुकड़े कर दिए और अपनी कक्षा के सभी बच्चों को कक्षा कक्ष से बाहर विद्यालय प्रांगण में लगे पेड़ के नीचे बुलाया और वे टुकड़े उन सभी में बाँट दिए व एक टुकड़ा अपने पास रखा। मैंने ज़मीन पर उस लकड़ी के टुकड़े से एक छोटा-सा फूल बनाया और बच्चों से कहा कि आप लोग भी ऐसा एक फूल बनाओ। सारे बच्चे बड़ी ही खुशी-खुशी ज़मीन पर कुछ न कुछ बनाने लगे। कुछ तो बड़ी ही तल्लीनता से मेरे जैसा फूल बनाने की कोशिश कर रहे थे, कुछ शरारती अंदाज़ में आड़ी-तरछी रेखाएँ खींच रहे थे तो कुछ उस टुकड़े को ज़मीन पर गोल-गोल घुमा रहे थे। यह सब करने में उन्हें बहुत मज़ा आ रहा था। उन्हें लग रहा था कि मैं कोई खेल खिलवा रही हूँ किंतु मेरा उद्देश्य पूरा हो गया था। अब वे हर रोज़ विद्यालय आ कर कहते कि 'दीदी' वही वाला खेल खिलवा दो।

धीरे-धीरे मैंने उनका हाथ पकड़कर उन आड़ी-तिरछी रेखाओं और गोलों को अक्षरों का

* *सहायक अध्यापिका*, पूर्व माध्यमिक विद्यालय, रमईहार, मैनपुरी

रूप देना शुरू कर दिया। मुझे देखकर अब वे भी कुछ अक्षर बनाने लगे थे। यह देखकर मुझे अंदर ही अंदर अत्यंत हर्ष हो रहा था क्योंकि मैं जानती थी कि यदि एक बार बच्चे में किसी कार्य के प्रति लगन पैदा हो जाए तो वे ये कॉपी, पैन, पेंसिल आदि सभी बहाने बनाना बंद कर देंगे। इन गतिविधियों का परिणाम मेरी अपेक्षाओं के अनुरूप आ रहा था। इससे मुझे यह लगा कि हम विद्यालय एवं कक्षा कक्ष में आ रही समस्याओं पर मंथन करें तथा उसके उचित निदान का मार्ग खोजें।

"जब मैं बच्च था तो छोटी-छोटी चीज़ों से अपने खिलौने बनाने और अपनी कल्पना में नए-नए खेल ईजाद करने की मुझे पूरी आज़ादी थी। मेरी खुशी में मेरे साथियों का पूरा हिस्सा होता था; बल्कि मेरे खेलों का पूरा मज़ा उनके साथ खेलने पर निर्भर करता था। एक दिन हमारे बचपन के इस स्वर्ग में वयस्कों की बाज़ार-प्रधान दुनिया से एक प्रलोभन ने प्रवेश किया। एक अंग्रेज़ दुकान से खरीदा गया खिलौना हमारे एक साथी को दिया गया; वह कमाल का खिलौना था – बड़ा और मानो सजीव। हमारे साथी को उस खिलौने पर घमंड हो गया और अब उसका ध्यान हमारे खेलों में इतना नहीं लगता था; वह उस कीमती चीज़ को बहुत ध्यान से हमारी पहुँच से दूर रखता था, अपनी इस खास वस्तु पर इठलाता हुआ। वह अपने अन्य साथियों से खुद को श्रेष्ठ समझता था क्योंकि उनके खिलौने सस्ते थे। मैं निश्चित तौर पर कह सकता हूँ कि अगर वह इतिहास की आधुनिक भाषा का प्रयोग कर सकता तो यही कहता कि वह उस हास्यास्पद रूप से श्रेष्ठ खिलौने का स्वामी होने की हद तक हमसे अधिक सभ्य था

अपनी उत्तेजना में वह एक चीज़ भूल गया – वह तथ्य जो उस वक्त उसे बहुत मामूली लगा था – कि इस प्रलोभन में एक ऐसी चीज़ खो गई जो उसके खिलौने से कहीं श्रेष्ठ थी, एक श्रेष्ठ और पूर्ण बच्चा। उस खिलौने से महज उसका धन व्यक्त होता था, बच्चे की रचनात्मक ऊर्जा नहीं, न ही उसके खेल में बच्चे का आनंद था और न ही उसके खेल की दुनिया में साथियों को खुला निमंत्रण।"

– रवींद्रनाथ टैगोर के निबंध 'सभ्यता और प्रगति' से

शोध

8

प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन

बिजेंद्र कुमार गौतम *
प्रीति वर्मा **

जीवन के रास्ते का मार्गदर्शन करने हेतु ईश्वर ने अपने प्रतिनिधि के रूप में शिक्षक (गुरु) का निर्माण किया है। सर्वविदित है कि श्रेष्ठ शिक्षक की सहायता, विश्वास व उसके विद्वतापूर्ण एवं उचित-निर्देशन के अभाव में शिक्षार्थी किंकर्त्तव्यविमूढ़ की स्थिति में रहता है तथा अपने जीवन के मूल्यों, लक्ष्यों तथा उद्देश्यों को प्राप्त करने में असहाय महसूस करता है। पुरातन काल से ही भारतीय समाज में शिक्षक को सर्वोच्च व श्रेष्ठतम् स्थान दिया गया है। उसे राष्ट्र के भविष्य का निर्माता कहा गया है क्योंकि शिक्षक जिन बच्चों को आज शिक्षा देते हैं वे बच्चे ही भविष्य में राष्ट्र के अच्छे नागरिक बनते हैं। इस प्रकार शिक्षक के ऊपर ही यह निर्भर करता है कि वह किस प्रकार के नागरिक तैयार करता है। डॉ. राधाकृष्णन कहते हैं कि 'समाज में अध्यापक का स्थान बड़ा महत्त्वपूर्ण है। वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सामाजिक परंपराएँ तथा तकनीकी कौशल पहुँचाने का केंद्र है और ज्ञान के प्रकाश को प्रज्जवलित रखने में सहायक होता है।' शिक्षक सभी शैक्षिक कार्यक्रमों की आधारशिला या धुरी है, जिनमें पाठ्यक्रम, पाठ्यवस्तु, पाठ्यपुस्तकें, मूल्यांकन शिक्षण विधियाँ तथा शिक्षण उद्देश्य आदि आते हैं। इस प्रकार अध्यापक, शिक्षा पद्धति का केंद्र बिंदु है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति उस राष्ट्र की शिक्षा पद्धति तथा शिक्षक पर निर्भर करती है। इस संदर्भ में कहा गया है कि शिक्षक का कर्त्तव्य विद्यार्थियों के चरित्र का निर्माण करना है। इसके लिए अध्यापक में ही सद्गुण नहीं होंगे तो वह बच्चों में कैसे अच्छे गुणों का विकास कर सकेगा। अतः अध्यापकों में ऐसे गुण व क्षमताओं का विकास करने के लिए उन्हें निरंतर अध्ययनरत रहना चाहिए। अध्यापक के

* *प्राथमिक शिक्षक*, ग्राम व पोस्ट-डहाना, हापुड़, उत्तर प्रदेश
** *रिसर्च स्कॉलर*, 3/128 दुर्गावाड़ी मैरिस रोड, जनपद अलीगढ़, उत्तर प्रदेश

महत्व पर प्रकाश डालते हुए श्री सैदन कहते हैं- यदि शिक्षक जलता हुआ दीप नहीं है, तो वह दूसरों में ज्ञान के प्रकाश को प्रसारित करने में सदैव असमर्थ रहेगा। रवींद्रनाथ ठाकुर के शब्दों में – 'एक अध्यापक वास्तविक अर्थों में नहीं सिखा सकता, जब तक कि वह स्वयं भी सीख न रहा हो चूँकि एक दीपक दूसरे दीपक को प्रज्वलित नहीं कर सकता तब तक उसकी अपनी ज्योति जलती न रहे।' भारतीय समाज में शैक्षणिक सुधार की आवश्यकता का एक लंबे समय से लगातार अनुभव किया जा रहा है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि 'हमें ऐसे शिक्षक चाहिए जो चरित्रवान, मानसिक रूप से उत्तम, बुद्धिवान, मूल्यवान नागरिक हो जिससे प्रत्येक छात्र अपने पैरों पर खड़ा हो सकें।'

अध्ययन का औचित्य

संबंधित साहित्यों का अध्ययन करने के लिए विभिन्न मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक शोध ग्रंथ, पत्र-पत्रिकाओं व एनसाइक्लोपीडिया देखे गए, परंतु प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन से संबंधित अध्ययन की तरफ़ किसी शोधार्थी का ध्यान नहीं गया है। यद्यपि विद्यार्थियों की अभिवृत्ति एवं जागरूकता पर इससे कुछ संबंधित अध्ययन किए गए हैं। मीडलेटन (1988) ने टीचर कैरियर लैडर कार्यक्रम के प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति पर अध्यापन किया और टिचाटोग, ज.नद्वनडू (2006) ने प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सेवारत दूरस्थ कार्यक्रम के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया। शोध हेतु प्राथमिक विद्यालयों के 149 सेवारत शिक्षकों का चयन किया गया। आहलूवालिया (1974) ने छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति का मापन किया व उपाध्याय (1984) ने सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय तथा अन्य विश्वविद्यालयों के शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति मूल्यों तथा अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन किया। रामचंद्रन (1991) ने भावी शिक्षकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का अध्यापन किया। रामा (1992) ने आवासीय तथा अनावासीय विद्यालयों के शिक्षकों की अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन किया। इन्होंने माध्यमिक विद्यालयों (आवासीय तथा अनावासीय) के 400 अध्यापकों का चयन किया। शोधकर्ता ने विभिन्न शोध अध्ययनों का सर्वेक्षण करने के पश्चात् पाया कि अध्यापन अभिवृत्तियों पर विभिन्न शोधकार्य हो चुके हैं। लेकिन प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन, पर अभी तक कोई शोधकार्य नहीं हुआ है। इसलिए शोधकर्ता ने प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन करने का निश्चय किया। शोधकर्ता ने संबंधित समस्या को निम्न कारणों से चुना –

1. अध्यापक अपने व्यवसाय के प्रति कितनी वचनबद्धता प्रदर्शित करते हैं ज्ञात किया जा सके।
2. दूसरा प्रमुख कारण यह है कि यह समस्या नवीन है। अब तक की अधिकांश समस्याएँ

केवल सेवापूर्व शिक्षकों एवं माध्यमिक अध्यापकों से ही संबंधित हैं, जिनमें शिक्षकों एवं छात्राध्यापकों के स्कूली वातावरण का ही अध्ययन किया गया है।

3. इस समस्या का अध्ययन करने के लिए समय व साधनों के अनुसार आँकड़ों के मिल जाने की आशा है।

इस अध्ययन के द्वारा शोधकर्ता आवश्यक कारणों को जान कर यह प्रयास करेगा कि किन-किन क्षेत्रों में आवश्यक सुधार किए जाएँ, जिससे शिक्षकों के अध्यापन, शैक्षिक स्तर तथा जीवन मूल्यों में सुधार आ सके। वे अपने व्यवसाय के प्रति वचनबद्ध तथा समर्पित हो सकें। इस शोध से केवल प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों का ही नहीं, बल्कि पूरे अध्यापक वर्ग का विकास होगा जिससे शिक्षकों की अध्यापन अभिवृत्तियों में सुधार आएगा, फलस्वरुप शिक्षार्थी भी देश के अच्छे मूल्यवान आदर्श नागरिक बनेंगे, जिससे देश का भविष्य उज्जवल होगा। शोध कार्य से प्राप्त परिणामों के आधार पर शिक्षा को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकेगा और उम्मीद है कि इसके निष्कर्ष समूचे भारत के लिए एक सार्थक प्रयास के रूप में सामने आएंगे तथा प्राथमिक शिक्षा को एक नया आयाम मिल सकेगा।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. प्राथमिक विद्यालयों के कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन करना
2. प्राथमिक विद्यालयों की महिला एवं पुरुष वर्ग के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन करना
3. प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन करना
4. प्राथमिक विद्यालयों के आरक्षित एवं सामान्य वर्ग के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन करना
5. प्राथमिक विद्यालयों के 5 वर्ष से कम अनुभव वाले शिक्षकों एवं 5 वर्ष से अधिक अनुभव वाले शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन करना
6. प्राथमिक विद्यालयों के विवाहित एवं अविवाहित शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन करना
7. प्राथमिक विद्यालयों के हिंदू एवं मुस्लिम वर्ग के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन करना
8. प्राथमिक विद्यालयों के शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन करना

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. प्राथमिक विद्यालयों के कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. प्राथमिक विद्यालयों के महिला एवं पुरुष वर्ग के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

3. प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. प्राथमिक विद्यालयों के आरक्षित एवं सामान्य वर्ग के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. प्राथमिक विद्यालयों के 5 वर्ष से कम अनुभव वाले शिक्षकों एवं 5 वर्ष से अधिक अनुभव वाले शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
6. प्राथमिक विद्यालयों के विवाहित एवं अविवाहित शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
7. प्राथमिक विद्यालयों के हिंदू एवं मुस्लिम वर्ग के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
8. प्राथमिक विद्यालयों के शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध उपकरण

न्यादर्श चयन करने के पश्चात् किसी भी शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए शोध उपकरणों का होना नितांत आवश्यक है। यदि यह कहा जाए कि शोध उपकरणों के अभाव में कोई भी शोध कार्य संभव नहीं है तो शायद यह अतिश्योक्ति नहीं होगी। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने वर्तमान शोध के उद्धेश्यों को प्राप्त करने के लिए दत्त संकलन उपकरणों का चयन सावधानीपूर्वक किया है। शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत शोध हेतु निम्न उपकरण का प्रयोग किया गया है।

1. **डॉ. मीना बुद्वीसागर राठोड़** एवं **मधुलिका वर्मा** द्वारा निर्मित अध्यापक की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता मापनी का प्रयोग किया गया है। इसमें कुल 58 कथन हैं प्रत्येक कथन के तीन विकल्प अ, ब, एवं स दिए गए हैं, जो कि परिस्थिति अनुसार अध्यापक के विचार या व्यवहार को प्रदर्शित करते हैं।

शोध के चर

प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए कुल 9 चरों का समावेश किया गया है। जिनमें 7 चर विषय, लिंग, क्षेत्र, जाति, धर्म, आर्थिक व वैवाहिक स्थिति निराश्रित चर हैं तथा 2 चरों, जागरूकता एवं अभिवृत्ति मापनी को आश्रित चर माना गया है।

समष्टि एवं न्यादर्श का चयन

न्यादर्श अपने समस्त समूह का लघु चित्र होता है – वी.पी.यंग

किसी भी शोधकार्य के सफ़ल संचालन हेतु यह आवश्यक है कि न्यादर्श का चयन सही एवं वैज्ञानिक आधार पर किया जाए। वर्तमान में उत्तर प्रदेश में कुल 70 ज़िले हैं तथा इनमें कार्यरत सभी प्राथमिक शिक्षक इस शोध के लिए समष्टि है।

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु **चयन समय** एवं उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता के लिए यह कठिन होगा कि संपूर्ण समष्टि पर अनुसंधान किया जाए। अत: अनुंसधान के लिए अलीगढ़ मंडल के यदृच्छया कुल 100 प्राथमिक शिक्षकों का चयन किया गया है।

चयनित शिक्षकों का ***प्रोफ़ाईल***

क्र.सं.	विशेषताएँ	वर्ग/समूह	आवृत्ति
1	विषय	कला/वाणिज्य	18
		विज्ञान	16
2	लिंग	पुरुष	58
		महिलाएँ	42
3	निवास क्षेत्र	शहरी	45
		ग्रामीण	55
4	जाति वर्ग	सामान्य वर्ग	41
		आरक्षित वर्ग	59
5	विद्यालय	शासकीय	58
		अशासकीय	42
6	वैवाहिक स्थिति	विवाहित	51
		अविवाहित	49
7	धर्म	हिंदू	79
		मुस्लिम	21
8	अनुभव	5 वर्ष से कम	56
		5 वर्ष से अधिक	44

परिसीमन

इस अध्ययन में उत्तर प्रदेश के सभी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत सभी शिक्षकों को समय एवं उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए शामिल करना कठिन होगा इसलिए प्रस्तुत समस्या का अध्ययन प्रकृति को संज्ञान में रखते हुए शोधकर्ता ने उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ मंडल के विभिन्न ब्लाकों से 50 प्राथमिक विद्यालयों से कुल 100 शिक्षकों का चुनाव किया।

प्रदत्त संकलन की प्रक्रिया

शोध कर्ता द्वारा शोध हेतु आवश्यक शोध उपकरण यथा शिक्षण व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता तथा सामान्य जानकारी प्रपत्र का निर्धारण करने के पश्चात् कार्य क्षेत्र में दत्तों का संकलन करने हेतु सभी चयनित प्राथमिक विद्यालयों में शोध कर्ता द्वारा स्वयं जाकर विद्यालय के प्राचार्य की अनुमति से निम्न क्रम में कार्य किया –

प्रथम चरण – न्यादर्श में लिए गए प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों से शिक्षण व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता परीक्षण का प्रशासन कर आँकड़े प्राप्त करना।

द्वितीय चरण – प्रथम चरण में अनुपस्थित रहे प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के परीक्षण का प्रशासन करना एवं प्राचार्य से परीक्षण करने की सम्प्राप्ति प्राप्त करना।

सभी परीक्षणों के प्रशासन के लिए मापनी में दिए गए निर्देशों एवं मैनुअल का अक्षरत: पालन किया गया।

प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ

शोध के उद्देश्यों को प्राप्त करने तथा परिकल्पनाओं के सत्यापन एवं विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी.परीक्षण आदि सांख्यिकीय प्रविधियों का उपयोग किया गया है। सहसंबंध ज्ञात करने के लिए कार्लपियर्सन की सहसंबंध

ज्ञात करने की विधि का उपयोग किया गया है। सभी सांख्यिकी गणना कंप्यूटर एवं वैज्ञानिक संगणन की सहायता से की गई है।

प्रदत्तों का संकलन एवं विश्लेषण

प्रत्येक शोध में परिकल्पना की रचना के पश्चात् उसके परीक्षण हेतु आवश्यकता होती है। अनुसंधानकर्ता के लिए उचित परिणामों पर पहुँचने के लिए परीक्षणों के प्रशासन से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण करना अति आवश्यक है। विश्लेषण हेतु प्राप्त आँकड़ों का सारणीयन करने पर अनावश्यक आँकड़ों व अनावश्यक परिणामों को निकालने से बचा जा सकता है। प्राप्त आँकड़ों से आवश्यकतानुसार अधिकतम परिणाम प्राप्त करने के लिए शोधकर्ता ने आँकड़ों को इस प्रकार सारणियों में व्यवस्थित किया है जिससे कि प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन (अलीगढ़ के संदर्भ में) किया जा सके। आँकड़ों का विश्लेषण वैज्ञानिक निष्कर्ष पर पहुँचने का कार्य करता है। बिना विश्लेषण के द्वारा प्राप्त अध्ययन सारणी की कोई उपयोगिता नहीं होती है। समस्या के संबंध में निश्चित ज्ञान की प्राप्ति हेतु अध्ययन की सामग्री का विश्लेषण किया जाना अति आवश्यक है।

प्रत्येक सर्वेक्षण कार्य में शोधकर्ता को आँकड़ों पर निर्भर रहना पड़ता है। जिनकी अस्पष्टता के कारण शोध में त्रुटिपूर्ण होने की संभावना अधिक रहती है। किसी भी अनुसंधान में प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण के आधार पर उनकी व्यवस्था की जाती है। अनुसंधानकर्ता ने अपने शोध प्रबंध में प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन (अलीगढ़ जनपद के संदर्भ में) करने के लिए प्राथमिक विद्यालयों के 100 शिक्षकों से आँकड़ों का संकलन किया है। अनुसंधानकर्ता द्वारा निम्न सांख्यिकीय विश्लेषण का प्रयोग किया गया। सभी वर्गों एवं उपवर्गों का मध्यमान, मानक विचलन ज्ञात किया गया है एवं क्रान्तिक अनुपात निकाला गया है।

सारणियों की व्याख्या

शोधकर्ता ने संकलित आँकड़ों के आधार पर शोध में 08 सारणियों एवं 08 ग्राफ़ों का प्रयोग कर उनका विश्लेषण एवं विवेचना की है जो इस प्रकार है

तालिका 4.3 (1)

विषयानुसार प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन

क्रमांक	विषय / (वर्ग)	संख्या (n)	स्वतंत्रांश संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	CR मान	सार्थकता
1	कला	67	98	51.73	3.93	3.46	* एवं **
2	विज्ञान	33		48.85	3.92		

n– प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की संख्या।

** पर सार्थक अंतर, .01 ** .05 पर सार्थक अंतर *** सार्थक अंतर नहीं*

सारणी संख्या 4.3(1) के अनुसार प्राथमिक विद्यालयों के कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का मध्यमान (51.73 एवं 48.85) एवं मानक विचलन क्रमशः (3.93 एवं 3.92)प्राप्त हुए। मध्यमानों की दृष्टि से कला वर्ग के शिक्षकों की विज्ञान वर्ग के शिक्षकों से अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अधिक धनात्मक अभिवृत्ति पाई गई है। स्वतंत्रांश संख्या 98 पर मान 3.46 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता स्तर 0.01 एवं 0.05 के मान से अधिक है अतः प्राथमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों के एवं महिला शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर है। शोधकर्ता का मत है कि विज्ञान वर्ग के शिक्षकों का मानसिक स्तर अनुसंधान करने के लिए या उच्च शिक्षण हेतु ज़्यादा उपयुक्त है, जबकि कला वर्ग के शिक्षक सामाजिकता, नैतिकता के साथ बच्चों के विकास में ज़्यादा सहायक सिद्ध होते हैं।

सारणी संख्या 4.3 (2) के अनुसार प्राथमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों के एवं महिला शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन का मध्यमान क्रमशः 50.94 एवं 49.96 की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अधिक धनात्मक अभिवृत्ति पाई गई है। स्वतंत्रांश संख्या 98 पर CR मान

तालिका 4.3 (2)

लिंग के आधार पर प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन

क्रमांक	लिंग	संख्या (n)	स्वतंत्रांश संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	CR मान	सार्थकता
1	पुरुष	49	98	50.94	3.96	1.26	***
2	महिलाएँ	51		49.95	3.87		

n–प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की संख्या।

** .01 पर सार्थक अंतर, ** .05 पर सार्थक अंतर *** सार्थक अंतर नहीं*

तालिका 4.3 (3)

निवास क्षेत्र के आधार पर प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन

क्रमांक	निवास क्षेत्र	संख्या (n)	स्वतंत्रांश संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	CR मान	सार्थकता
1	शहरी	40	98	49.75	4.04	1.46	***
2	ग्रामीण	60		50.93	3.83		

n–प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की संख्या।

** .01 पर सार्थक अंतर, ** .05 पर सार्थक अंतर *** सार्थक अंतर नहीं*

1.26 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता स्तर 0.01 एवं 0.05 के मान से कम है। अत: प्राथमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों के एवं महिला शिक्षकों की दूरवर्ती शिक्षा अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं है। शोधकर्ता का मत है कि पुरुष शिक्षक ज़्यादा सक्रिय होते हैं तथा शिक्षण को प्रभावशीलता प्रदान करते हैं, जबकि महिला शिक्षक विद्यालयों में अन्य कार्यों को प्राथमिकता देती हैं।

सारणी संख्या 4.3 (3) के अनुसार प्राथमिक विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन का मध्यमान क्रमश: 49.75 एवं 50.93 एवं मानक विचलन क्रमश: 4.04 एवं 3.83 प्राप्त हुए। मध्यमानों की दृष्टि से ग्रामीण शिक्षकों की शहरी शिक्षकों से अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अधिक धनात्मक अभिवृत्ति पाई गई है। स्वतंत्रांश संख्या 98 पर CR मान 1.46 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता स्तर 0.01 एवं 0.05 के मान से कम है। अत: प्राथमिक विद्यालयों के शहरी शिक्षकों एवं ग्रामीण शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं है। शोधकर्ता का मत है कि अधिकतर प्राथमिक विद्यालय ग्रामीण परिवेश में हैं तथा ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक अपने विद्यार्थियों की मूलभूत समस्याओं से परिचित हैं। अत: शहरी शिक्षकों से अध्यापन व्यवसाय के प्रति अधिक वचनबद्धता प्रदर्शित करते हैं।

तालिका 4.3 (4)

लिंग के आधार पर प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन

क्रमांक	जाति वर्ग	संख्या (n)	स्वतंत्रांश संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	CR मान	सार्थकता
1	सामान्य वर्ग	52	98	50.81	4.21	0.91	***
2	आरक्षित वर्ग	48		50.10	3.60		

n–प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की संख्या।

** .01 पर सार्थक अंतर, ** .05 पर सार्थक अंतर *** सार्थक अंतर नहीं*

सारणी संख्या 4.3 (4) के अनुसार प्राथमिक विद्यालयों के सामान्य वर्ग एवं आरक्षित वर्ग शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता के अध्ययन का मध्यमान क्रमश: 50.81 एवं 50.10 एवं मानक विचलन क्रमश: 4.21 एवं 3.60 प्राप्त हुए। मध्यमानों की दृष्टि से सामान्य वर्ग के शिक्षकों की आरक्षित वर्ग के शिक्षकों से अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अधिक धनात्मक अभिवृत्ति पाई गई है। स्वतंत्रांश संख्या 98 CR मान 0.91 प्राप्त हुआ, जो कि सार्थकता स्तर 0.01 एवं 0.05 के मान से कम है अत: प्राथमिक विद्यालयों के सामान्य वर्ग शिक्षकों के एवं आरक्षित वर्ग के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति

वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं है। शोधकर्ता का मत है कि सामान्य वर्ग के शिक्षक शिक्षा के प्रति आरक्षित वर्ग के शिक्षकों से ज़्यादा जागरूकता रखते हैं। अत: उनकी अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता आरक्षित वर्ग के शिक्षकों से ज़्यादा पाई जाती है।

वाले शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं है। शोधकर्ता का मत है कि 5 वर्ष से कम अनुभव वाले शिक्षकों से अध्यापन व्यवसाय के प्रति अधिक वचनबद्धता प्रदर्शित करते हैं।

सारणी संख्या 4.3 (6) के अनुसार

तालिका 4.3 (5)

अनुभव के आधार पर प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन

क्रमांक	अनुभव स्तर	संख्या (n)	स्वतंत्रांश संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	CR मान	सार्थकता
1	5 वर्ष से कम	56	98	50.17	4.19	0.93	***
2	5 वर्ष से अधिक	44		50.88	3.46		

n–प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की संख्या।

** .01 पर सार्थक अंतर, ** .05 पर सार्थक अंतर *** सार्थक अंतर नहीं*

सारणी संख्या 4.3 (5) के अनुसार प्राथमिक विद्यालयों के 5 वर्ष से कम अनुभव वाले शिक्षकों एवं 5 वर्ष से अधिक अनुभव वाले शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन का मध्यमान क्रमश: 50.17 एवं 50.88 एवं मानक विचलन क्रमश: 4.19 एवं 3.46 प्राप्त हुए। मध्यमानों की दृष्टि से 5 वर्ष से कम अनुभव वाले शिक्षकों एवं 5 वर्ष से अधिक अनुभव वाले शिक्षकों से अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अधिक धनात्मक अभिवृत्ति पाई गई है। स्वतंत्रांश संख्या 98 CR मान 0.93 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता स्तर 0.01 एवं 0.05 के मान से कम है। अत: प्राथमिक विद्यालयों के 5 वर्ष से कम अनुभव वाले शिक्षकों एवं 5 वर्ष से अधिक अनुभव

प्राथमिक विद्यालयों के विवाहित शिक्षकों एवं अविवाहित शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन का मध्यमान क्रमश: 50.17 एवं 51.19 एवं मानक विचलन क्रमश: 4.20 एवं 2.97 प्राप्त हुए। मध्यमानों की दृष्टि से विवाहित शिक्षकों की अविवाहित शिक्षकों से अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अधिक धनात्मक अभिवृत्ति पाई गई है। स्वतंत्रांश संख्या 98 CR मान 1.26 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता स्तर 0.01 एवं 0.05 के मान से कम है अत: प्राथमिक विद्यालयों के विवाहित शिक्षकों एवं अविवाहित शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं है। शोधकर्ता का मत है कि अविवाहित शिक्षक नवागत होने के साथ-साथ

पारिवारिक ज़िम्मेदारी कम होने के कारण विवाहित शिक्षकों से अध्यापन व्यवसाय के प्रति

मान 0.36 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता स्तर 0.01 एवं 0.05 के मान से कम है अत: प्राथमिक

तालिका 4.3 (6)

वैवाहिक स्थिति के आधार पर प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन–

क्रमांक	वैवाहिक स्थिति	संख्या (n)	स्वतंत्रांश संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	CR मान	सार्थकता
1	वैवाहिक	74	98	50.17	4.20	1.26	***
2	अवैवाहिक	26		51.19	2.97		

n–प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की संख्या।

** .01 पर सार्थक अंतर, ** .05 पर सार्थक अंतर *** सार्थक अंतर नहीं*

तालिका 4.3 (7)

धर्म के आधार पर प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन

क्रमांक	धर्म	संख्या (n)	स्वतंत्रांश संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	CR मान	सार्थकता
1	हिंदू	87	98	50.51	3.94	0.36	***
2	मुस्लिम	13		50.01	4.02		

n–प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की संख्या।

** .01 पर सार्थक अंतर, ** .05 पर सार्थक अंतर *** सार्थक अंतर नहीं*

अधिक वचनबद्धता प्रदर्शित करते हैं।

सारणी संख्या 4.3 (7) के अनुसार प्राथमिक विद्यालयों के हिंदू शिक्षकों एवं मुस्लिम शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन का मध्यमान क्रमश: 50.51 एवं 50.01 एवं मानक विचलन क्रमश: 3.94 एवं 4.02 प्राप्त हुए। मध्यमानों की दृष्टि से हिंदू शिक्षकों की मुस्लिम शिक्षकों से अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अधिक धनात्मक अभिवृत्ति पाई गई है। स्वतंत्रांश संख्या 98 CR विद्यालयों के हिंदू शिक्षकों एवं मुस्लिम शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं है। शोधकर्ता का मत है कि हिंदू वर्ग के शिक्षकों के मुस्लिम वर्ग शिक्षकों से शिक्षा के प्रति अधिक धनात्मक रूख के कारण अधिक धनात्मक अभिवृत्ति पायी गई है।

सारणी संख्या 4.3 (8) के अनुसार शासकीय एवं अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन का मध्यमान क्रमश:

तालिका 4.3 (8)

विद्यालय के आधार पर प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन

क्रमांक	विद्यालय	संख्या (n)	स्वतंत्रांश संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	CR मान	सार्थकता
1	शासकीय	65	98	51.29	3.72	3.07	* एवं **
2	अशासकीय	35		48.86	3.85		

n–प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की संख्या।

** .01 पर सार्थक अंतर, ** .05 पर सार्थक अंतर *** सार्थक अंतर नहीं*

51:29 एवं 48.86 एवं मानक विचलन क्रमश: 3.72 एवं 3.85 प्राप्त हुए। मध्यमानों की दृष्टि से शासकीय प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों से अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अधिक धनात्मक अभिवृत्ति पाई गई है। स्वतंत्रांश संख्या 98 CR मान 3.07 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता स्तर 0.01 एवं 0.05 के मान से अधिक है अत: शासकीय एवं अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं है। शोध कर्ता का मत है कि शासकीय शिक्षक अधिक वेतनमान एवं सुविधाओं के कारण अशासकीय शिक्षकों से अध्यापन व्यवसाय के प्रति अधिक वचनबद्धता प्रदर्शित करते हैं।

शोध के निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य ''प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता, (अलीगढ़ जनपद के संदर्भ में)'' का मापन करना है। इसके लिए शोध कर्ता ने प्रस्तुत शोध अध्ययन में सामान्य रूप से आँकड़ों के संकलन हेतु डॉ. मीना बुद्धीसागर राठौड़ एवं मधुलिका वर्मा द्वारा निर्मित अध्यापक की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता मापनी उपकरण का प्रयोग किया। शोधकर्ता ने न्यादर्श को धर्म (हिंदू, मुस्लिम) परिवेश (ग्रामीण, शहरी) लिंग (स्त्री, पुरुष) विवाहित–अविवाहित एवं अनुभव, विद्यालय के आधार के समूहों में विभक्त करके किया है। अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों की सांख्यिकीय गणना विभिन्न समूहों में की गई है। समूहों से प्राप्त प्राप्तांकों की सांख्यिकीय विवेचना और विश्लेषण के उपरांत परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है। अध्ययन से प्राप्त होने वाले परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित है–

1. मध्यमानों की दृष्टि से कला वर्ग के शिक्षकों की विज्ञान वर्ग के शिक्षकों से अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अधिक धनात्मक अभिवृत्ति पायी गई है। एवं प्राथमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों के एवं महिला शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर है। शोधकर्ता का मत है कि विज्ञान

वर्ग के शिक्षकों का मानसिक स्तर अनुसंधान करने के लिए या उच्च शिक्षण हेतु ज़्यादा उपयुक्त है, जबकि कला वर्ग के शिक्षक सामाजिकता, नैतिकता के साथ बच्चों के विकास में ज़्यादा सहायक सिद्ध होते हैं।

2. मध्यमानों की दृष्टि से पुरुष शिक्षकों की महिला शिक्षकों से अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अधिक धनात्मक अभिवृत्ति पाई गई है एवं प्राथमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों के एवं महिला शिक्षकों की दूरवर्ती शिक्षा अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं है। शोधकर्ता का मत है कि पुरुष शिक्षक ज़्यादा सक्रिय होते हैं तथा शिक्षण को प्रभावशीलता प्रदान करते हैं, जबकि महिला शिक्षक अन्य कार्यों को प्राथमिकता देती हैं।
3. मध्यमानों की दृष्टि से ग्रामीण शिक्षकों की शहरी शिक्षकों से अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अधिक धनात्मक अभिवृत्ति पाई गई है एवं प्राथमिक विद्यालयों के शहरी शिक्षकों के एवं ग्रामीण शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं है। शोधकर्ता का मत है कि अधिकतर प्राथमिक विद्यालय ग्रामीण परिवेश में हैं तथा ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक अपने विद्यार्थियों कि मूलभूत समस्याओं से परिचित हैं अत: शहरी शिक्षकों से अध्यापन व्यवसाय के प्रति अधिक वचनबद्धता प्रदर्शित करते हैं।
4. मध्यमानों की दृष्टि से सामान्य वर्ग के शिक्षकों की आरक्षित वर्ग के शिक्षकों से अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अधिक धनात्मक अभिवृत्ति पाई गई है एवं प्राथमिक विद्यालयों के सामान्य वर्ग शिक्षकों के एवं आरक्षित वर्ग के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं है। शोधकर्ता का मत है कि सामान्य वर्ग के शिक्षक शिक्षा के प्रति आरक्षित वर्ग के शिक्षकों से ज़्यादा जागरूकता रखते हैं अत: उनकी अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता आरक्षित वर्ग के शिक्षकों से ज़्यादा पाई जाती है।
5. मध्यमानों की दृष्टि से 5 वर्ष से कम अनुभव वाले शिक्षकों की 5 वर्ष से अधिक अनुभव वाले शिक्षकों से अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अधिक धनात्मक अभिवृत्ति पाई गई है एवं प्राथमिक विद्यालयों के 5 वर्ष से कम अनुभव वाले शिक्षकों एवं 5 वर्ष से अधिक अनुभव वाले शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं है। शोधकर्ता का मत है कि प्राथमिक विद्यालयों के 5 वर्ष से अधिक अनुभव वाले शिक्षक ज़्यादा अनुभव के कारण 5 वर्ष से कम अनुभव वाले शिक्षकों से अध्यापन व्यवसाय के प्रति अधिक वचनबद्धता प्रदर्शित करते हैं।
6. मध्यमानों की दृष्टि से विवाहित शिक्षकों की अविवाहित शिक्षकों से अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अधिक धनात्मक अभिवृत्ति पाई गई है एवं प्राथमिक विद्यालयों के

विवाहित शिक्षकों एवं अविवाहित शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं है। शोधकर्ता का मत है कि अविवाहित शिक्षक नवागत होने के साथ-साथ पारिवारिक ज़िम्मेदारी कम होने के कारण विवाहित शिक्षकों से अध्यापन व्यवसाय के प्रति अधिक वचनबद्धता प्रदर्शित करते हैं।

7. मध्यमानों की दृष्टि से हिंदू शिक्षकों की मुस्लिम शिक्षकों से अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अधिक धनात्मक अभिवृत्ति पाई गई है एवं प्राथमिक विद्यालयों के हिंदू शिक्षकों एवं मुस्लिम शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं है। शोधकर्ता का मत है कि हिंदू वर्ग के शिक्षकों के मुस्लिम वर्ग के शिक्षकों से शिक्षा के प्रति अधिक धनात्मक रूख के कारण अधिक धनात्मक अभिवृत्ति पाई गई है।
8. मध्यमानों की दृष्टि से शासकीय प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों से अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अधिक धनात्मक अभिवृत्ति पाई गई है एवं शासकीय एवं अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर है। शोधकर्ता का मत है कि शासकीय शिक्षक अधिक वेतनमान एवं सुविधाओं के कारण अशासकीय शिक्षकों से अध्यापन व्यवसाय के प्रति अधिक वचनबद्धता प्रदर्शित करते हैं।

भावी अनुसंधान हेतु सुझाव

शोधकर्ता द्वारा "प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता, (अलीगढ़ जनपद के संदर्भ में)" नामक विषय पर किए गए शोध अध्ययन में शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति विभिन्न विषयों, वर्गों को वचनबद्धता का अध्ययन किया गया है तथा उनकी तुलनात्मक विवेचना भी की गई है। किसी भी देश की उन्नति में शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। जिसमें प्राथमिक शिक्षा अग्रणीय भूमिका निभा रही है। प्राथमिक शिक्षा के महत्त्व को देखते हुए उस पर और गहन एवं विशद अध्ययन किए जा सकते हैं। इस समस्या से संबंधित भावी शोध की निम्न संभावनाएँ हो सकती हैं–

1. प्रस्तुत अनुसंधान 1 जनपद के अंतर्गत किया गया है। भावी अनुसंधानकर्ता उत्तर प्रदेश के स्तर पर भी अध्ययन कर सकते हैं।
2. प्रस्तुत अनुसंधान में विभिन्न वर्गों, समुदायों के 100 शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है। भावी अनुसंधानकर्ता ज़्यादा बड़ा न्यादर्श लेकर अनुसंधान कर सकते हैं। जिससे निष्कर्ष अधिक सटीक एवं विश्वसनीय होंगे।

संदर्भ

कपिल, एच. के. 1991. *अनुसंधान की विधियाँ.* कचहरी घाट, आगरा.

कश्यप, सुभाष. 1992. *हमारा संविधान.* नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया. पृ.सं. 102.

जैन, अलका. 1996. *अनौपचारिक शिक्षा केंद्रों के अनुदेशकों की बालकेंद्रित शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं उनकी समस्याओं का अध्ययन.* राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, अजमेर (राज.).

पांडेय, रामशकल. 1997. *भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्याएँ.* पांडेय रामशकल. पृ.सं. 233.

पांडेय, रामशकल. 1997. *भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्याएँ.* पृ.सं. 233.

रायज़ादा, बी.एस. *शैक्षिक अनुसंधान के आवश्यक तत्व.* राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर.

शर्मा, आर. ए. 1997. *शिक्षा अनुसंधान.* सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ. पृ.सं. 121.

सिंह, राजेंद्र पाल. 1992. *भारतीय आधुनिक शिक्षा. वर्ष 9*, तृतीय. पृ.सं. 46.

लिखने की शुरुआत — एक संवाद

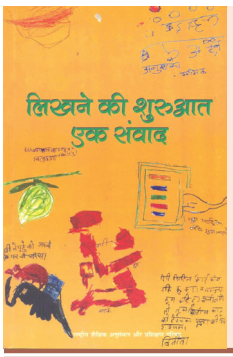

पुस्तक का नाम	*लिखने की शुरुआत – एक संवाद*
पृष्ठ संख्या	130
मूल्य	₹ 165
प्रकाशन	अक्तूबर 2013, प्रथम संस्करण
प्रकाशक	राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली

पढ़ने-लिखने की सार्थक शुरुआत स्कूली शिक्षा के आरंभिक दौर का एक अहम् हिस्सा है। सीखने-सिखाने के संदर्भ में शिक्षकों के साथ संवाद स्थापित करने की पहल एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा 2008 में की गई और पढ़ने की समझ शीर्षक से शिक्षक संदर्शिका प्रकाशित हुई। इस संदर्शिका में पढ़ने से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करने के साथ-साथ 'लिखित भाषा और कक्षा का स्वरूप' विषय पर भी विचार किया गया। विभिन्न शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में संदर्शिका के प्रयोग के दौरान यह महसूस किया गया कि लिखने की शुरुआत और लिखने के विभिन्न चरणों पर शिक्षकों से संवाद को और विस्तार देने की ज़रूरत है। इस ज़रूरत के आधार पर ही इस पुस्तक *लिखने की शुरुआत – एक संवाद* की परिकल्पना की गई। विविध अनुभवों से ज्ञात हुआ है कि लिखने को लेकर कक्षा एक और दो में जो वर्तमान परिदृश्य है उसमें बदलाव तथा शिक्षकों की समझ और रवैये पर विचार-विमर्श की ज़रूरत है। हमने पाया कि कक्षा में प्रिंट समृद्ध वातावरण की मौजूदगी से बच्चों में अपने आप पुस्तकें पढ़ने की ललक पैदा हुई है और साथ ही साथ पूरी पुस्तक पढ़ पाने का आनंद और विश्वास भी! पर विश्वास का अभाव लेखन के रूप में अपनी बात न कहने में अभी कायम है। अक्षर पहचान, अक्षरों की बनावट, सुलेख और सही वर्तनी पर ही पूरी ऊर्जा लगाकर बच्चे में लिख पाने का

आत्मविश्वास जगाना टेढ़ी खीर है। इस पुस्तक के अलग-अलग अध्यायों में दी गई अध्ययन-सामग्री द्वारा इस विमर्श तथा संभावित बदलाव के लिए बहुत सारी संभावनाएँ खोजी गई हैं। कक्षा एक में पहले दिन से ही लेखन की सार्थक शुरुआत कैसे हो? लिखने के विभिन्न चरण अपने आप में कितने महत्त्वपूर्ण हैं? ऐसे कई महत्त्वपूर्ण मुद्दों को इस पुस्तक में चर्चा का विषय बनाया गया है। यह पुस्तक पढ़ने की समझ के साथ लिखने की शुरुआत के संबंध में शिक्षकों के साथ संवाद बनाने का प्रयास है।

छोटे बच्चे बोलना जानते हैं और तमाम चीज़ों को लेकर उनकी एक समझ भी होती है। पेंसिल, चॉक आदि से वे कागज़, स्लेट एवं दीवारों पर आड़ी-तिरछी लकीरों में कुछ लिखते हैं और अपने मन के विचारों और कल्पनाओं को अपनी लिपि में आकार देते हैं। हममें से अधिकांश इसे निरर्थक मानते हैं पर ये छोटी, लंबी, गोल तिरछी लकीरें इनके मन की बातें हैं, जो लिखने की प्रक्रिया का एक बेहद अहम् हिस्सा हैं। ये लकीरें हमसे बहुत कुछ कहती हैं। हम बच्चों के मन की इन आवाज़ों को कैसे सुनें, समझें और महसूस करें इस बारे में संदर्शिका के प्रथम अध्याय 'शुरुआती लेखन' में चर्चा की गई है।

दूसरे अध्याय में 'बच्चों के चित्र-लेखन' की चर्चा की गई है। चित्र वह आइना है जिसमें बच्चों के मासूम मन की मासूम रंगतों और उकेरी गई लकीरों को गहराई से जाना-समझा जा सकता है। दरअसल चित्र भी एक प्रकार से मन की प्रभावी अभिव्यक्ति है। ज़रूरत है तो बस उन्हें समझने की। यह सही है कि बच्चे और हम सब चित्रों से अधिक जुड़ते हैं और अपनी बात कहने के लिए इनका सहारा लेते हैं। बच्चे अपनी समझ, भावनाओं और कल्पनाओं तथा अपने परिवेश और रोज़मर्रा की बातों को चित्रों के माध्यम से व्यक्त करते हैं। संभव है कि ये चित्र सही आकार, अनुपात और उचित रंग में न हों, परंतु ये आड़ी-तिरछी लकीरों और सामान्य लेखन के बीच सेतु का काम करते हैं। बच्चों के चित्रों पर बातचीत कर, उनमें आ रहे बदलावों और प्रिंट के साथ जुड़ाव को रेखांकित कर तथा जीवन के विविध अनुभवों से उसे जोड़कर शिक्षक बच्चों के लेखन और उनकी सृजनात्मकता को दिशा दे सकते हैं।

कक्षा एक और दो में लेखन की पारंपरिक प्रणाली में बच्चों की भाषा की जानकारी, उनके खेलगीत, उनकी सहज बातों की बजाय ज़्यादातर अक्षर लेखन और ऐसे लेखन पर बल दिया जाता है जिनका उनसे सीधा जुड़ाव नहीं होता। वे अपने आसपास के प्रिंट (रैपर, पोस्टर, टी.वी. कार्यक्रम आदि) जिनसे परिचित होते हैं उन्हें स्कूल में नहीं पाते। जब बच्चे को मन की बात लिखने का अवसर मिलता है तो घर और स्कूल की भाषा और विषयों का फ़र्क मिटता है।

अध्याय तीन 'कक्षा एक और दो में लेखन – एक दृष्टिकोण' में लिखना–पढ़ना और समझना इन तीनों को एक-दूसरे के पूरक के रूप में देखा गया है और उन अवसरों और संभावनाओं पर बात की गई है जिसमें बच्चे

गलत होने के भय से मुक्त होकर ज़्यादा से ज़्यादा अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकें।

किसी बच्चे की प्रगति में उसके कार्य पर बड़ों और साथियों की प्रतिक्रिया बहुत मायने रखती है और अकसर उसे सकारात्मक या नकारात्मक दिशा देती है। छोटी कक्षाओं में खास तौर से लेखन का आकलन करते समय अकसर बच्चों की समझ और मौलिकता की बजाय वर्तनी, लिखावट और व्याकरण आदि पर बल दिया जाता है और इसकी त्रुटियों को बच्चों की समझ की कमी से जोड़ा जाता है। संदर्शिका के चौथे अध्याय 'लेखन का आकलन' में भाषा के यांत्रिक (वर्तनी आदि) पक्ष की बजाय इस बात पर बल दिया गया है कि बच्चे खुलकर अपने मन की बात कह पाएँ, उनके लेखन का उद्देश्य हो तथा लेखन में हर बच्चे की अपनी खास विशेषताएँ उभरकर सामने आएँ। कुछ भी पढ़ने और जैसी मर्ज़ी वैसे खेल खेलने की तरह लेखन या चित्र बनाना भी हर तरह के बंधन से मुक्त हो। बच्चे ऐसा कर पाएँ इसके लिए आकलन की रूपात्मक पद्धति (जिसमें बच्चों की प्रतिदिन की गतिविधि का आकलन होता है) पर बल दिया गया है। बच्चों का आकलन इस तरह का हो जो उन्हें बोझ न लगे और वे उसे अपने मन की बात व्यक्त करने और मज़ेदार कार्य करने के रूप में देखें।

पाँचवाँ अध्याय 'कार्य-योजना' का है। इसे विसंगति ही कहा जाएगा कि छोटे-से-छोटे काम को करने से पहले हम उसकी तैयारी करते हैं और प्रत्येक चरण की एक योजना बनाते हैं परंतु शिक्षण के बारे में हम यह मानकर चलते हैं कि यह तो यूँ ही हो जाएगा। इस अध्याय में शिक्षक की प्रत्येक योजना के प्रभाव और लेखन-पठन की प्रक्रिया को सार्थक एवं रुचिकर बनाने में एक सुगठित तथा व्यवस्थित दैनिक कार्य-योजना की भूमिका पर विचार किया गया है। योजना के माध्यम से कक्षा एक और दो के कार्यों को ज़्यादा से ज़्यादा संतुलित बनाने, विभिन्न कार्यों को सही समय पर उचित ढंग से पूरा कर पाने और सभी बच्चों का समुचित विकास करने में मदद मिलती है।

पुस्तक से कुछ अंश यहाँ दिए जा रहे हैं–

कक्षा को लिखत/प्रिंट समृद्ध बनाने के लिए कुछ गतिविधियाँ

बच्चों की स्कूल की दिनचर्या को पढ़ने-लिखने की गतिविधियों से जोड़ते रहना चाहिए। निम्नलिखित गतिविधियों को आधार बनाकर कक्षा के लिए लिखत/प्रिंट तैयार किया जा सकता है। यह लिखत/प्रिंट बच्चों को पढ़ने-लिखने के सार्थक अवसर भी प्रदान करेगा।

- सप्ताह में एक बार योजनाबद्ध तरीके से खेल का आयोजन करवाएँ।

इसके लिए सबसे पहले बच्चों के साथ मिलकर खेल का चुनाव करें। कुछ इस तरह का चार्ट खेल से 3-4 दिन पहले बनाएँ–

खेल का नाम	*दिन*	*टीम क या 1*	*टीम ख या 2*

पूरे कॉलम भरने पर चार्ट को कक्षा में ऐसी जगह लगाएँ, जिसे बच्चे आसानी से पढ़ सकें।

बच्चों को प्रिंट से रू-ब-रू कराने के लिए आप बच्चों से अपना और अपने साथियों का नाम चार्ट में खोजने के लिए कह सकते हैं।

खेल के आयोजन की समाप्ति पर 'परिणाम' (रिज़ल्ट) का भी चार्ट कक्षा को लिखत/प्रिंट समृद्ध बनाने के लिए लगाया जा सकता है। गतिविधि के रूप में चार्ट में जीतने वाली टीम के बच्चों के नाम और खेलों का नाम, दिन का नाम इत्यादि तालिका में बच्चों के पढ़ने के लिए लिख दें।

- इसी तरह आप बच्चों के साथ मिलकर कहानी पढ़ने का दिन निश्चित करें। फिर इस तरह चार्ट बनाएँ–

कहानी का नाम	*लेखक का नाम*	*कहानी पढ़ने का दिन*	*समय*

सारे कॉलम भर लीजिए। समय के कॉलम में आप लिख सकते हैं खाना खाने से पहले/खाना खाने के बाद।

चार्ट को कक्षा में लगाएँ और बनाई गई योजना के अनुसार कहानी पर आधारित गतिविधियाँ कराएँ। एक दूसरी गतिविधि के रूप में बच्चों के साथ मिलकर कहानी बनाएँ और उसे दर्शाएँ। बच्चों को नई बनाई कहानी पढ़ने का समय और अवसर दें। बच्चों द्वारा कहानी के पात्रों को आधार मानकर अभिनय करवाएँ।

- बच्चों द्वारा एकत्रित जानकारियों, खबरों इत्यादि को लिखकर कक्षा में लगाएँ और समयानुसार इन पर बातचीत करें।
- स्कूल संबंधी जानकारियों को भी कक्षा में लिखित रूप से लगवाएँ। इन जानकारियों पर आप बच्चों से बातचीत करें।
- आप उपस्थिति चार्ट और मिड-डे-मील के बारे में बच्चों की जानकारी को भी दीवार पर प्रदर्शित कर सकते हैं। बच्चों के मनपसंद खान-पान की जानकारी को भी लिखत/प्रिंट के रूप में इस्तेमाल कर पढ़ने-लिखने की गतिविधियाँ तैयार की जा सकती हैं।
- स्कूल की प्रात:कालीन सभा में भी आप बच्चों को कविताएँ, लोकगीत, कहानियाँ सुनाने का मौका दे सकते हैं। कक्षा 1 और 2 में ऐसी गतिविधियाँ समूह में करवाएँ जिनसे बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ेगा। बच्चों की तैयारी के साथ योजना का एक चार्ट बनाएँ, जैसे–

कविता/कहानी/लोकगीत का नाम	**बच्चों के नाम**	**दिन**	**तारीख**

कक्षा का अर्थपूर्ण लिखत/प्रिंट से समृद्ध वातावरण बच्चों को पढ़ने-लिखने की गतिविधियाँ करने में सहायक होता है। बच्चों को अलग-अलग स्थितियों में पढ़ने से योजना बनाकर काम करने की आदत भी बनने लगती है। इस तरह की गतिविधियों को करने से बच्चे स्कूल से जुड़ाव महसूस करेंगे और स्कूल में आने के अपने उद्देश्य स्वयं निश्चित करेंगे। प्रस्तावित कुछ गतिविधियों से कक्षा संचालन में बच्चों और शिक्षकों की भागीदारी सुनिश्चित होने लगेगी जो कि अपने आप में एक उपलब्धि होगी।

कक्षा एक और दो में लेखन एक दृष्टिकोण

अपने आसपास कक्षा 1 और 2 के बच्चों को पढ़ना-लिखना सीखने के नाम पर अक्षर, उनकी ध्वनि, बनावट और उनसे शुरू होने वाले एक-एक शब्द को अच्छी तरह से रटते देखने का अनुभव शायद किसी भी पाठक के लिए नया नहीं होगा। दूसरी तरफ़ इन्हीं बच्चों का अपने खेलों में अलग-अलग खेलगीतों का इस्तेमाल करना, शब्दों के साथ खेलना, तुकबंदी करना, खेल-खेल में किसी का अभिनय करते हुए उस व्यक्ति जैसी बातचीत करना, और तो और अकेले खेलते समय अपनी क्रियाओं के बारे में सोचते हुए साथ-साथ बोलना आदि भी कुछ ऐसे अनुभव हैं जो अपने आप में काफ़ी मायने रखते हैं। हम जानते हैं और मानते भी हैं कि बच्चे सही और प्रभावी रूप से बात करने, सोचने, खेलने के लिए भाषा का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन ऐसा क्यों होता है कि बच्चों के ये व्यवहार, जो भाषा पर उनकी पकड़ के साथ-साथ भाषा के बारे में उनकी जानकारी और समझ को दर्शाते हैं-कक्षा की दहलीज़ के बाहर रह जाते हैं, क्यों बच्चों की भाषा संबंधी ये उपलब्धियाँ शुरुआत में बताए गए अक्षर सीखने के शोर में कहीं खो जाती हैं? क्या पढ़ना-लिखना सीखने का आरंभ स्कूल में अक्षर सीखने से ही शुरू होता है? इन सवालों के जवाब के लिए हमें सबसे पहले यह समझने की ज़रूरत है कि बच्चे भाषा-प्रयोग की जिस समझ के साथ स्कूल में आते हैं, उसका पढ़ने-लिखने के साथ गहरा संबंध है।

क्या है पढ़ना और लिखना?

अक्षर और उसकी ध्वनि का आपसी संबंध सीखना ही आम तौर पर पढ़ना-लिखना सीखने की शुरुआत समझा जाता है। यह समझ कक्षा में अक्षर, शब्द, वाक्य और फिर शायद कहानी या कविता पढ़-लिख पाने के क्रम में नज़र आती है। अब ज़रा गौर करते हैं कि बात करना सीखना या बच्चों द्वारा मौखिक भाषा का उपयोग करना भी क्या ऐसी क्रमबद्ध और औपचारिक शिक्षा के मोहताज हैं? बच्चे रोज़मर्रा की विभिन्न स्थितियों में बड़ों को एक-दूसरे से बात करते हुए सुनते हैं। धीरे-धीरे बच्चे खुद अपने विचार दूसरों तक पहुँचाने के लिए मिलती-जुलती संरचनाओं का इस्तेमाल करने लगते हैं और बड़ों की प्रतिक्रिया के अनुसार उन्हें बदलते चलते हैं। यह कौशल बातचीत के स्वाभाविक और अर्थपूर्ण संदर्भ में विकसित होता है।

इसी उम्र में बच्चे अपने आसपास की लिखित सामग्री, जैसे कि बिस्कुट और टॉफ़ी की पन्नी, सड़क पर लगे निर्देश बोर्ड और पोस्टरों आदि को पढ़ने की कोशिश करते हैं। हाथ में कलम, पेंसिल या स्लेटी आते ही आड़ी-तिरछी लकीरें खींचकर उनके साथ कोई अर्थ या संदेश जोड़ने की कोशिश करते हैं- यह भी लिखने की शुरुआत का हिस्सा है। ये उनकी प्रारंभिक साक्षरता के संकेतक हैं, अर्थ गढ़ने के सहज प्रयास के ही रूप हैं- किसी औपचारिक शिक्षा

का परिणाम नहीं। असल में रोज़मर्रा के अर्थपूर्ण और कार्यात्मक संदर्भों में मौखिक भाषा के विकास की ही तरह पढ़ने-लिखने की समझ भी विकसित होती है।

कक्षा में लेखन का स्वरूप

अब विचारणीय यह है कि आरंभिक साक्षरता की इस अवधारणा को और अधिक विस्तार एवं गहनता से समझना और कक्षा में स्थान देना क्यों आवश्यक है और बच्चों का सीखना एक सार्थक कार्य कैसे बने? स्कूल में आए बच्चे पहले से ही बोलचाल की भाषा के ज्ञान और पढ़ने-लिखने की कुछ महत्वपूर्ण अवधारणाओं से लैस होते हैं। यदि सिखाने की प्रक्रिया बच्चों की इस क्षमता को ज़रूरी आधार मानकर स्वाभाविक तरीके से आगे बढ़ाई जाएगी तो पढ़ना-लिखना सीखना एक रुचिकर और अर्थपूर्ण अनुभव हो जाएगा।

बच्चों के चित्रों की टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें भी बहुत कुछ कहती हैं। चित्र बनाने का अवसर उन्हें अपने अनुभव तथा अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित करता है। लिखने के इस चरण में ऐसे निजी अर्थ को सर्वमान्य या साँझे रूप से समझने के लिए यदि शिक्षक बच्चे के द्वारा उसके चित्र के बारे में बताए गए नाम या संदेश को ज्यों का त्यों लिख दें तो लिखने के कार्यात्मक प्रयोग से बच्चा उसी पल अवगत होने लगता है। लिखत/प्रिंट का प्रयोग कुछ अर्थपूर्ण कहने के लिए हुआ है, ऐसे ही कार्यों से साक्षरता की अवधारणा स्पष्ट होती जाती है। पढ़ने-लिखने के बढ़ते अवसरों के साथ यह समझ और भी गहरी होती जाती है। साथ-ही-साथ लिखने के तकनीकी पहलू सामने आने लगते हैं, जैसे – लिखने की दिशा बाएँ से दाएँ (हिंदी में) या दाएँ से बाएँ, (उर्दू में), संकेतों की आकृति, दो शब्दों के बीच की खाली जगह, देवनागरी लिपि में शब्द के ऊपर लकीर खींचना आदि।

इन अवधारणाओं की समझ बच्चों के स्वयं 'लिखने' के प्रयास में धीरे-धीरे नज़र आने लगती है, ज़रूरत है तो सिर्फ़ सही अवलोकन की।

लेखन के इसी परिप्रेक्ष्य में पठन-लेखन के गहरे संबंध को समझना होगा। दरअसल, अर्थपूर्ण गतिविधियों के माध्यम से पढ़ते समय समझने और सोचने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करना ज़रूरी है अन्यथा अक्षरों की आवाज़ को मिलाकर बोल पाना ही 'पढ़ना' मान लिया जाएगा। लिखने की तरह पढ़ने की प्रक्रिया में भी अर्थ समझने की प्राथमिकता को स्वीकार करते हुए बच्चे धीरे-धीरे पढ़ पाने के कौशल की बारीकियों को समझने लगते हैं, जैसे-पढ़ने की दिशा, संदर्भ से पठन सामग्री का अनुमान लगाना आदि। इस संदर्भ में ध्वनि-अक्षर के संबंधों की समझ भी बनने लगती है।

अक्षर-ध्वनि संबंध

दो शिक्षकों के बीच जिस मुद्दे पर संवाद हो रहा है यह वास्तव में कई शिक्षकों के मन में आता है। परंतु गौरतलब बात यह है कि लिखत (प्रिंट) के साथ जुड़ने के लगातार मौकों से बच्चों में लिखत की अवधारणा के साथ अक्षर-ध्वनि

संबंधों की समझ भी बनती चली जाती है। हाँ, यह संभव है कि कुछ अक्षरों की ध्वनियों की पहचान बच्चों को कभी-कभी किसी दूसरे द्वारा ध्यान दिलाने से ही स्पष्ट होती है। बार-बार प्रयोग में आने वाले अक्षरों के ध्वनि-संकेतों की पहचान बच्चों को स्वत: ही हो जाती है। जैसा कि चित्र में भी आप देख सकते हैं कि बच्चे को ' ' और 'ो' के ध्वनि-संकेतों में उलझन है। पर साथ ही उसे यह ज्ञान भी है कि ' ' और 'ो' मिलती-जुलती आवाज़ों के चित्र हैं। इसलिए आवश्यकता के अनुसार शिक्षक अक्षर-ध्वनि संकेत पर भी ध्यान आकर्षित कर सकते हैं। यह बिलकुल ज़रूरी नहीं कि उन्हें ऐसा दोहराव हमेशा करना पड़े। किसी कहानी या संदर्भ में यदि किसी खास अक्षर/वर्ण की पुनरावृत्ति हो रही है तो कक्षा में सभी बच्चों के साथ इस संभावना पर भी ध्यान दिया जा सकता है। उदाहरण के लिए 'हाथी की हिचकी' कहानी में 'ह' की पुनरावृत्ति इसके लिए उपयुक्त हो सकती है। पर शुरुआती स्तर पर मात्राओं पर अलग से बल देने की ज़रूरत नहीं है। किसी खास वर्ण की तुलना में मात्राओं का

इस्तेमाल बच्चे हर शब्द में देख सकते हैं। इस तरह खुद ही उनकी मात्राओं के इस्तेमाल की कुछ समझ बन जाती है। कक्षा एक और दो में हमारा ध्यान बच्चों को शुद्ध वर्तनी सिखाने पर नहीं बल्कि इस बात पर होना चाहिए कि बच्चे अपने मन की बात स्ववर्तनी में भी बेझिझक व्यक्त करते हैं। नीचे दिए गए उदाहरण से हमें यह पता लगेगा कि बच्चों में अक्षर ध्वनि संबंध बनाने में शिक्षक और लिखत/प्रिंट समृद्ध वातावरण की क्या भूमिका होती है।

आज की कार्य-योजना के तहत मैंने सोचा कि आज रीना पर खास ध्यान दूँगी। जब सभी बच्चे रीडिंग कॉर्नर से किताबें पढ़ रहे थे, मैंने रीना से कहा कि अपनी पसंद की कहानी की किताब लाए। वह लालू और पीलू की किताब लाई। हम दोनों ने मिलकर चित्रों की मदद से कहानी पढ़नी शुरू की। रीना ने चित्रों में दिख रहे पात्रों को नाम देना शुरू किया और मैं चित्रों में हो रही घटनाओं का विवरण दे रही थी। उसके विवरण देने के बाद मैं पृष्ठ पर लिखी लाइन को अँगुली रखकर उसके लिए पढ़ देती। इस तरह हमने पूरी किताब पढ़ ली। फिर मैंने रीना से कहा कि अब वह स्वयं उस कहानी को पढ़े। वह किताब लेकर अपनी जगह पर बैठ गई और अपनी सहेली के साथ किताब पढ़नी शुरू कर दी। थोड़ी ही देर में वह किताब लेकर मेरे पास आई और कहा 'अब मैं पढ़ सकती हूँ।' मुझे उसका आत्मविश्वास देखकर खुशी हुई। मैंने कहा, चलो पढ़ते हैं।" उसने पहले पृष्ठ पर चित्रों से ही कहानी पढ़ी। फिर वह नीचे लिखे वाक्यों को पढ़ने की कोशिश करने लगी। उसने लिखत से लालू और मुर्गी को पहचान लिया। दूसरे पृष्ठ पर मैंने उसका ध्यान पीलू की ओर दिलाया फिर यह तीन शब्द वह हर पृष्ठ पर पहचानती गई। (शिक्षक की अनुभव डायरी पर आधारित एक घटना)

अक्षर-ध्वनि संबंध की समझ बच्चों के लेखन में लगातार झलकती है। शिक्षक अब एक और महत्वपूर्ण अवधारणा बच्चे के लेखन में देख सकते हैं और लिखने की प्रक्रिया ऐसे सार्थक अवसरों में परिपक्व होती हुई धीरे-धीरे पारंपरिक लेखन की ओर बढ़ती जाती है। बच्चे अपनी बात लिखने के प्रयास में अक्षर-ध्वनि संबंधों की समझ का इस्तेमाल करते हुए वर्तनी की खोज भी करने लगते हैं।

स्ववर्तनी लेखन के कुछ नमूनों में प्रयास प्रोत्साहन योग्य हैं; बच्चों की अपनी दिली-बात लिखकर बताने की ललक इनमें साफ़ झलकती है। परंतु अकसर शिक्षकों को वर्तनी की ये 'त्रुटियाँ' स्थायी लगती हैं और इस कारण इन्हें अन्य 'त्रुटियों' की तरह डाँट-डपटकर सुधारने की कोशिश की जाती है।

बोलना सीखने की प्रक्रिया में भी बच्चों की ज़ुबान जब जाने-माने शब्दों से मिलते-जुलते शब्द बनाती है तो क्या हम उसे प्रोत्साहित नहीं करते? तो फिर लिखना सीखने की स्वाभाविक प्रक्रिया में स्ववर्तनी की खोज के ये उदाहरण चिंताजनक क्यों? **अर्थपूर्ण संदर्भ में लिखित सामग्री से बढ़ते संपर्क स्ववर्तनी को भी पारंपरिक लेखन की ओर ले जाते**

हैं इसलिए लिखने के साथ-साथ पढ़ने के अवसर बनाए रखना भी अत्यंत आवश्यक है साथ ही पढ़ने-लिखने की समझ को एक स्वाभाविक, विकासात्मक नज़रिए से बढ़ावा देना ज़रूरी है।

पढ़ने-लिखने का संबंध

कक्षा में लेखन के परिप्रेक्ष्य में एक बार फिर पढ़ने-लिखने का संबंध समझना अनिवार्य है। जैसे कि पहले बात की गई है, ये दोनों प्रक्रियाएँ एक-दूसरे की पूरक हैं। पठन में सीखी गई अवधारणाएँ और कौशल लेखन में काम आते हैं और लेखन की पठन में। अत: बच्चों के लिखित संदेशों को उन्हीं के द्वारा ज़रूर पढ़ाया जाना चाहिए तथा पढ़ी हुई सामग्री से संबंधित

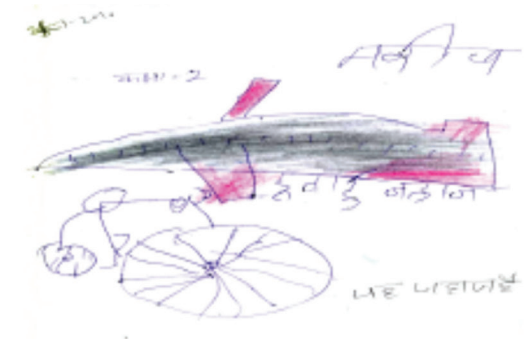

लेखन का कार्य देना चाहिए। इससे पढ़ी हुई सामग्री की समझ बच्चों को अपने निजी अनुभवों की अभिव्यक्ति में सहायता करेगी। यह प्रक्रिया लेखन को अर्थपूर्ण संदर्भों में प्रयोग करने के लिए प्रेरित करेगी। कुछ लेखकों का यह भी मानना है कि पढ़ने से उनके निजी अनुभवों का विस्तार होता है और नये अनुभव, अनुभव कोष में जुड़ जाते हैं जिसकी झलक लेखन में देखी जा सकती है। लेखन के दौरान एक लेखक अपने विचारों के साथ जूझते हुए उन्हें कागज़ पर उतारने की कोशिश करता है। यह प्रक्रिया पढ़ने-लिखने के बीच घनिष्ठ संबंध बनाने में और इन्हें गहराई से समझने में सहायक होती है। एक स्थायी पाठक और अच्छा लेखक बनाने में यही कौशल महत्वपूर्ण है।

कक्षा में लेखन के मौके

प्राय: कक्षाओं में लेखन की समझ पठन की तरह ही वर्णमाला की शुरुआत पर निर्भर मानी जाती है। इसके पीछे धारणा यह है कि लिखित कार्य तो वर्णमाला सीख लेने पर ही संभव है। वर्णमाला के ज्ञान के बाद भी बच्चे अपने

विचारों, अपने अनुभवों को अभिव्यक्त नहीं कर पाते। आमतौर पर कक्षा में बच्चों के विचारों और विषयवस्तु से अधिक तकनीकी पहलू, जैसे-वर्तनी, लिखावट आदि पर ध्यान दिया जाता है। इसके परिणामस्वरूप कक्षा में लेखन कार्य वर्णमाला की सुंदर लिखावट, सुलेख,

प्रश्न-उत्तरों को देखकर लिखना, श्रुतलेख आदि तक ही सीमित होता है। ऐसे अभ्यास बच्चों की लिखने की स्वाभाविक इच्छा पर रोक लगा देते हैं और अपनी बातें लिखने की उत्सुकता कहीं खो जाती है। लिखना सीखने-सिखाने का यह तरीका बच्चों की सक्रिय खोज और लेखन के उद्देश्य, 'अभिव्यक्ति' के विरुद्ध जाता है। कक्षा में लेखन कार्य इस प्रकार का हो जो स्वाभाविक और विकासात्मक दृष्टि से बच्चे को एक सक्रिय लेखक बनने के अवसर देता हो। लेखन को संप्रेषण का, अपनी बात कहने, कल्पना करने, जानकारी देने, सूचित करने, पता लगाने, खोज करने, भावों को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम समझना चाहिए। किसी भी आयु या स्तर पर लेखन-कार्य ऐसा हो जो बच्चों को लेखन के इस कार्यात्मक प्रयोग से संबंध बनाने का अवसर दे। नीचे दिए कुछ बिंदु ऐसी गतिविधियों का निर्माण करने में सहायक हैं –

1. **बाल-साहित्य और लेखन** – लिखने के विषय और लिखकर कुछ कहने के अवसर प्रायः शिक्षक द्वारा सुनाई गई कहानी से जुड़े होने चाहिए। बच्चों की लिखने की समझ और कौशल के अनुसार शिक्षक कहानी के किसी अंश से मिलता-जुलता अनुभव बच्चों को चित्र द्वारा अभिव्यक्त करने के लिए कह सकते हैं। इस चित्र पर शिक्षक बच्चे के अनुभव को उसी के शब्दों में लिख सकते हैं अथवा थोड़े बड़े बच्चे वह बात खुद लिखने का प्रयास कर सकते हैं। इस प्रयास में भी शायद कोई बच्चा केवल कुछ वस्तुओं और व्यक्तियों के नाम लिखे या स्ववर्तनी में पूरा वाक्य। शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह इन साक्ष्यों को रिकॉर्ड कर उनका आकलन करे और प्रत्येक बच्चे के मौजूदा कौशल को समझकर उसे आगे लेकर जाने के उचित अवसर प्रदान करे।

   कहानी के पात्रों को नाम देना, कहानी का नया शीर्षक लिखना और कहानी को आगे बढ़ाना आदि लेखन के अन्य अवसर हैं। कविताओं में तुकबंदी वाले शब्द बच्चों का ध्यान आकर्षित करते हैं तथा इसी रुचि को महत्त्व देते हुए बच्चे आगे बढ़ाई गई कविता की पंक्तियों में ऐसे शब्द खुद लिख सकते हैं अथवा कविता की समझ के आधार पर स्वयं पंक्तियाँ जोड़ सकते हैं।
2. **अनुभव-आधारित लेखन** – बच्चों के रोज़मर्रा की कक्षा और कक्षा के बाहर के अनुभव भी लिखने के महत्वपूर्ण अवसर हैं। रोज़ाना कक्षा का कुछ निर्धारित समय पिछले दिन का अनुभव बाँटने और उन अनुभवों को लिखने के लिए दिया जा सकता है।
3. **पाठ्यपुस्तक का प्रयोग** – शिक्षक लेखन के अवसरों के लिए पाठ्यपुस्तक में दी गई कहानियाँ और कविताएँ भी उपयोग में ला सकते हैं। ध्यानपूर्वक बनाई गई योजना कक्षा में मौजूद अन्य बाल साहित्य से इन पाठों का संबंध बना सकती है और बच्चे अब एक ही विषय से संबंधित सामग्री का आनंद ले सकते हैं। पाठ्यपुस्तक संबंधित लिखने की गतिविधियाँ भी पारंपरिक प्रश्नोत्तर,

रिक्त स्थान भरो आदि के बजाय रुचिकर और अर्थपूर्ण बनाई जाएँ तो लेखन जल्दी ही अभिव्यक्ति का एक मज़ेदार माध्यम बन जाएगा।

4. **लिखत/प्रिंट समृद्ध कक्षा का लेखन में सहयोग** – बच्चों द्वारा लिखे गए नाम, शीर्षक, अनुभव, कहानियाँ आदि कक्षा में प्रदर्शित करने से भी लेखन को प्रोत्साहन मिलता है। कक्षा में स्थान प्राप्त करने से ज़्यादा अपने लेखन के लिए एक प्रामाणिक पाठक और कारण का होना लेखन कार्य को और सार्थक बनाता है। शिक्षक द्वारा लिखी गई 'आज की बात' (मॉर्निंग मैसेज) धीरे-धीरे बच्चों द्वारा भी शिक्षक या एक-दूसरे के लिए संदेश लिखने के रूप में नज़र आती है। इसी प्रकार पुस्तकसूची में हर सप्ताह पढ़ी गई कहानी और कविताओं का नाम लिखना भी लेखन का अर्थपूर्ण तरीके से एक प्रयोग है।

लेखन को अपने विचार, कल्पनाओं और अनुभवों की अभिव्यक्ति के लिए एक माध्यम समझा जाना आवश्यक है। यह दृष्टिकोण प्रारंभिक साक्षरता की नींव है और पढ़ने-लिखने का यह नज़रिया ही अर्थपूर्ण अधिगम के लिए महत्वपूर्ण है।

शुरुआती लेखन

उन लाखों बच्चों में से, जो हर साल पहली कक्षा में दाखिला लेते हैं, अधिकांश ऐसे घरों और परिवेश से आते हैं जहाँ पढ़ने-लिखने को लेकर बच्चों के अनुभव समृद्ध नहीं होते। ऐसी स्थिति में शिक्षकों के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है कि वे दो बातों का खास ध्यान रखें–बच्चों के शाला में आने से पूर्व के अनुभवों के मायने समझना और इन अनुभवों को शाला के कार्य की नींव बनाना। बच्चों के लिए दैनिक अनुभव ही अमूल्य जानकारी के स्रोत हैं जिन्हें कक्षा में बड़े ही सकारात्मक तरीके से आगे बढ़ाना चाहिए। यह समझ बनाना इसलिए ज़रूरी है ताकि शाला में आने से पूर्व बच्चों के पास उनके अनुभवों का जो अथाह भंडार है उसे वे कक्षा में पर्याप्त स्थान दे सकें। इन अनुभवों का उपयोग सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में कर सकें। क्या हम ऐसा कर पाते हैं?

हम यह समझते हैं कि पढ़ना-लिखना मूल रूप से विद्यालय में ही शुरू होता है पर ऐसा नहीं है। हमारे घरों में और आस-पास लिखत/प्रिंट सामग्री मौजूद है, बस ज़रूरत है तो सिर्फ़ ध्यान देने की। घर के बाहर लिखा नंबर, घर की दीवारों पर बने लोकचित्र (मांडना), कैलेंडर, स्टोव पर लिखा कंपनी का नाम, बर्तनों पर उकेरा गया घर के मुख्य सदस्य का नाम, बाजू पर नाम के टेटू चिह्न, अखबार का पन्ना, सामान खरीदने पर मिली पर्चियाँ, मंजन का डिब्बा, आदि। हर बच्चे के आस-पास लिखत/प्रिंट सामग्री मौजूद है–हाँ, वह कम या ज़्यादा हो सकती है। महत्वपूर्ण यह है कि उस लिखत/प्रिंट सामग्री पर कितना ध्यान दिया जा रहा है। यहाँ मूल बात यह है कि बच्चों में यह समझ बन जाती है कि लिखत/प्रिंट सामग्री अर्थपूर्ण है, क्योंकि अधिकतर वह लिखत/प्रिंट सामग्री उस चीज़

का नाम होता है या उस चीज़ के बारे में होता है जिस चीज़ पर वह प्रिंट मौजूद होता है। इस तरह लिखने-पढ़ने के बारे में कई अवधारणाएँ बच्चे में स्कूल आने से पहले ही बन जाती हैं।

राहुल रोज़ अपने चार साल के भाई रमन को विद्यालय में साथ ले आता। रमन रोज़ आकर कक्षा में एक कोने में बैठ जाता और कक्षा में हो रहे कार्य को देखता रहता। एक दिन वह उठकर शिक्षिका के पास गया और बोला, ''तुम मुझे मेरा नाम लिखना सिखाओगी?''

शिक्षिका ने उससे पूछा, ''वह नाम लिखना क्यों सीखना चाहता है?'' कक्षा में एक कोने में टँगी हुई किताबों की तरफ़ देखते हुए बच्चे ने भोलेपन से कहा, अगर मैं अपना नाम लिखना सीख जाऊँगा तो कहानी की किताबें पढ़ सकूँगा।"

रमन को लगता था कि अपना नाम लिखना सीख जाएगा तो किताबें पढ़ सकेगा। उसके इस तर्क का एक आधार है। कक्षा में वह यह देखता था कि सभी बच्चे किताबें पढ़ने का प्रयास करते थे और कुछ न कुछ लिखते थे।

रमन का यह तर्क इस बात की ओर संकेत करता है कि सुनने-बोलने-पढ़ने-लिखने में एक संबंध होता है। अब ज़ाहिर-सी बात है कि रमन के हाथ में पेंसिल दी जाए तो वह कागज़ पर कुछ-न-कुछ बनाएगा ज़रूर, क्योंकि उसका तर्क हमें बताता है कि वह लिखत की अर्थपूर्णता को समझता है और जानता है कि **बोली गई बात को लिखा जा सकता है और लिखी गई बात को पढ़ा जा सकता है।** अब जब रमन पेंसिल लेकर कागज़ पर कुछ लिखेगा तो हो सकता है वह कुछ ऐसा हो –

चित्र 1

चित्र 2

क्या हम इसे लिखना मानेंगे?

अगर हम कागज़ पर बने इन निशानों को किसी वयस्क की नज़र से देखेंगे तो शायद इसे लिखना कभी नहीं कह सकेंगे। यह एक वयस्क के लेखन जैसा प्रतीत नहीं होता इसलिए हम इसमें कोई अर्थ नहीं देख पाते। लेकिन अगर हम एक बच्चे की नज़र से देखेंगे तो इन आड़ी-तिरछी लकीरों में हमें एक अर्थ छिपा मिलेगा। उन शुरुआती महीनों में जब बच्चों का पेंसिल या रंग और कागज़ के साथ रिश्ता नया-नया ही होता है, बच्चे ऐसी आड़ी-तिरछी

लकीरों द्वारा ही अपने मन के विचारों और कल्पनाओं को कागज़ पर उतारते हैं। इन बिंदुओं, गोल आकृतियों एवं लकीरों में बच्चे सूरज से लेकर घास तक एवं अपने नाम से लेकर कहानी तक, सभी कुछ लिख देते हैं।

जिस तरह बच्चे एक स्वाभाविक प्रक्रिया के तहत ज़मीन पर घुटनों के बल चलते हैं, सहारा लेकर खड़े होते हैं, फिर चलना सीखते हैं उसी तरह पढ़ने-लिखने की प्रकिया के तहत भी कुछ ऐसे पड़ाव आते हैं जो स्वाभाविक हैं। जब बच्चा पहला शब्द बोलता है तो घर में खुशी की लहर-सी दौड़ जाती है। सभी उस बच्चे को घेरे यह उम्मीद करते हैं कि वह कब एक और शब्द बोलेगा। पर सोचने की बात यह है कि हम उसी बच्चे को तब क्यों नहीं उम्मीद भरी नज़रों और उत्साह से देखते हैं जब वह पहली बार पेंसिल पकड़कर एक लकीर खींचता है। **एक बच्चे के लिए किसी लिखित प्रतीक का अर्थ बनाना या ज़मीन, दीवार अथवा कागज़ पर पहली रेखा खींचना एक बहुत बड़ी उपलब्धि है–एक कदम है जो बच्चे ने उठा लिया है, एक पड़ाव पार करने की तरफ़।**

सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना, ऐसे कौशल हैं जिनमें बच्चे धीरे-धीरे प्रगति करते हैं। बच्चे से यह अपेक्षा करना कि वह किताब खोलकर सीधे ही फ़र्राटे से पढ़ ले एवं ध्वनि संकेतों को जोड़कर शब्द और वाक्य लिख सके, हमारी उस सोच का प्रतीक है जहाँ हम बच्चे को एक मशीन मान लेते हैं और पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया को एक यांत्रिक कौशल। जबकि पढ़ने-लिखने को बच्चों के अनुभवों से जोड़े रखना चाहिए और कल्पनाओं तथा विचारों को व्यक्त करने का ज़रिया बनाए रखना चाहिए जो कि शुरुआत में इन्हीं आड़ी-तिरछी रेखाओं के माध्यम से ही प्रकट होते हैं। (चित्र 3, 4, 5, 6)

अनु ने अभी हाल ही में पेंसिल पकड़नी शुरू की है। वह पेंसिल को अपनी चारों उँगलियों के बीच में ज़ोर से दबा लेती है और जिस तरह चाहा, वैसे ही घुमा देती है।

काशवी 2½ साल की है और उसे मिट्टी से खेलने में बहुत आनंद आता है। कभी तो मिट्टी गीली कर गोले बनाना शुरू कर देती है तो कभी लकड़ी लेकर लकीरें बना देती है।

चित्र 3

चित्र 4

चित्र 5

चित्र 6

विशु को उसके बड़े भाई ने वृत्त बनाना सिखाया है। आजकल विशु हर चीज़ को गोल बनाता है, चाहे वह टेलीफ़ोन हो या पलंग।

हममें से अधिकांश लोग बच्चों के इस तरह के काम को निरर्थक या उन बच्चों के मनगढ़ंत खेल समझकर कोई अहमियत नहीं देते। पर बच्चों की ये छोटी-लंबी, आड़ी-तिरछी, गोल लकीरें ही उनके मन की बातें हैं। बच्चों की ये लकीरें हमसे बहुत कुछ कहती हैं, उसी प्रकार जिस प्रकार हमारी किताबों में लिखे शब्द और वाक्य। बस फ़र्क इतना है कि किताब का प्रिंट हम पढ़ लेते हैं और इन लकीरों को हम समझना ही नहीं चाहते।

अर्जुन ने यह चित्र बनाया है जिसमें उसने बादल और बारिश का चित्र बनाया बनाई। यहाँ अर्जुन के मन में बादल का दृश्य सहज है और जब अर्जुन ने चित्र दिखाया तो उसकी अपेक्षा यही थी कि इसे देखकर दूसरे भी बादल और बारिश ही मानें। जिस प्रकार चित्र में उसे बादल और बारिश की आकृति दिख रही है उसी प्रकार यह गलत भी नहीं है। यहाँ सवाल यह नहीं कि बच्चे चित्रों में क्या बना रहे हैं, सवाल यह है कि हम बच्चों के चित्रों/लेखन को किस तरह देख रहे हैं।

हर बच्चे को अपनी बात को आड़ी-तिरछी लकीरों में उतार पाने में जो आनंद मिलता है, वह अध्यापक द्वारा बोर्ड पर लिखे हुए काम की नकल करने से ज़्यादा संतोषजनक होता है। हमने भी कभी-न-कभी अपने मन की बात लिखकर अभिव्यक्त करने में संतोष और उपलब्धि का एहसास किया होगा। तो सवाल उठता है कि बच्चों को इस एहसास से क्यों वंचित किया जाए। बच्चों को भी कक्षा में अभिव्यक्ति के अवसर मिलने चाहिए। बच्चों का मन भी बहुत सारी बातें कहने, बताने, बाँटने के लिए उत्सुक होता है। बस तलाश है उन अवसरों की जब उनकी बातों को सराहा और समझा जाएगा। शुरुआती दौर में बच्चों के लिए आड़ी-तिरछी लकीरें अभिव्यक्ति का एक माध्यम होती हैं। इन लकीरों में बातें हैं, अर्थ हैं, भाव हैं और पारंपरिक लेखन की ओर बढ़ने की क्षमता और विश्वास है। **बच्चों की आड़ी-तिरछी लकीरें पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया का एक बेहद ज़रूरी हिस्सा हैं। अगर हम इन आड़ी-तिरछी लकीरों को नहीं सराहेंगे तो बच्चे पढ़ने-लिखने की यांत्रिकता में ही उलझकर रह जाएँगे।** बच्चों की इन पहली लकीरों को कक्षा में बिना रोक-टोक स्वीकारना और उस पर बातचीत करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि ये लकीरें बच्चों के लेखन के वे पहले महत्वपूर्ण पड़ाव हैं जहाँ बच्चा पढ़ने-लिखने को सार्थकता से देख रहा है। वह यह समझ रहा है कि **मन की बात को लिखा जा सकता है और लिखी गई बात को पढ़ा जा सकता है।**

अब मन में सवाल उठ रहा होगा कि आड़ी-तिरछी लकीरों से बच्चे आगे कैसे बढ़ेंगे?

चित्र 7

लेखन की इस प्रक्रिया में बच्चों का आगे बढ़ना इस बात पर निर्भर करता है कि बच्चों को ऐसा माहौल

कितना मिल रहा है जो सार्थक 'प्रिंट' से समृद्ध है। यहाँ 'प्रिंट' से आशय सिर्फ़ दीवारों पर कहानियों, कविताओं के चार्ट बनाकर चिपका देने से नहीं है। प्रिंट की सार्थकता के मायने तब सिद्ध होते हैं जब उस प्रिंट (जैसे–कहानी, कविता आदि की किताबें, चार्ट, कक्षा में पढ़ने-लिखने से जुड़ी अन्य सामग्री) का बच्चों की रुचि एवं आवश्यकता के अनुसार भरपूर इस्तेमाल किया जा रहा हो।

कक्षा में पढ़ने की सामग्री के साथ सार्थक लेखन के अनगिनत मौके जुड़े हैं। जैसे-जैसे बच्चे लिखते हैं, वे प्रिंट को बारीकी से देखते हैं और अक्षर-ध्वनि के संबंध पर गौर करते हैं। उनकी यह समझ बननी शुरू होती है कि बाएँ से दाएँ की ओर पढ़ते और लिखते हैं (जैसे–देवनागरी में) पढ़ने को लेकर यह समझ बच्चों के लेखन में भी झलकती है। आइए, बच्चों के लेखन के दिए गए कुछ नमूनों में इसे देखने का प्रयास करते हैं–

यह प्रिया का लेखन है। प्रिया ने जब यह लिखा तो दाएँ से बाएँ की ओर लिखा। अगर हम कागज़ पर देखें तो दाईं ओर ज़्यादा कार्य किया गया है, क्योंकि शुरुआत दाईं ओर से की गई है। लेखन कार्य में बनी आकृतियाँ भी दाईं ओर से शुरू की गई थीं। प्रिया की यह समझ अभी पुख्ता नहीं हो पाई है कि बाएँ से दाएँ की ओर पढ़ा और लिखा जाता है। प्रिया को कहानियों की किताबों एवं सार्थक प्रिंट से जोड़े रखना होगा तथा पढ़ने और लिखने के उद्देश्यपूर्ण अवसर देने होंगे। (चित्र 8)

इस लेखन में प्रिया ने कुछ अक्षर भी लिखे हैं। प्रिया ने लिखने के बाद बताया नहीं कि क्या लिखा है? बस इतना कहा, मैं लिख रही हूँ!" प्रिया द्वारा अक्षरों की आकृति बनाना इस बात की ओर संकेत करता है कि उसकी यह समझ बनी है कि **लिखना अपनी बात को कहने का एक सार्थक माध्यम है।**

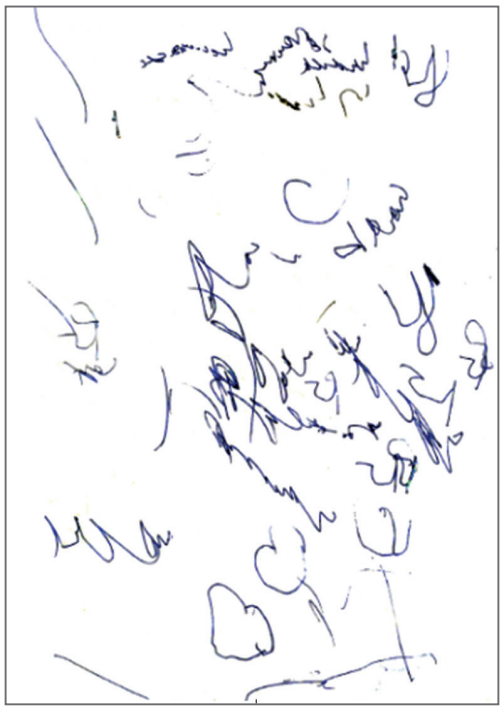

चित्र 8

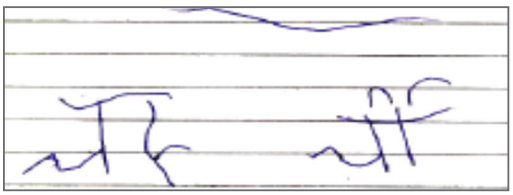

चित्र 9

तनिष्ठा (चित्र 9) ने लिखना चाहा कि 'छिपकली चींटी को खा गई'। उसने अपनी पूरी बात दो शब्दों में लिखी जिसमें पहला शब्द 'छिपकली' है और दूसरा 'चींटी', जो उसकी बात के दो मुख्य विषय हैं। तनिष्ठा का लेखन यह बताता है कि अभी उसकी ध्वनि-संकेत की समझ बन रही है। उसने ध्वनि को ध्यान से सोचकर लिखने का प्रयत्न किया, जैसे – **'छ'** के लिए **'चह'** लिखा और चींटी के लिए **'चीं'**। तनिष्ठा द्वारा 'छिपकली' और 'चींटी' अलग-अलग लिखना उसकी वाक्य और शब्द-संरचना की समझ को व्यक्त करता है। ध्वनि संकेत की समझ से जुड़े कुछ अन्य उदाहरण हैं – **'दूध'** को **'दूद'** लिखना और **'चूहा'** को **'चहाह'** लिखना।

हर्ष (चित्र 10) और मानसी (चित्र 11) के लेखन, स्ववर्तनी (Invented spelling) लेखन के दो उदाहरण हैं जहाँ अपनी बात को लिखने का उनका प्रयास नज़र आ रहा है। इन उदाहरणों में बच्चों ने वर्तनी की खोज का प्रयास किया है। मानसी और हर्ष दोनों ने ही मज़ेदार बातें लिखी हैं जिनसे उनका जुड़ाव है। हर्ष ने साँप का चित्र बनाया और **'साँप अछ'** लिखा। जब उसकी शिक्षिका ने उससे पूछा कि उसने क्या लिखा है तो हर्ष ने बताया उसने **'साँप अच्छा लगता है'** लिखा है जो शिक्षिका ने उसके लेखन के नीचे लिख दिया। हर्ष ने अपनी बात के मुख्य शब्द लिखने की कोशिश की है। मानसी और हर्ष दोनों ही पारंपरिक लेखन की ओर प्रगति कर रहे हैं। उनकी ध्वनि-संकेतों की समझ बन रही है। मानसी के लेखन को ध्यान से देखें तो मानसी ने कुछ शब्द जैसे **'कपड़ी'**, **'उतरसे'**, **'कटन'**, बड़े ही आत्मविश्वास से लिखे हैं, जबकि **'राजउप'** और **'दतकरच'** के आस-पास बने बिंदु यह बताते हैं कि लेखक के मन में उलझन है। मन का अविश्वास लेखन में भी झलक ही रहा है। इस समय मानसी के साथ कुछ ऐसी गतिविधियाँ करनी होंगी जिनके द्वारा उसका ध्यान ध्वनि-संकेतों की ओर केंद्रित किया जा सके जिससे उसका लेखन और भी समृद्ध हो जाए।

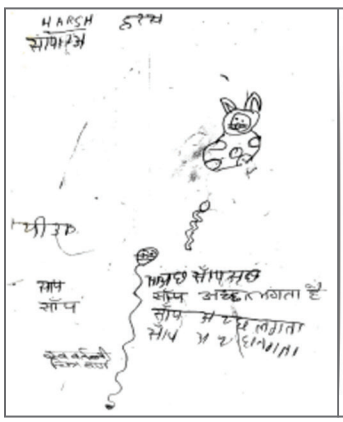

चित्र 10

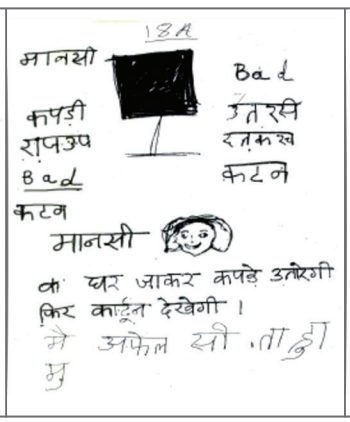

चित्र 11

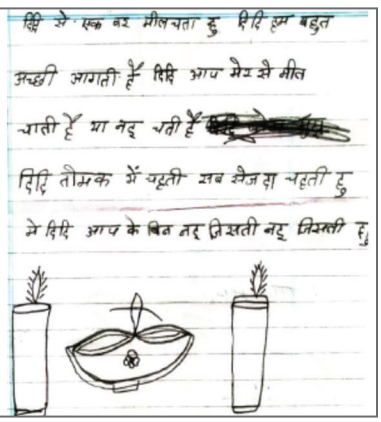

चित्र 12

पूनम (चित्र 12) ने लेखन में अपने मन के भाव बहुत खूबसूरती से कागज़ पर उतारे हैं और अपनी बात को बहुत दिलचस्पी से लिखा है – 'दिदि तोमक में चहती सब सेज दा चहती हु मे दिदि आप के बिन नइ जिसती नइ जिसती हु'। पूनम भी स्ववर्तनी से पारंपरिक लेखन की ओर बढ़ रही है। कई जगह शब्द-संरचना की सही छवि वर्तनी में उभरकर आ रही है, जैसे – दिदि, बहुत, अच्छी, है, बिन'। कई जगह शब्दों की मुख्य ध्वनियों को ही लिखा है। अभी वह ध्वनि और संकेतों के सबंधों को समझ रही है। अपने विचारों को प्रवाह में लिखने के प्रयास में कई शब्दों को अधूरा भी छोड़ा है। इसका यह कारण हो सकता है कि कई बार बच्चे के मस्तिष्क में बातें इतनी जल्दी-जल्दी आगे बढ़ती हैं कि उनकी कलम उस गति का मुकाबला नहीं कर पाती। पूनम का सार्थक प्रिंट से जुड़ाव जितना ज़्यादा होगा और पढ़ने-लिखने के निरंतर मौके जितने अधिक मिलते रहेंगे, उतना ही उसका लेखन परिपक्व होगा।

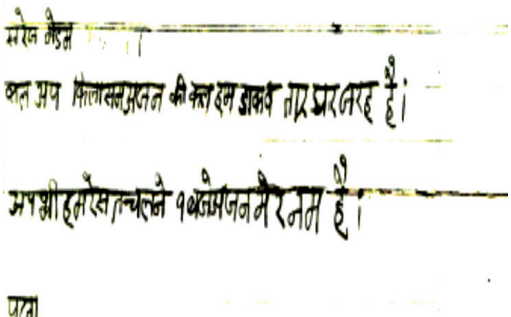

चित्र 13

पूजा ने अपनी अध्यापिका सरोज को पत्र लिखकर डाकघर चलने के लिए आमंत्रित किया है। पूजा के मन की बात उसके लेखन से हमारे मन तक पहुँच रही है। भाषा में सरलता और स्पष्टता है। पूजा अभी स्ववर्तनी के उस पड़ाव पर है जहाँ शब्दों की मुख्य ध्वनियों की समझ उसके लेखन में नज़र आ रही है। पूजा का ध्यान मात्राओं के ध्वनि-संकेतों की ओर केंद्रित करने की ज़रूरत है। पूजा का कई शब्दों को जोड़कर लिखना यह स्पष्ट करता है कि पूजा की यह समझ अभी बन रही है कि दो शब्दों के बीच में थोड़ी जगह छोड़ी जाती है। पर इससे उसे अपने मन की बात संप्रेषित करने में बाधा नहीं हुई है।

बच्चों के लेखन के ये सभी नमूने लेखन प्रक्रिया के कुछ पड़ाव भी दर्शाते हैं, जैसे–आड़ी-तिरछी लकीरों में कुछ आकृतियों का उभरना, अक्षरों का दोहराव, बाएँ से दाएँ की ओर लिखना, ध्वनि-संकेतों का संबंध आदि। ये पड़ाव मोटे तौर पर हैं ताकि लेखन प्रक्रिया के बारे में हमारी समझ बन सके। यह बात ध्यान रखनी होगी कि प्रत्येक बच्चे का सीखने का तरीका अलग होगा और प्रगति का समय भी एकसमान नहीं होगा।

ऐसी स्थिति में शिक्षक को धैर्य रखना होगा और प्रत्येक बच्चे की प्रगति के संग अपने को जोड़े रखना होगा। सबसे महत्त्वपूर्ण है – अपने बच्चों पर विश्वास और भरोसा करना। शिक्षक की अहम भूमिका निभाते हुए, बच्चों के लेखन में गलतियाँ ढूँढ़ने की बजाय उनके लेखन को

इस नज़र से देखना होगा कि बच्चे किस पड़ाव पर हैं और उन्हें प्रगति की ओर ले जाने के लिए किस प्रकार की मदद की ज़रूरत है।

यह बेहद ज़रूरी है कि बच्चों को लिखने के लिए ज़्यादा से ज़्यादा मौके दिए जाएँ। लेखन बाल-साहित्य, बातचीत या किसी गतिविधि से जुड़ा हो सकता है। ज़रूरी यह है कि लेखन का उद्देश्य बच्चों के लिए सार्थक हो। लेखन की यह प्रक्रिया आसान नहीं है और इस प्रक्रिया में बच्चों की प्रगति को अंकों से नहीं मापा जा सकता और यह हमारा उद्देश्य है भी नहीं। हमारा उद्देश्य पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया को सार्थक बनाना और बच्चों की क्षमता को मान्यता देना है ताकि बच्चे विद्यालय में हो रही विभिन्न गतिविधियों से जुड़ सकें और पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया को बेमानी न समझें। हमारा मकसद बच्चों को स्थायी पाठक बनाना है ताकि पढ़ना-लिखना स्कूल का ही नहीं, बल्कि उनके जीवन का भी हिस्सा बने।

शिक्षक की तैयारी–कार्य योजना

शिक्षक अपनी कक्षा की स्थिति सुविधाओं, बच्चों और बच्चे के मनोभावों तथा उसकी परिस्थिति को सबसे ज़्यादा जानता है। प्रारंभिक साक्षरता का उद्देश्य कक्षा में प्रिंट समृद्ध माहौल बनाना, अन्य बच्चों को पढ़ने-लिखने के सार्थक मौके देना, साथ ही इस प्रकिया को आनंददायी बनाना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए शिक्षक की सक्रिय भूमिका है। वह कार्य योजना के रूप में अपनी पूर्व तैयारी के महत्त्व को समझ सकता है। किसी भी कार्यक्रम को आयोजित कराने से पहले उसकी एक उपयुक्त योजना बनाना ज़रूरी है। उदाहरण के लिए, यदि आप किसी ठंडे प्रदेश में यात्रा करने जा रहे हैं और आपने इसकी पहले से कोई तैयारी नहीं की या योजना नहीं बनाई तो गर्म कपड़ों के अभाव में आपकी यात्रा का उत्साह और उसका मज़ा तो निश्चित तौर पर किरकिरा हो जाएगा। कोई भी योजना तभी सफ़ल होती है जब वह परिस्थिति और उद्देश्य के अनुकूल बनाई जाती है। अतः कार्य योजना इस पूरे कार्यक्रम का सबसे अहम हिस्सा है। कार्य योजना वह ज़रिया भी है जिसके माध्यम से शिक्षक बच्चों के लिए पढ़ने-लिखने के विभिन्न सार्थक अवसर प्रदान करता है। बच्चे कैसे पढ़ना-लिखना सीखते हैं – केवल इस बात की समझ होना ही पर्याप्त नहीं है। यह समझ होना भी ज़रूरी है कि पढ़ने-लिखने के अवसरों, प्रक्रियाओं को कक्षा में किस प्रकार क्रियान्वित किया जाए। इस तरह बच्चों के पढ़ने-लिखने के बारे में बनी समझ कार्य योजना के बिना अधूरी है। इसका मुख्य कारण यह है कि कार्य योजना बनाते समय हम सजग होकर विभिन्न प्रक्रियाओं को क्रियान्वित करने के व्यावहारिक पहलुओं के बारे में सोचते हैं, जैसे – गतिविधि का उद्देश्य क्या है? गतिविधि करने के लिए क्या-क्या सामग्री जुटानी होगी? गतिविधि से जुड़ी चर्चा किस तरह होगी? गतिविधि के लिए कितना समय देना है? आदि। इन सभी मुख्य बातों को ध्यान में रखते हुए कार्य योजना बनाई जाती है। यह कार्य योजना समय-सारिणी से बहुत भिन्न है। समय-सारिणी में तो केवल

यह तय किया जाता है कि किस विषय को कितना समय देना है और कब देना है। परंतु उस निर्धारित समय में आप क्या कराएँगे और उसे कैसे व्यवस्थित करेंगे – यह कार्य योजना का हिस्सा है। यह कार्य योजना रोज़ाना कराई जाने वाली गतिविधियों की बनानी होगी, किसी खास अवसर या प्रक्रिया (जैसे केवल परीक्षा आदि) की ही नहीं।

यहाँ प्रारंभिक साक्षरता कार्यक्रम से संबंधित कई अवसरों का उल्लेख है जिन्हें ध्यान में रखते हुए शिक्षक अपनी दैनिक कार्य योजना को व्यवस्थित रूप दे सकते हैं। एक सुगठित और व्यवस्थित कार्य योजना निश्चित रूप से बच्चों की पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया को सार्थक और रुचिकर बनाने में योगदान देगी।

रोज़ कीजिए

आज की बात	रीडिंग कॉर्नर के लिए समय	कहानी-कविता संबंधित गतिविधियाँ	अपनी बात/ लेखन साझा करना	लिखने के मौके

1. आज की बात

बच्चों से बातचीत के द्वारा **'आज की बात'** रोज़ बोर्ड पर लिखें। आज की बात में ऐसी बातों पर चर्चा की जा सकती है जो रोज़मर्रा की ज़िंदगी का हिस्सा हैं, जैसे – गाँव में किसी के घर दावत, शादी, गाँव में बारिश होने पर विभिन्न प्रकार की क्रियाएँ, खेतों में हल जोतना, बुआई करना, फ़सल काटना आदि।

अब तक आज की बात को हम एक वाक्य में ही समेट रहे थे। कक्षा एक के अंत या कक्षा दो तक आते-आते बच्चे 'आज की बात' से पूर्णत: परिचित हो चुके हैं। तो समय है 'आज की बात' में कुछ बदलाव करने का! 'आज की बात' को एक ही वाक्य में समेटना ज़रूरी नहीं है। अगर बच्चे अपनी बात को विस्तार से बता रहे हैं तो यह 2-3 वाक्यों में भी लिखी जा सकती है।

- **'आज की बात'** को कहानी या कविता के माध्यम से आगे बढ़ाया जा सकता है और पढ़ने-लिखने की एक मज़ेदार गतिविधि बन सकती है, जैसे 'मिली की साइकिल'। कहानी सुनाने के बाद बच्चे अपने खुद के साइकिल चलाना सीखने के अनुभवों को 'आज की बात' गतिविधि में शामिल कर सकते हैं, जैसे – रमन कल साइकिल चला रहा था। वह कई बार गिरा पर फिर उसने साइकिल चला ही ली। अगर इस तरह की कोई बात 'आज की बात' में आती है तो यह चर्चा का एक बहुत अच्छा विषय बन सकता है जहाँ बच्चे अपने साथ जुड़े ऐसे अनुभव बाँटेंगे जिनसे वे डरते हैं या जिन्हें बताने में संकोच करते हैं। कक्षा 1 में ऐसे अनुभवों के बारे में चर्चा कर सकते हैं और कक्षा 2 में अपने अनुभव लिखने को कह सकते हैं। यदि 'आज की बात' की चर्चा से ऐसी कुछ रोचक बातें निकल कर आएँ, जिसे बच्चों के साथ मिलकर कविता में बदला जा सकता है

तो अवश्य बढ़ाएँ, जैसे – 'मैडम की घड़ी करे चम-चम-चम' और इसे आगे बढ़ाया जा सकता है-

मैडम की घड़ी करे चम-चम-चम
रहीम की डिबिया करे डम-डम-डम
अनु के पैर करें धम-धम-धम

- कभी-कभी बच्चों को स्वयं 'आज की बात' बोर्ड पर लिखने का मौका दें। शिक्षक सिर्फ़ वहाँ मदद करें जहाँ बच्चे अटक रहें हों, जैसे- अगर बच्चे लिखना चाहें 'राहुल कल झूले से गिर गया।' और 'झूले' या कोई अन्य शब्द या अक्षर न लिख पा रहे हों तो पहले बच्चों को एक-दूसरे की मदद करने दें। उसके बाद शिक्षक बच्चों को कहें कि कक्षा में लगे चार्ट, सामने दिख रही कहानी की किताब आदि में यह शब्द ढूँढ़ें। अगर यह शब्द/अक्षर न मिले तो शिक्षक उन्हें लिख कर दें। इस तरह से मदद करने की प्रक्रिया से बच्चे स्वयं अपने हल ढूँढ़ने के लिए प्रेरित होंगे और साथ ही लिखत की बारीकियों की ओर भी उनका ध्यान जाएगा। ऐसे मौके कक्षा 2 के बच्चों के साथ ज़्यादा दोहराए जा सकते हैं।

2. रीडिंग कॉर्नर में पढ़ने की आज़ादी

पढ़ने के सफ़र की शुरुआत बच्चों के अनुरूप पुस्तकें उपलब्ध कराने और उन्हें पढ़ने के अवसर देने से होती है। इस प्रक्रिया को साकार करने के लिए पुस्तकों और कई तरह की पठन सामग्री का बच्चों के पास होना ज़रूरी है। इसे ध्यान में रखते हुए कक्षा 1 और 2 में रीडिंग कॉर्नर बनाया गया है। यह पुस्तक कोना बच्चों की अपनी जगह है जहाँ उन्हें बैठने, स्वयं पुस्तकें चुनने और पढ़ने की पूरी आज़ादी होगी। यह 'रीडिंग कॉर्नर' भले ही एक छोटे पुस्तकालय-सा दिखता हो परंतु यह विद्यालयी पुस्तकालय से भिन्न है।

उपयोग

- रीडिंग कॉर्नर बच्चों को स्वतंत्र रूप से पढ़ने का अवसर देता है।
- बाल साहित्य और बरखा के अलावा पेंसिल, कागज़, चार्ट पेपर, रंग, चित्र बनाने, रंग भरने और कुछ लिखने के लिए भी रखे जा सकते हैं।
- बच्चों द्वारा चित्रों और कहानियों से बनाई हुई किताब, पत्रिकाएँ और अन्य लिखित सामग्री को कॉर्नर में जोड़ने की योजना बनाइए। इस प्रकार से आपका कॉर्नर और समृद्ध हो सकता है।
- इस कोने को कक्षा के पठन-पाठन कार्यक्रम से जोड़ते हुए इस्तेमाल करने की आज़ादी दें, जैसे-अगर आप पाठ्यपुस्तक में से 'सूरज' कविता पढ़ा रहे हैं तो उस कविता से मिलती-जुलती कहानी और कविता की किताब का पढ़ने के कोने में इस्तेमाल किया जा सकता है।
- शिक्षक स्वयं भी इस रीडिंग कॉर्नर के पाठक बनें और बच्चों द्वारा किताब पढ़ते समय उनके सहभागी बनें।

- रैक के अलावा गत्ते से बना बॉक्स बनाकर रख सकते हैं जिससे बच्चे उसका इस्तेमाल किताबें रखने के लिए करें।
- कोने के रख-रखाव की ज़िम्मेदारी बच्चों को दें।
- कोने में नवीनता लाने के लिए 'पढ़ने का कोना' को एक नाम दे सकते हैं। समय-समय पर पुस्तकें प्रदर्शित करने की व्यवस्था भी बदली जा सकती है।
- पढ़ने के कोने में बच्चों की रुचि से जुड़ी बहुत-सी सामग्री रखी जा सकती हैं, जैसे – कठपुतली, मुखौटे, मिट्टी के खिलौने, कंचे, कंकड़, बोतल के ढक्कन आदि। इनसे कॉर्नर जीवंत होगा और ऐसी वस्तुएँ उन्हें बातचीत करने, कुछ नया बनाने एवं लिखने के मौके प्रदान करेंगी।

3. कहानी

किसी भी कहानी के साथ हम बहुत सारी गतिविधियाँ करा सकते हैं। कहानी के साथ करवाई जा रही गतिविधियों को हम तीन भागों में बाँट सकते हैं –

- कहानी सुनाने से पूर्व
- कहानी सुनाते समय
- कहानी सुनाने के बाद

कहानी सुनाने से पूर्व

कहानी पढ़ने से पहले कोई भी गतिविधि कराने का मुख्य उद्देश्य यह है कि कहानी के प्रति बच्चों की रुचि बनाई जाए और कहानी की कथावस्तु से परिचित कराया जाए ताकि जब बच्चे किताब खोलें तो उनमें आत्मविश्वास और पढ़ने की उत्सुकता हो।

कुछ क्रियाएँ जो हम कर सकते हैं –

(क) कहानी सुनाने से पूर्व **कहानी एवं लेखक का नाम बोर्ड पर अवश्य लिखें** तथा बच्चों को पढ़कर बताएँ।

(ख) **कहानी के आवरण पृष्ठ पर चर्चा करें** और कहानी के बारे में **अनुमान लगाने के लिए कहें**। यह कार्य बातचीत के द्वारा किया जा सकता है। साथ ही बच्चों के विचारों को बोर्ड पर लिखा जा सकता है।

(ग) **बच्चों के साथ मिलकर कहानी सुनाने के उद्देश्य के बारे में बातचीत करें।** बच्चों के साथ मिलकर यह चर्चा करें कि वे कौन-सी कहानी सुनेंगे और क्यों?-पहली बार कहानी सिर्फ़ मज़े के लिए सुनाएँ। दूसरी बार बच्चों से कुछ मुख्य बातों पर ध्यान देने को कहें, जैसे – कहानी के पात्रों के बारे में ध्यान से सुनना, जगह का विवरण आदि।

कहानी पढ़ते समय

- शिक्षक चित्रों को दिखाते हुए कहानी पढ़कर सुना सकते हैं।
- शिक्षक बीच-बीच में रुककर बच्चों के साथ मिलकर कहानी में आगे होने वाली घटना के बारे में अनुमान लगा सकते हैं।
- जब दूसरी या तीसरी बार कहानी सुनाई जा रही हो तो कहानी के विभिन्न घटनाक्रमों को अलग-अलग लिखकर बच्चों को

कागज़ दिए जा सकते हैं और बच्चों को कहानी पढ़ने को कहा जा सकता है। बच्चों को कहानी के घटनाक्रम के अनुसार पढ़ना होगा। पहले वह बच्चा पढ़े जिसके पास कहानी की पहली घटना है, फिर दूसरा, तीसरा आदि। इस तरह बच्चे पढ़ने में एक दूसरे की मदद करेंगे और एक साथ समूह में काम करने की उनकी आदत भी बनेगी।

- कहानी को एक और मज़ेदार रूप भी दिया जा सकता है। शिक्षक बच्चों से कहे कि आज कहानी पढ़ने में वह 6 गलतियाँ करेंगे और बच्चों को वह गलतियाँ पकड़नी हैं। इस तरह शिक्षक कहानी में 6 गलतियाँ सोच ले जो वह करने वाला है। ये पात्रों के नाम, घटनाक्रम, वस्तुओं को उलटफ़ेर करना हो सकता है या कुछ और जो कहानी में किया जा सके।

कहानी पढ़ने के बाद

- कहानी को नया शीर्षक देना, कहानी के बारे में चित्र बनाना या लिखना।
- कहानी का अभिनय।
- कक्षा 2 में कुछ कहानी-कविता अधूरी छोड़कर बच्चों को आगे बढ़ाने के लिए मौके दें।
- एक ही कहानी पर 2-3 दिन तक चर्चा की जा सकती है, जैसे – एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित कहानी 'घर की खोज' पढ़कर सुनाएँ। बच्चों के साथ मिलकर आस-पास रहने वाले पालतू जानवरों के घरों के बारे में चर्चा करें और बच्चों को सोचने का मौका दें। अगर जानवरों के घर बदल दिए जाएँ तो क्या होगा, जैसे – कबूतर कौवे के घोंसले में रहने लगे तो? चिड़िया चूहे के बिल में चली जाए तो? चींटी के घर में केंचुआ रह पाएगा? अगर गाय हमारी कक्षा में आ जाए तो?
- दूसरे दिन बच्चों को अपने घर का चित्र बनाने को कहें और घर की चीज़ों का नाम लिखने को कहें।
  - तीसरे दिन कक्षा में लिखने के कुछ और मौके तलाशें, जैसे –
  - कहानी के पात्रों से एक नई कहानी बनाना।
  - कहानी के किसी एक पात्र के बारे में विस्तार से लिखना।
  - कहानी के मुख्य शब्दों के उलटे शब्द बनाना और लिखना।
- कहानी में अगर कुछ अक्षर बार-बार कई शब्दों में आ रहे हैं तो कहानी से चुनकर उन अक्षरों को लिखना एवं उनसे बने नये शब्द ढूँढ़ना और बनाना।
- किसी भी **गतिविधि को दोहराया या बढ़ाया जा सकता है**, जैसे- एकलव्य प्रकाशन की कहानी 'टिपिक पाँ भर्र' पढ़ने के बाद बच्चों के साथ मिलकर कक्षा में बैठ आँखें बंदकर, अपने पास की आवाज़ सुनी और महसूस की जा सकती है। फिर कक्षा में सूची बनाई जाए कि किसने कौन-कौन-सी आवाज़ सुनी। यह गतिविधि

कुछ दिन बाद बदलकर दोहराई जा सकती है, जैसे–बच्चों को शाला के बाहर ले जा कर भी यह किया जा सकता है।

- इसी तरह किसी भी **गतिविधि को पुनः दोहराने में संकोच न करें**। पर यहाँ ध्यान रखें कि गतिविधि में रोचकता बनी रहे।

4. अपनी बात और लेखन साझा करना

प्रतिदिन **कम से कम 15 मिनट** बच्चों के साथ बैठकर कक्षा में कराई गई गतिविधि पर चर्चा करें। बच्चों को ऐसा आकाश दें जिसे वे अपने मन की रंग–बिरंगी बातों से भर सकें। लिखने के साथ–साथ प्रतिदिन कक्षा में कुछ समय ऐसा अवश्य निकालें जहाँ कुछ बच्चे अपना लेखन सबको पढ़कर सुनाएँ। अगर प्रतिदिन 4–5 बच्चों को मौका मिलेगा तो सप्ताह में सभी बच्चों के पास एक दिन ऐसा अवश्य होगा जब वे अपना लेखन सबके सामने साझा कर सकेंगे। जब बच्चे अपना लेखन पढ़ें तो पूरा ध्यान उनके विचारों और मन की बात पर दें, तकनीकी पहलुओं पर नहीं।

5. लिखने के मौके

सहयोगी लेखन और स्वतंत्र लेखन–लेखन के दो प्रकार

बच्चों के लेखन के विकास के लिए उन्हें स्वतंत्र रूप से लिखने के मौकों के साथ–साथ ऐसे लेखन के अवसर भी देने होंगे जिसमें बच्चे शिक्षक की सहायता से लेखन करें। शिक्षक की सहायता बच्चे के लेखन को समृद्ध बनाने में मदद करेगी। ऐसे लेखन को हम सहयोगी लेखन कह सकते हैं। शुरुआती स्तर पर दोनों प्रकार के लेखन के मौके बच्चों को मिलने चाहिए। सहयोगी लेखन के द्वारा बच्चों को कुछ नया सीखने के मौके मिलते हैं। चाहे वह शिक्षक की मदद से हो या सहपाठियों की मदद से। स्वतंत्र लेखन के ज़रिए बच्चे लेखन की जो भी समझ बनाते हैं उसकी अभिव्यक्ति करते हैं। इसलिए दोनों प्रकार के मौके हमारे लिए बहुत उपयोगी हैं।

सहयोगी लेखन

किसी कविता या कहानी, जिसमें छोटे–छोटे वाक्य संरचना का दोहराव हो, उसे ढूँढें और बच्चों के सामने उसकी कम से कम दो पंक्तियाँ/अनुच्छेद ब्लैकबोर्ड/चार्ट पर लिख दें। एक–दो बार बच्चों के साथ उसे रोचक ढंग से पढ़ें। उसके बाद बच्चों को उसे आगे बढ़ाने के लिए कहें। कक्षा 1 के लिए आप पूरा वाक्य खुद बोर्ड/चार्ट पर लिख दें और केवल वह जगह खाली छोड़ दें जहाँ पात्र बदल रहे हों और बच्चों से उस जगह को सोचकर भरने के लिए कहें। इसमें हर बच्चा अपनी कल्पना से कुछ भी जोड़ सकता है, उसे मान्यता दें। नई–नई जितनी पंक्तियाँ इस प्रकार बनें उन्हें कविता/कहानी में जोड़ते चलें। शिक्षक खुद भी एक–दो उदाहरण सोचकर आएँ। परंतु बच्चों को केवल उन उदाहरणों को मानने के लिए बाध्य न करें।

उदाहरण –

चींटी ओ चींटी
कहाँ गई थी?
अरे, यहीं थी पास में
चीनी की तलाश में

गाय ओ गाय
कहाँ गई थी?
अरे, यहीं थी पास में
घास की तलाश में।

..... ओ .....

कहाँ गई थी?
अरे, यहीं थी पास में
चूहे की तलाश में।

..... ओ .....

कहाँ गई थी?
अरे, यहीं थी पास में
..... की तलाश में।

शुरुआत में कविता/कहानी में खाली जगह केवल एक-दो नये शब्दों के लिए छोड़ें। उन वाक्यों के लिए जिनमें दोहराव है, उन्हें खाली छोड़ दें ताकि बच्चे उन्हें स्वयं भर सकें। चर्चा करने के बाद बच्चों को पूरी कविता अपनी कॉपी में लिखने को कहें। बच्चों को इस कार्य के लिए पर्याप्त समय दें। बच्चों के साथ की गई चर्चा के बाद जो बातें उभरकर आई हैं उन्हें बोर्ड/चार्ट पर भी लिख दें।

स्वतंत्र लेखन

'स्वतंत्र लेखन' लेखन का वह रूप है जिसमें बच्चा यह खुद तय करता है कि वह अपने मन की कौन-सी बात कैसे व्यक्त करना चाहता है। इस लेखन में बच्चे केवल चित्रों, केवल चित्रों और वाक्यों या केवल शब्दों और वाक्यों के माध्यम से अपने मन की बात लिखने के लिए स्वतंत्र होते हैं। परंतु शुरुआत में इस लेखन में भी शिक्षक को बच्चों की मदद के लिए तैयार होना होगा, जैसे कक्षा में स्वतंत्र लेखन के मौके और माहौल तैयार करना। धीरे-धीरे पढ़ने-लिखने के बढ़ते मौकों के साथ-साथ शिक्षक पर बच्चों की निर्भरता कम होती नज़र आएगी।

स्वतंत्र लेखन के उदाहरण के रूप में एक गतिविधि इस प्रकार हो सकती है – कक्षा में चिट्ठियों का डिब्बा रखें। चिट्ठी लिखने के विषय इस प्रकार हो सकते हैं, जैसे – शिकायत, पसंदीदा काम, नापसंद काम और चीज़ें, माता-पिता के लिए, अपनी खास खूबी बताने के लिए, मोहल्ले और स्कूल की खबरें बाँटने के लिए आदि। इसी प्रकार संदेश-चिट्ठियों वाले सप्ताह में कोई बच्चा डाकिया बनकर सही बच्चे तक उन संदेश-चिट्ठियों को बाँट सकता है। अगर चिट्ठी सीधे शिक्षक के लिए लिखी गई है या किसी ऐसे व्यक्ति/वस्तु के लिए है जो कि बच्चों की पहुँच से बाहर है तो वे स्वयं उसका जवाब लिख दें। शिक्षक चाहें तो इस गतिविधि को अत्यंत रोचक ढंग से कक्षा का एक हिस्सा बना सकते हैं जिसमें हर हफ़्ते शिक्षक चिट्ठी का

संदर्भ भी बदल सकते हैं। चिट्ठी पर आधारित एक और क्रियाकलाप किया जा सकता है, जैसे – शिकायती चिट्ठियों (कक्षा में किसी बच्चे की किताब का खोना, पीने का पानी न होना, किसी का खाना खा लेना, किसी को धक्का देना आदि) पर सुनवाई करवाना। इससे बच्चों के साथ मिलकर चर्चा के द्वारा कक्षा की समस्याओं का हल निकाला जा सकता है। साथ ही इससे धीरे-धीरे बच्चों को भी दूसरों के प्रति अपनी सामाजिक ज़िम्मेदारियों का अहसास होने लगेगा।

कक्षा में प्रारंभिक साक्षरता–कुछ अवसर

- ***चित्रों पर बातचीत***

  बच्चों द्वारा **बनाए गए चित्रों पर उनसे बातचीत करें**, जैसे – उनसे कहें कि वे चित्र बनाएँ, उस पर अपना नाम भी लिखें। चित्र के बारे में कुछ लिखें और अब बच्चों से उसे पढ़ने के लिए कहें। साथ ही आप भी उनके चित्र के बारे में उन्हीं के कागज़ पर लिखें और पढ़कर उन्हें सुनाएँ। यहाँ चित्रों के माध्यम से बच्चों के मन की बात को जाना जा सकता है, जैसे – ऐसा क्या रोचक हुआ कि बच्चे ने वह बिल्ली बनाई? बच्चे का उस चित्र से क्या जुड़ाव है – यह जानना ज़रूरी है। बच्चों की बात को उन्हीं के शब्दों में चित्र के नीचे लिखा जा सकता है। कक्षा 2 में बच्चों द्वारा बनाए गए चित्रों पर उनसे चर्चा करें और चित्र के बारे में वाक्य लिखने में मदद करें।

- ***बच्चों के अनुभवों को लिखना/अनुभव लेखन***

  बच्चों के 'अनुभव लेखन' के कई संदर्भ हो सकते हैं। यदि कक्षा में या स्कूल के आसपास कोई रोचक/रोमांचक घटना घटी है, जैसे – किसी मेंढक का कक्षा में आ जाना, बरसात के दिनों में पास में कोई साँप निकल आना या फिर कक्षा में कराई कोई गतिविधि, जैसे – कुछ नया बनवाना आदि। ये कुछ ऐसे अनुभव हैं जिनसे सभी बच्चे परिचित हैं। बच्चों के इन अनुभवों के बारे में कक्षा में बात की जा सकती है। बच्चों से कहें कि वे पूरे घटनाक्रम को बताएँ। जैसे-जैसे बच्चे अनुभव बताते जाएँ, शिक्षक उसे एक चार्ट पर लिखते जाएँ या किसी कैलेंडर के पिछले खाली भाग पर लिखें और कक्षा में लगाएँ। शिक्षक बच्चों के सहयोग से उँगली रखकर उन सभी अनुभवों को पढ़कर सुनाएँ ताकि बच्चों की यह समझ बन सके कि उनकी बोली गई बात को लिखा और पढ़ा जा सकता है। इसे एक रोचक शीर्षक देने के लिए भी बच्चों को प्रेरित किया जा सकता है। बच्चों को उनके इस अनुभव को कॉपी में उतारने के लिए कहें। साल के अंत में बच्चों के इस अनुभव-लेखन की प्रदर्शनी भी लगाई जा सकती है। अगले दिन से बच्चों के बताए अनुभव को अँगुली रखकर पढ़ें। कक्षा 2 के अंत तक आते-आते बच्चों के साथ

चर्चा के बाद उन्हें स्वयं अनुभव लिखने को कहें।

साल में इस तरह के कम से कम 10 अनुभव-लेखन के अवसर ज़रूर दिए जाएँ।

- ***स्थानीय भ्रमण से जुड़ा लेखन***

  स्थानीय भ्रमण इन उद्देश्यों के लिए हो सकता है –

  1. कहानी या कविता से जुड़ी किसी खास गतिविधि के लिए
  2. कुछ आसपास की चीज़ों को इकट्ठा करने के लिए, जैसे-पत्ते, पत्थर, प्लास्टिक की चीज़ें आदि जिन पर आधारित कक्षा में कुछ गतिविधि करवानी हो।
  3. अपने आसपास की चीज़ों का अवलोकन करने के लिए, जैसे – अलग-अलग तरह के पेड़-पौधे, पक्षी, घर, घोंसले आदि। कुछ मुख्य जगह, जैसे – पोस्ट-ऑफ़िस, खेत-खलिहान, खास अवसर या मौसम में लोगों के कुछ खास क्रियाकलाप देखने के लिए या किसी चीज़ में एक अंतराल के बाद आए बदलाव देखने के लिए आदि।

बच्चों को बाहर सैर के लिए लेकर जाएँ। उन्हें रास्ते में गिरी अलग-अलग तरह की 10 पत्तियाँ बीनने के लिए कहें। वापस आकर बच्चों को अपनी-अपनी पत्तियों का अवलोकन करने को कहें। कक्षा 1 में उन्हें यह भी लिखने को कहें कि उन्हें अपनी पत्ती किस चीज़ के समान लग रही है। बच्चे उसका नाम भी लिखें, जैसे–मछली जैसी, चिड़िया जैसी आदि। शिक्षक बोर्ड पर पूरा वाक्य बच्चों के लिए लिख दें। केवल उस चीज़ के नाम के लिए जगह छोड़ दें जिसकी तरह बच्चों को अपनी पत्ती लग रही है। लिखने में बच्चों को एक-दूसरे की, आसपास लगी लिखत सामग्री की भी मदद लेने को कहें। जो बच्चे शिक्षक से मदद माँगने आएँ, पूरी आत्मीयता से उनकी मदद करें। मदद के वक्त बच्चों का ध्यान उन बातों की ओर आकर्षित करें कि वे क्या जानते हैं बजाय इसके कि वे क्या नहीं कर पा रहे। बच्चों से चर्चा करने के बाद एक उदाहरण भी बोर्ड पर शिक्षक लिख दें और बच्चों को भी वाक्य में लिखने को कहें, जैसे –

मेरी पत्ती ..... जैसी लग रही है।

कक्षा 2 के बच्चों को पत्तियों का वर्गीकरण करने और उनके बारे में लिखने को कहें। आप बच्चों से कहें कि पहले वे पत्तियों के वर्गीकरण का आधार अवश्य बताएँ। फिर उन्हीं बातों को उन्हें लिखने को कहें। वर्गीकरण के आधार के रूप में पत्तियों की बनावट, नाप, रंग-रूप, पेड़ों की किस्म आदि का विवरण आ जाएगा और साथ ही उन आकारों को वे किस तरह से देखते हैं, उन्हें वे अपने आसपास की किन चीज़ों से जोड़ रहे हैं – यह भी शामिल होगा। लिखने में मदद के लिए शिक्षक सामूहिक बातों को खुद बोर्ड पर लिख दें और बाकी चीज़ों में बच्चों को एक-दूसरे से या शिक्षक से पूछकर लिखने की

छूट दें। बच्चों का खुद के लेखन में जैसे-जैसे आत्मविश्वास बढ़ेगा, वे ज़्यादा से ज़्यादा स्वतंत्र रूप से लिखने लगेंगे।

साल में कम से कम 3 स्थानीय भ्रमण के अवसर ज़रूर दें।

- ***लेखन से पहले बच्चों के साथ चर्चा करते हुए निम्नलिखित तीन मुख्य बातों पर विशेष ध्यान दें –***
  - बच्चों के पास लिखने का एक सार्थक उद्देश्य होना चाहिए।
  - बच्चों को यह पता होना चाहिए कि उनके लेखन का पाठक कौन होगा।
  - बच्चों से लेखन के विषय पर बातचीत करनी चाहिए ताकि उनके पास लिखने के लिए कई विचार एकत्र हो जाएँ।

लेखन-कार्य के लिए अलग-अलग पाठक

बच्चों को कोई भी लिखित गतिविधि कराने से पहले इस बात पर चर्चा ज़रूर कर लें कि उनके लेखन का उद्देश्य क्या है और उनके लेखन का पाठक कौन है। मुख्यत: बच्चों की लिखी बातों को शिक्षक ही पढ़ते हैं पर इस लेखन को संवाद और संप्रेषण की दृष्टि से देखना चाहिए। अत: यह ज़रूरी है कि लेखन का उद्देश्य तय करते हुए अलग-अलग पाठकों के लिए लिखा जाए, जैसे–कक्षा के अन्य बच्चे, स्कूल या घर के दोस्त, माता-पिता, पड़ोसी। यहाँ तक कि आधी छुट्टी में आने वाला कुत्ता, स्कूल का पुराना पेड़ आदि भी किसी लेखन के पाठक हो सकते हैं। बच्चे उन्हें संबोधित करते हुए एक ऐसी चिट्ठी लिख सकते हैं जिसमें वे सारी बातें लिखी हुई होंगी जो वे उनसे कहना चाहते हैं। यह बच्चों के लिए एक सार्थक संवाद होगा और इससे बच्चों में यह समझ बढ़ेगी कि अलग-अलग पाठक के लिए लिखने का तरीका अलग होगा। आगे चलकर जब बच्चे औपचारिक और व्यक्तिगत पत्र आदि लिखेंगे तो लिखने के तरीकों के अंतर को खुद समझ पाएँगे।

- ***खाने-पीने की चीज़ों की विधि***

  खाने-पीने की चीज़ों से हर किसी का जुड़ाव होता है इसलिए बच्चों के पढ़ने-लिखने के अवसरों में यह एक ऐसा रोचक विषय है जिसमें बच्चे और बड़े–दोनों को मज़ा आता है। जब हम कक्षा में खाने-पीने की चीज़ों को बनाने की विधि की बात कर रहे हैं तो हमारा उद्देश्य नये-नये पकवान आदि ढूँढ़ना नहीं है बल्कि हमारा उद्देश्य लिखने-पढ़ने के रोचक अवसर देना है। इसलिए ऐसी चीज़ें चुनी जाएँ जो बच्चे रोज़ खाते-पीते हों और बनाने की विधि भी आसान हो, जैसे – नींबू पानी, शरबत, भेल-पूरी, रोटी, चाट बनाना आदि। ऐसी चीज़ें भी चुनी जा सकती हैं जिन्हें कक्षा में बनाना मुमकिन हो और गैस चूल्हे की आवश्यकता न हो। सभी बच्चे अपने घर से थोड़ा-थोड़ा सामान लाएँ, कक्षा में बनाएँ और चखें। इस प्रकिया से गुज़रने के बाद, अध्यापक बच्चों की सहायता से बनाने की विधि बोर्ड या चार्ट पर लिखें और अँगुली रखते हुए उसे पढ़ें। इसके बाद बच्चों को

यह विधि अपनी कॉपी में लिखने के लिए कहा जा सकता है।

कक्षा 2 के बच्चों से यह कहा जा सकता है कि वे अपने घर में बननेवाली चीज़ों का अवलोकन करें, जैसे – दाल, रोटी, चाय, पकवान आदि। अगले दिन कक्षा में इन चीज़ों को बनाने की विधि पर चर्चा करते हुए, उसे लिखने के लिए कहा जा सकता है। विधि लिखने की प्रक्रिया अन्य चीज़ों के साथ भी की जा सकती है, जैसे – कागज़ से नाव बनाना, चिड़िया बनाना, मिट्टी से खिलौने बनाना आदि।

- ***चित्र विवरण***

  बच्चों की रुचि के अनुसार अखबार या पत्रिका में से कुछ चित्र काटकर कक्षा में प्रदर्शित किए जा सकते हैं और इन पर चर्चा की जा सकती है। चित्र आकर्षक हों, चित्रों में बातचीत करने की भरपूर संभावनाएँ हों।

  चित्रों को चुनते समय इन बिंदुओं पर ध्यान देना ज़रूरी है–

  – रोचकता
  – स्पष्टता
  – बच्चों के परिवेश से जुड़ाव
  – किसी भी तरह की हिंसा से मुक्त

  अगर कोई ऐसा चित्र जो बच्चों के परिवेश से सीधा जुड़ा नहीं है तो उस चित्र के बारे में पहले ही बच्चों के साथ बातचीत करें। उदाहरणत: अगर दिल्ली के मैट्रो रेल के बारे में चित्र है तो चित्र दिखाते समय बच्चों को उसके बारे में विस्तार से बताएँ। साथ ही स्थानीय यातायात के साधनों के बारे में भी चर्चा की जा सकती है।

  बच्चों के साथ बैठकर चित्र पर चर्चा करें और बच्चों के विवरण को बोर्ड/चार्ट पर लिखें एवं बच्चों के साथ मिलकर पढ़ें। स्थानीय/क्षेत्रीय त्योहारों से जुड़े चित्र, स्थानीय घटना आदि से जुड़े चित्र, चित्र-विवरण एवं लेखन के विषय हो सकते हैं।

तसवीरों पर चर्चा करना

सृजन और विश्लेषण को प्रोत्सहित करने वाली बातचीत, तसवीरों के ज़रिए अच्छी तरह की जा सकती है। तसवीरें फूल-पत्ती, पशु-पक्षी, स्कूल, बच्चे घटनाओं आदि पर आधारित हो सकती हैं। अखबारों और पत्रिकाओं के विज्ञापनों या खबरों के साथ छपे चित्र, कैलेंडरों, डाक टिकटों, लेबलों और पोस्टरों पर छपे चित्र – ये सभी काम में लाए जा सकते हैं। इस प्रकार तसवीरों के स्रोत बहुत व्यापक हैं और किसी छोटे गाँव में भी इन्हें ढूँढ़ा जा सकता है। अध्यापक साल-दर-साल इस्तेमाल के लिए तसवीरों का एक संग्रह बना सकते हैं।

बच्चों के बीच बैठकर बगैर किसी तैयारी के, बिलकुल अनौपचारिक ढंग से किसी तसवीर के बारे में बातचीत करना भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। यदि हम अवलोकन के विभिन्न पहलुओं के बारे में सचेत हो जाएँ तो बच्चों की भाषा के विकास की दृष्टि से हम ऐसी बातचीत को और भी अधिक उपयोगी बना सकते हैं। अध्यापक का हर प्रश्न बच्चों की प्रतिक्रिया को

एक निश्चित ढंग से प्रभावित करता है। सवालों के ज़रिए बच्चों की दृष्टि और प्रतिक्रिया को विस्तार देने की क्षमता विकसित की जा सकती है? प्रतिक्रिया के स्तर, जिनकी तरफ़ बच्चों का ध्यान हम प्रश्नों की मदद से मोड़ सकते है, वे ये हैं –

- **ढूँढ़ना** – *इस स्तर पर हम बच्चों से केवल इतना कहेंगे कि वे चित्र में दिखाई गई चीज़ों को ढूँढ़ें। हम इस तरह के प्रश्न पूछ सकते हैं – 'इस चित्र में क्या है?' 'क्या इस चित्र में एक चूहा है?' 'साइकिल पर कौन बैठा है?' 'लड़का कितना बड़ा है?' आदि।*
- **तर्क करना** – *प्रतिक्रिया के इस स्तर का संबंध कारण बताने की क्षमता से है। चित्र में दिखाई गई किसी बात का जो भी कारण बच्चा बताए, अध्यापक को उसे स्वीकार करना चाहिए। अध्यापक स्वयं भी कारण बता सकता है पर केवल एक संभव उत्तर के तौर पर, अंतिम उत्तर के तौर पर नहीं। प्रश्नों के उदाहरण – 'नन्हीं लड़की क्यों रो रही है?' 'मोटर साइकिल का पिछला हिस्सा हमें दिखाई क्यों नहीं दे रहा?' 'चूहा क्यों छिपा है?'*
- **आरोपण** – *इस स्तर पर हम बच्चे से खुद को चित्र में आरोपित करने को कहते हैं। अत: इस स्तर पर प्रश्न पूछने का उद्देश्य बच्चे को एक काल्पनिक स्थिति में स्वयं को रखने, कौन क्या कहेगा – यह कल्पना करने और उन्हें कैसा लगेगा-यह सोचने के लिए प्रोत्साहित करना है। प्रश्नों के उदाहरण – 'यदि तुम इस पेड़ पर बैठे होते तो तुम्हें कैसे/क्या दिखाई देता?' 'चूहा क्या सोच रहा होगा?'*
- **भविष्यवाणी** – *इस स्तर का संबंध चित्र में दिखाई गई स्थिति के बाद की घटनाओं का अनुमान करने से है। बच्चों को यह सोचने के लिए प्रेरित करना है कि अब आगे क्या होगा। प्रश्नों के उदाहरण – 'यह आदमी अब कहाँ जाएगा?' 'नन्हीं लड़की घर पर क्या करेगी?' 'वह घर कैसे पहुँचेगी?'*
- **संबंध बैठाना** – *अब हम ऐसे प्रश्न पूछेंगे जो बच्चों को चित्र में दिखाई गई स्थिति से मिलती-जुलती कोई चीज़ अपनी ज़िंदगी में ढूँढ़ने के लिए प्रेरित करे। प्रश्नों के उदाहरण – 'तुम कभी मोटर-साइकिल पर बैठे हो?' 'बैठकर कैसा लगता है?' 'क्या तुम कभी किसी अजनबी के साथ रहे हो?' 'उस दिन फिर क्या हुआ?'*

अब हम यदि प्रारंभिक साक्षरता कार्यक्रम की बात करें तो हमारा लक्ष्य है – लेखन के साथ-साथ बच्चों में पढ़ने की योग्यताएँ बढ़ाना, इसके लिए –

- सबसे पहले पाठ्यपुस्तक को पूरक सामग्री से जोड़ना होगा।
- पूरक सामग्री बाल साहित्य, बच्चों की पत्रिकाएँ, स्थानीय कथाएँ इत्यादि हो सकती हैं।
- पाठ को समझने के लिए कक्षा में उसे मात्र पढ़ लेना ही काफ़ी नहीं है।

- पाठ को विस्तार दें, जैसे कि पाठ के कथानक पर बच्चों को अपने अनुभव कहने के अवसर दें। अपने अनुभव बच्चों से बाँटें।
- पाठ से मिलती-जुलती पढ़ने की सामग्री बच्चों को सुनाएँ एवं पढ़ने को दें।
- कविताओं को ऐसे पढ़ें कि बच्चे उसकी लय को महसूस करें। याद करने और शिक्षक के पीछे दोहराने की क्रिया पर ज़ोर न हो।
- समझकर पढ़ने के लिए चित्रों का सहारा लेने की आदत बच्चों में डालें।
- जहाँ पाठ में चित्रों की कमी हो तो स्वयं बनाएँ।
- पाठों को क्रमवार भी पढ़ाना ज़रूरी समझें। जैसे 'बाग', 'सैर सपाटा' पाठों को एक साथ लिया जा सकता है। इन पाठों के साथ कहानियाँ, अनुभव इत्यादि जोड़ें।
- एक पाठ को पढ़ने में सात से दस दिन तक का समय लगाया जा सकता है।
- ब्लैकबोर्ड का इस्तेमाल ज़्यादा से ज़्यादा करें।
- बच्चों द्वारा कही गई बातों को ज़्यादा से ज़्यादा लिखें।

पूर्व तैयारी

- इस योजना के अनुसार अपनी तैयारी अवश्य करके आएँ, जैसे – जो पाठ या कहानी कक्षा में अगले दिन आपकी योजना का हिस्सा है उसे स्वयं पढ़ें। उसकी मुख्य विशेषताओं पर ग़ौर करें और पढ़ने-लिखने की गतिविधि तय करें।
- आप कक्षा में किन-किन उद्देश्यों के लिए किताब का इस्तेमाल कर सकते हैं, उस पर विचार करें, जैसे – अनुमान लगाने के लिए, लिखने की गतिविधि से जोड़ने के लिए, उस विषय से संबंधित कुछ और पढ़ने के लिए आदि।
- प्रतिदिन दो-तीन कहानियाँ/कविताएँ अवश्य पढ़ें ताकि आप स्वयं उनसे जुड़ सकें और उनके विभिन्न पहलुओं को समझ सकें।
- कविता/कहानी सुनाने से पहले उसे स्वयं कई बार पढ़ें ताकि आप उससे अच्छी तरह परिचित हो सकें। अन्यथा आपका ध्यान सुनाने में कम और खुद के लिए पढ़ने में ज़्यादा रहेगा।
- कहानी में ऐसे अंशों, वाक्यों को चुनिए जिनका इस्तेमाल आप बच्चों से अनुमान लगवाने के लिए, उनके अनुभव से जुड़ी बातें करने के लिए कर सकते हैं। ऐसे भी सवाल ज़रूर पूछें जिसका कोई निश्चित उत्तर न हो। बातचीत के लिए बिंदु या प्रश्न पहले से ही तैयार हों।
- किताब के चित्रों को गौर से देखिए ताकि कहानी सुनाते समय बच्चों का ध्यान उस ओर खींच सकें।
- यदि कार्य योजना में कोई खास गतिविधि, जैसे – स्थानीय भ्रमण, किसी संदर्भ व्यक्ति को कक्षा में आमंत्रित करना या चित्र-विवरण आदि शामिल किया गया है तो उसके लिए खास तैयारी कर लें। उदाहरण के लिए, चित्र पहले से ढूँढ़कर रखना और उस पर बातचीत के बिंदु तैयार करना, संदर्भ व्यक्ति

से मुलाकात के लिए पहले ही उनसे उद्देश्य के बारे में चर्चा करके समय और सामग्री को ध्यान में रखते हुए बातचीत का दायरा तय करना, स्थानीय भ्रमण के लिए जगह का पूर्व अवलोकन करना, प्रधानाध्यापक से अनुमति लेना और साथ ले जाने के लिए लिखने की सामग्री, पीने का पानी आदि सुनिश्चित करना।

टिप्पणी

- शिक्षक को धैर्य रखना होगा। प्रारंभ में बच्चों की प्रगति स्पष्ट रूप से भले ही दिखाई न पड़े लेकिन उसकी अनुगूँज कुछ समय के बाद अवश्य सुनाई देगी।
- कराई गई गतिविधि के अनुसार कक्षा में प्रिंट सामग्री का बदलाव ज़रूरी है।
- बदली गई सामग्री को सहेजकर रखने के लिए एक थैला बनाएँ या उसे व्यवस्थित रूप से रखने के लिए कोई प्रबंध अवश्य करें और भविष्य में उनका सही इस्तेमाल ज़रूर करें।
- यदि कक्षा में विशेष चुनौती वाले बच्चे भी हैं तो उसकी चर्चा उच्च अधिकारियों से अवश्य करें ताकि उन बच्चों के लिए आवश्यक सामग्री जुटाई जा सके और कक्षा-प्रक्रिया में उनके साथ पूर्ण न्याय किया जा सके।
- बच्चों की रुचि या परिस्थिति को देखते हुए कक्षा-योजना को लचीला बनाया जा सकता है।

इस संदर्शिका में शुरुआती लेखन से जुड़े बिंदुओं की सहज प्रस्तुति से आपको न केवल आनंद की प्राप्ति होगी बल्कि प्रारंभिक साक्षरता की समझ भी बनेगी।

बालमन कुछ कहता है

Date / /
Page No.
Shivalal

मेरे स्कूल के प्रोग्राम्स

हमारे स्कूल में हर बार 26 जनवरी पर प्रोग्राम्स होते हैं। मैं हर बार प्रोग्राम्स में पार्टिसिपेट करती हूँ। मुझे डांस करना बहुत पसंद हैं। एक बार हमारी टीम को डांस के लिए सेकेण्ड प्राइज मिला था। मेरे स्कूल के टीचर्स मुझे लाइक करते हैं। मुझे मेरा स्कूल बहुत पसन्द। मुझे कहानियाँ पढ़ना बहुत पसन्द हैं। मैं अपने फ्री टाइम में कहानियाँ पढ़ती हूँ मुझे कहानियाँ लिखना भी पसन्द हैं।

प्रीति वर्मा
कक्षा - 7
विवेकानन्द पूर्व माध्यमिक विद्यालय
दीन दयाल कालोनी, बिलराम गेट, कासगंज - 207123
(उत्तर प्रदेश)

प्राथमिक शिक्षक पत्रिका के बारे में

साथियों,

प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में प्रारंभिक शिक्षा से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर आधारित ऐसे लेख प्रकाशित किए जाते हैं जो एक शिक्षक के लिए उपयोगी हों। इस पत्रिका के कुछ महत्वपूर्ण सरोकार हैं –

- शिक्षा संबंधी महत्वपूर्ण दस्तावेज़ों की जानकारी एवं विवेचन
- समसामयिक शैक्षिक शोध एवं अध्ययनों का विवरण
- समसामयिक शैक्षिक चिंतन
- शिक्षकों एवं शिक्षाविदों के अनुभव
- शिक्षकों एवं अभिभावकों के लिए व्यावहारिक बाल मनोविज्ञान
- शालाओं एवं शिक्षा केंद्रों की समीक्षा
- शिक्षा संबंधी खेल एवं उनकी उपयोगिता
- विभिन्न शिक्षण विधियाँ
- क्रियात्मक शोध और नवाचार
- शिक्षकों के लिए पठनीय पुस्तक के बारे में जानकारी आदि।

कैसे भेजें रचनाएँ

उपरोक्त सरोकारों पर आधारित लेख, संस्मरण, कविताएँ आदि आमंत्रित हैं। कृपया ध्यान रखें कि लेख सरल भाषा में तथा रोचक हों। शोधपरक लेखों के साथ संदर्भ साहित्य की सूची अवश्य दें। लेखों के प्रकाशन के उपरांत समुचित मानदेय की व्यवस्था है। लेखों की त्रुटिरहित टंकित प्रति अगर सी.डी. में भेज सकें तो अच्छा रहेगा। लेख ई-मेल द्वारा भी भेजे जा सकते हैं। अपने लेख निम्न पते पर भेजें –

अकादमिक संपादक

प्राथमिक शिक्षक

प्रारंभिक शिक्षा विभाग
एन.सी.ई.आर.टी.
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110016
ई. मेल- deencert @ yahoo.co.in

कैसे बनें सदस्य

इस पत्रिका के सुचारु रूप से प्रकाशन, प्रचार एवं प्रसार के लिए पाठकों तथा लेखकों का सहयोग अनिवार्य है। इस संदर्भ में आपसे निवेदन है कि इस पत्रिका के स्थायी सदस्य के रूप में अपने विद्यालय, संस्थान अथवा स्वयं को पंजीकृत करवाने का कष्ट करें। इसका वार्षिक चंदा केवल ₹ 260 है और प्रति कॉपी का मूल्य मात्र ₹ 65 है। आशा है आप इस दिशा में शीघ्र ही निर्णय करके विद्यालय, संस्थान अथवा निजी वार्षिक सदस्यता के लिए कार्यवाही करेंगे। वार्षिक सदस्यता शुल्क-पत्र के लिए अपना पत्र स्वनामांकित लिफ़ाफे सहित **बिज़नेस मैनेजर, प्रकाशन विभाग (एन.सी.ई.आर.टी.) श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली-110016** को भेज सकते हैं।

कविता

कैसा हो स्कूल हमारा

गिरीश तिवारी*

वै?सि हो स्कू?लि हमार
जहाँ न बस्ता कंधा
जहाँ न पटरी माथाबप?ीड़े, ऐसा हो स्कू?लि हमा
जहाँ न अक्षर कान उख 033ड़े, ऐसा हो स्कू?लि हमार

वै?सि हो स्कू?लि हमार
जहाँ अंक सच-सच बतोएँ, ऐसा हो स्कू?लि हमार
जहाँ प्रश्न हल तक पह? चाए, ऐसा हो स्कू?लि हमा
जहाँ न हो झूठ काबदिखव्वा, ऐसा हो स्कू?लि हमार
जहाँ न सूट-बूट काबहव्वा, ऐसा हो स्कू?लि हमार

वै?सि हो स्कू?लि हमार
जहाँ किताबें निर्भ? 22 बोलें, ऐसा हो स्कू?लि हमा
मन वे?ि पन्ने-पन्ने ख्बोलें, ऐसा हो स्कू?लि हमा
जहाँ न कोई बात छ? पाए, ऐसा हो स्कू?लि हमा
जहाँ न कोई दर्द द? खाए ऐसा हो स्कू?लि हमा

वै?सि हो स्कू?लि हमार
जहाँ न मन में मन-म?इटाव हा
जहाँ न चेहरों में तनाव हो
जहाँ न आँखों में द?इराव हा
जहाँ न कोई भेद-भाव हो

जहाँ पू?लि स्वाभाविक? 37महवे?ि – ऐसा हो स्कू?लि ह
जहाँ बालपन जीभर च? 00वे?ि – ऐसा हो स्कू?लि हम
जहाँ न अक्षर कान उख
जहाँ न भाषा जख्म उ? 31ाड़े – ऐसा हो स्कू?लि हमा

रजि. नं. 32427/76

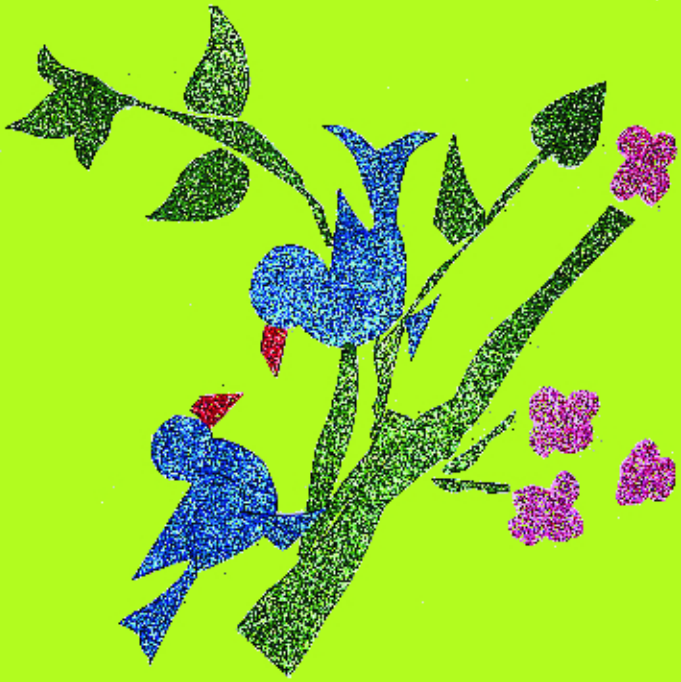

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING